श्रीरामचन्द्रिका।
श्री केशवदास

॥श्रीगनाधपतयेनमः॥श्री
सरस्वतैनमः॥श्रीपरमगुरभे
नमः॥अथाश्रीरामचंद्रकालि
ष्यते॥दंडक॥वालकमनी
वालकमनालनज्योंटोरिझौरे
सवकठिनकरालवेअकालदी
हदुष्षकों विपतहरतहठप
द्विनीकेपातसमपकज्योंपता
लपेलपटवैकलुष्षकौं दूरि
केकलंकअंकभवसीससि
समराषतहैकेसौदामदास
केवपुष्षकौं॥सांकेरकीसा
करनसन्मुषहोतहीदसमु

॥श्रीगनाधपतयेनमः॥श्री
सरस्वतैनमः॥श्रीपरमगुरभे
नमः॥अथश्रीरामचंद्रकालि
ख्यते॥दंडक॥बालकैमनो

बालकमृनालननज्योंटोरिजोरे
सबकूटिनकरालवेअकालदी
हदुष्यको विपतहरतहटप
द्विनीकेपातसमपकज्योंपता
लपेलपरवैकलुष्यकों दूरि

कैकलंकअंकभवसीससिसि
समराषतहैकेसोदासदास
कैवपुष्यकौं॥सांकरकीसा
करनसन्मुषहोतनहीदसमु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रा·चं·
२

समुषजोवेगजमुषमुषकौं ॥ १ ॥ बानीज
गरांनीकीउदारताबषांनीजाइऐसीम
तिउदितउदारकौंनकीभईी ॥ देवताप्र
सिद्धरिषिराजतपवृद्धकहहकहिहारसु
वकैहिनकाहूंलई ॥ भाभीभूतवर्नैंमा
नजगतुवषानतहेकेसोदासकौंमह
नवषांनीकाहूपेगई ॥ वेनैंपतिचार
मुषपूतवैनैंपाचमुषनातीवरनैंष
टमुषतदिपनईनई ॥ २ ॥ पूरनपुरा
नअरुपुरिषपुरांनपरिपूरनवतावेन
वतावेपौरउक्तिकों ॥ दरसनदेतजेनदर
सनदरसैननेतिनेतिवेदकेहेछांडिभे
दउक्तिकों ॥ जानयहकेसोदासअनु
दिनुरांमरांमरटतुरहतनतउरातुपुन
रुक्तिकों ॥ रूपदेहिअनिमाहिगुनदे
हगरमाहिभक्तिदेहमहिमाहिना
मदेहमुक्तिकों ॥ ३ ॥ गीतका ॥ सन

सजातिगुनलहैजगसिद्धसुद्धसुभा
इ॥ कस्नदत्तप्रसिद्धहैतहमिश्रपं
डितराई॥ गनेससोसुतपाइयोबुधि
कासीनाथअगाध॥ असेषसास्त्र
विचारकेजिनसमुझियोमतुसाधि
४॥ दोहा॥ उपजोतिहिकुलमंदमति
सुतककवकेसवदास॥ तिनरांमचंद्रकी
चंद्रकाभाषांकियोप्रकास॥५॥ भाषा
बोलनजानहीजिनकेकुलकेदास
भाषाकोकविमंदमतिसुहिकुलके
सोदास॥ सोरसेअठावनाकातिकसु
दिबुधिवार॥ रांमचंद्रकीचंद्रकातवली
नोअवतार॥७॥ बालमीकमुनिसुप्रमे
दीनोदरसनचारु॥ केसवपहतिनसोंक
ह्यौक्यौपाऊसुषसारु॥८॥ मुनना
गस्वरूपनीछंद॥ भलोबुरोनतूंग
नै॥ वृथाकथाकहैसुनै॥ नरामदेवगा

पं० २

ईहै ॥ नदेवलोकपाईहै ॥ ९ ॥ छप्प ॥ दोलि
नवोल्योवोलुदियोफिरताहिनदीनो
मानिमारैसत्रुक्रोधमनहृथानकीनो
जुनिमुएनमाहिलोककीलीकनलो
पी ॥ दांनसत्यमनमानसुजसदिसिवि
सिनवोपी ॥ मनुलोभमोहिमदकामव
सभयवनकेसवदासभनि ॥ श्रीरांवंद्र
रुद्रादिप्रभअवतारीअवतारमनि १०
॥ रमनजाछंद ॥ दुषकोंदरिहै ॥ हरिज
हरिहै ॥ ११ मधुछंद ॥ रामनाम ॥ सत्यधा
म ॥ औरनाम ॥ कौनकाम ॥ १२ ॥ तरने
जाछंद ॥ तरनिसेवरसो ॥ जगतकोमर
नसो ॥ १३ ॥ प्रियाछंद ॥ सुषकंदहैरघु
नंदजू ॥ जगयोकहैजगवंदजू ॥ १४
सोमराजीछंद ॥ गुनोएकरूपी सुनो
वेदगावै ॥ महादेवजाको सदाचित्तला
वै ॥ १५ ॥ कुमारललिताछंद ॥ विरंच

गुननदोष॥ गिरागुननिर्लोषे॥ अनंत
मुषगावे॥ विसेषैनपावे॥ ६॥ श्रीधी
न्नधे॥ दोहा॥ मुनपतियह उपदेसदै
जवहीभएअदिस॥ केसवदासतही
करोरामचंद्रजूइस॥ ७॥ गाहाछंद
श्रीरामचंद्रपदपाद्मिनियं॥ वृंदारक
वृंदअभिवंदनियं॥ केसवमतभूत
नया विलोचनचच्चरीकायते॥ ८॥
॥ चतुपदीछंद॥ जिनकोजसहंसाज
गतप्रसंसामुनिमनमानसरंता॥ लोच
न अनुरूपनस्यामसरूपनिअंजनअं
जितसंता॥ कालत्रयदर्सीनिर्गुनपर
सीहोतविलंवुनलागे॥ तिनकेगुनक
हिहौसवसुषलहिहौपापपुरातनभा
गे॥ ९॥ दोहा॥ जागतिजिनकीजो
तजगएकरूपस्वछंद॥ तिनरामच
द्रकीचंद्रकावरनतहौवहुछंद॥ १०॥

रा॰

३

॥छंद॥ सुभसुरजकुलकलनपद सरथभवभूपति॥ तिनकेसुतसुनचारि चतुरचितचारुचारुमत॥ एमचंद्रभुव चंद्रभरथभारथभवभूषन॥ लछमन अरुसत्रुघनदीहदानवदलदूषन सर ऊसरितातटनगरवरवेसेअवधनाम जसधामधर॥ अघवोघविनासीसव पुरवासीअमरलोकमानहुनिकर॥ २१॥

॥छपय॥ गाधिराजकोपुत्रसाधिसव सत्रमित्रवल॥ दांनकृपांनविधानव सकीनोभुवमंडल॥ केमनुअपनेहाथ जीतिजगइंद्रयगनअति॥ तपवल येहीदेहभयेछत्रियतैरिषपति॥ तिहि पुरप्रसिद्धकेसवसुमतिकालअतीतना गतनिगुन॥ तहअद्भुतगतिपगुधारियै विस्वामित्रपवित्रमुनि॥ २२॥ पद्धटिका मुनआऐसरऊसरततीर॥ तहदेषे

३

ग जलअमलनीर॥ नवनिरखनिरषि
डुलगतिगभीर॥ कछुवरनैंलागेसुम
तिधीर॥२३॥ अतिनिपटकुटिलगति
जदपिआपु॥ वहदेतसुद्धगतिछुवत
आपु॥ कछुआपुनअधिअधगतिच
लंत॥ फलपतितनकोऊरधफलंत।
२४॥ पद्मावती॥ मदमतियजदपिमा
तंगसंग॥ अतिनदपिपतितपावनतरं
ग॥ वहन्हांइन्हांइतिहिजलसनेह
सवजातस्वर्गमकरसदेह॥२५॥ नवप
दी॥ जहतहलसतमहांमदमत्तियवर
वारनवारनदलन॥ अंगअंगचर्चेअ
तिचंदन॥ भुंडनभुरकेदेषदेषअभक
वरवंदन॥ दीहदीहदिग्गजनकेकेसव
मनहुकुमार॥ दीनेएजादसथ्थेहि
दिगपालनउपहार॥२६॥ अरिल्ल॥
देषवागअनुएगउपजिय॥ वालत

न

ए.
४

कोकिलकलधुनिसज्जिय राजतिर
तिकीसषीसुवेसनि॥मनहुकहतमन
मंथसंदेसनि॥२७॥फूलनफूलतनफूल
वढावतु॥मोदितमहांमोदउपजावतु उ
ड्तपराग नचित्तउड़ावत॥भमरम्भमत
नहिचित्तभ्रमावत॥२८॥पदकुलकछंद॥सुभसरसोभे मुनिमनलोभे॥सरसि
जफूले॥अलिरसभूले॥जलचरडोल्लै॥
वहुविधिवोल्लै॥उपमरछ्याही॥वाननजा
ई॥२९॥पदमावतीछंद॥देषीवनवारी
चंचलभारीतदपितपोधनमानी॥तप
मयलेषीग्रहथितदेषीजदपिदिगंवर
जांनी॥जदिपदिगंवरपुष्पवतीननिर
षनिरषमनमोहे॥पुष्पवतीतनत्रि
तिअतिपावनगर्भसहितसवसोहे॥
३०॥गर्भसजोगीरतिरसभोगीजगजन
लीनकहावे॥जगजनलीनानगरघवी

४

नापियके जियतेभवे॥ पतिहिरमावेरवि
नुभामावेसोतिनप्रभुवठावे॥ अवयो
दिनएतिन अद्भुतभाननकविकुलकी
रतगावे॥ ३२॥ हाकलिकछंद॥ संगलि
येषिसिष्यनिषेने॥ पावकसेतपतेजनि
सेने देषतसएतिउवनभले॥ देषनअ
वधिपुरिकेहचले॥ ३३॥ मधभार॥ ऊ
चेअवास अतिधुजप्रकास सोभाविला
स॥ सोभेअकास॥ ३४॥ अभीर॥ अतिसुं
दरअतिसाधु॥ धिनरहतपलआधु॥ स
वनितपोमयमानि॥ दंरधारनीजानि॥ ३
५॥ हरिगीतका॥ सुभद्रानगिरगनसिषि
रऊपरउदितवोषदिसीभनो॥ वहुवार
वादिवहाहीरहिउरझिदांमिनदुति
मनो॥ किधोसचिरमचंडपावकपगट
सुरपुरकोचली॥ कहिकिधोसरितसु
देसमेरिकीदिविषलतिभली॥ ३६॥

५

रा॰ ५

दोहा॥ जीतजीतकीरतिलईसत्रुनकीवहु
भांति॥ पुरपरबाधीसोभिजेमानोतिन
कीपांति॥ ३७॥ त्रभंगी॥ सुभघरसोवे
मुनमनलोभैखगनिछोभैदषसवै
वहदुंदभीबाजैजनुघनगाजैदिगज्ज
लाजैसुननत्र्वै॥ जहतहसुतपटही
विघनिवठहीजयजसमठहीसकलादि
सा॥ सवईसवविधिछमवसतजथाक्र
मदेवपुरीसमदिवसनिसा॥ ३८॥ कवि
कुलविद्याधरसकलकलाधरराजराज
वरवेषवनै॥ गनपतिसुषदाइकरूपसुप
तिलाइकसूरसहाइककोनगनै सेना
पतिवुधजनमंगलगुरजनधर्मराजसम
वुध्यघनी॥ वहुसुमनसनरवरकरुनाम
यऋसरतरंगिनीसोभसनी॥ ३९॥ ही
रछंद॥ पंडितगनमंडितगुनदंडितमति
देषिए॥ क्षत्रियवरधर्मप्रवरक्रुद्धसम

रलेषिये॥ वेस्पसहितमत्सरहितपापप
गटमानिये॥ सुंदसन्धि विप्रभक्तिजीवज
न्तुजानिये॥ ४०॥ सिंघावलोकन ॥ अतिमु
नतनुतहमोहिरहैसो॥ कछुवुधिवलवच
नुनजाइरुहैसो॥ पसुपंछिनारिनरनिरख
तवे॥ दिनरामचंद्रगुनगनतसवे॥ ४१॥
मरठा॥ अतिउच्चअगारनवनीपगारन
जनुचिंतामनुनारि॥ सुभसतमषधूपन
धूपतिअंगनिहरिकैसीउनहारि॥ चि
त्रीवहुचित्रनपमेविविचित्रनकेसव
दासनिहारि॥ जनुविस्वरूपकीअमल
आरसीरचीविरंचविचार॥ ४२॥ सोरठा॥
जगजसवंतविसाल॥ राजादसरथकी
पुरी॥ चंद्रसहितसवकाल॥ भालथली
जनुईसकी॥ ४३॥ कुंडरिया॥ पंडित
अतिसिगरीपुरीमनहुगिरागतगूढ॥ सि
घनजुतिजनुचंडिकामोहतमंत्रमूढ

रा॰ ६

मोहतमूढअमूढदेवसगअदितिविचारी सवअंगगारसदेहमनौरतमनमथकारी सवअंगगारसदेहसकलसुषमामुषमंडित॥ मनहुसचीविधिरची विविधिवरनंतपंडित॥४४॥ छप्पै॥ मूलनहीकोजंहां अधोगतिकेसवगाइय॥ होमहुतासनधूमनगरएकेमलिनाइय॥ दुर्गतिदुर्गनहीजुकुटिलगतिसरतननहीमै॥ श्रीफलकोअभिलाषप्रगटकविकुलकेजीमै॥ अतिचंचलजहचलदलेविधिवावनीननारि॥ मनमोहरब्योरिषराजजूअद्भुतनगरनिहारि॥४५॥ सोरठा॥ नागरनगरअपार॥ महामोहितमसिवसे॥ चत्लालनाकुदार॥ लोभसमुंदूआगलसे॥४६॥ दोहा॥ विश्वामित्रपवित्रमनकेसवबुध्धउदार॥ देषतसोभानगरकीगएराजदरबार॥४७॥ इति

६

श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रकायांविस्वामित्रआगमनवर्ननंनामप्रथमप्रकास ॥ दोहा ॥
यह दूसरेप्रकासमैंदसरथराजविचित्र
रामचंद्रलक्षमनदुहौदैहैविस्वामित्र
१ ॥ हंसछंद ॥ आवतजातराजकेलोग
मूरतिधारीमानहुभोग ॥ असिसिद्धिन
वनिहसजोग ॥ देहसदाजिनकीनिरोग
२ ॥ दोहा ॥ आदिनगनपुनियगनरचि
चरनषटछुरजानि ॥ सुनहुमालतीछंद
दुयहकुलकौंसुषदानि ॥ ३ ॥ माल
ती ॥ तहदरवारी ॥ सबसुषकारी ॥ कृतजु
गकेसे ॥ जनुजनवेसे ॥ ४ ॥ दोहा ॥ महि
षमेषमगहषभकहुभिरतमल्लगज
राज ॥ लरतकहूंपाइकसुभटकहुनि
रतनटराज ॥ ५ ॥ आदिअंगगुरुवरनिसे
रगनजगनतिहिमाह ॥ कीनीएगटस

मानिकासम्रवानकबिनाह॥ ८॥ समानिका॥ देषदेषकैसभा॥ विप्रमोहिसोप्रभास॥ राजमंडलीलसे॥ देवलोककोहसे॥ दोहा॥ अस्वरानपददेहिक्रमगुरुलघुकेसवदास॥ मदनमल्लिकानामयह कीजेक्षंदप्रकास॥ ८॥ मदनमल्लिका॥ देसदेसकेनरेस॥ सोभिजैसभासुवेस॥ जानजैनआदिअंत॥ कौनदासकौनकंत॥ ९॥ दोहा॥ सोभतबैठेतिहिसभासातदीपकेभूप॥ तहराजादसरथलसतदेवदेवअनुरूप॥ १०॥ देषतिन्हेनवदूरितेसुंदरनगोप्रतहार॥ आएविस्वामित्रजूजनुजगकोकरतार॥ ११॥ उठदौरनपसुनतहीजाइगहेतवपाइ॥ लेआएभीतरभवनज्योंसुरगुरसुरराइ॥ १२॥ सोरठा॥ सभामध्यवेताल तेहीसमैजुपढिउठो॥ केसवबुधिविसा

ल॥सुंदरसतैभूपसे॥ २३॥ दंडक॥ वि
धकेसमानिहैविमानकैनराजहैसवि
विधिविवधजमेरसोभचलुहै॥ दीप
तिदिपतिश्रतिसातोदीपदीपजतुद
सोदिलीपसोसुदक्षनाकोवलुहै॥ सा
गरेजागरकेवहुवाहनीकोपतिछन
दानप्रियकिधोसूरजश्रमलुहै॥ सव
विधिसमरथराजेराजादसरथभागी
रथपथगामीगंगावैसोजलुहै॥ २४
॥ दोहा॥ जदपिइंधनजरिगएश्ररि
गनकेसवदास॥ तदपिप्रतापीनल
नेकेपलपलवठतप्रकास॥ २५॥ नग
नश्रादिरचिहैजगनरचिजेवहुसु
षकंद॥ चरनचारुनववरनमयप्रग
टहुतोमरछंद॥ २६॥ तोमरछंद॥
वहुभातपूजसुराइ॥ करजोरकैपर
पाइ॥ हसिये।कह्योजगमित्र॥ श्रव

रा॰
८

बैठराजपवित्र॥१७॥मुनउवाच॥सुन
हानमानसहंस॥एघुवंसकेअवतंस
मनमाझिजोअतिनेहु॥इकबातेमा
गेदेहु॥१८॥दोहा॥नगनरचौदहुज
गनमहदेहुएकगएअंत॥प्रगटकरै
सहअमतगतिसंदनामभगवंत॥१
९॥अंमगति॥सुमतिमहाएिषसु
नेजे॥तनधनकेसमगनेजे॥मनम
हहोइसोकहिसै॥धनजुआपन
लहिसै॥२०॥दोहा॥आदअंतगु
रुमधपुनिहीनतिभगनविचार॥
पदएकादसवानकोदोधकछंदसु
धार॥२१॥रिषिवाच॥दोधक॥राम
गएजबतेवनमाही॥राषसबैरुक
रैबहुधाही॥रामकुमारहमैनपदी
जे॥तोपरपूरनजज्ञकरीजे॥२२॥
॥दोहा॥रचपदबारहवरनेकोक

८

सवदासुजान॥ चासिगनकोचारु
मतितेतारकक्षंद्रप्रवान॥ २३॥ तोटक
पहवानसुनीनपनाथजवे॥ सासे
लगेआषरचितसवे॥ मुषनेकछुवा
तनजाइकही॥ अपराधविनाषिदे
हदही॥ २४॥ राजउवाच॥ अतिको
मलकेसववालकना॥ वहुदुष्कार
छुसवालकाना॥ हमहीचलहैरि
षसंगअवे॥ सजिसेनचलोचतुरंग
सवे॥ २५॥ रिषिउवाच॥ छप्पे॥ जि
नहाथनिहठिहरषिहनतहरिनीर
षुनंदन॥ तिननकारनुसंघारकहा
मदमंत्तगयंदन॥ जिनवेधनसाल
सलक्षनपकुअरकुवामन॥ तिन
वाननवाणहवाघनहिमातसिंघ
न॥ नपनाथनाथदसरथ्थकथत्र
कथकथाषहमानिसै॥ मगराजराज

रा०
६

कुलकलसएवालक बूहूनजानिये
दोहा ॥२६॥ चाप्रिभगनकोसुंदरीक्षे
द छवीलो होइ ॥ प्रतिपद द्वादस व
रतमयवर्तनतवुधजनक्लोप ॥२७॥
सुंदरी ॥ राजनमेतुमराजवडेश्रुति मे
मुहमाग्यो सुदेहु महामति ॥ देवमहा
इक हो न लोइक ॥ हैयहकाजराम
हि लाइक ॥२८॥ राजउवाच ॥ दोधक
मेजुकह्यौ षिटैन सुलीजे ॥ काजुक
रहि रुभूलनकीजे ॥ प्रानदियेधनजा
हि दियेसव ॥ केवलरामनजाइ दिए
अव ॥२९॥ रिषिउवाच ॥ राजुतज्यो
धनमाधतजेसव ॥ नारितजीसुत
सोचतजेतव ॥ आपुनपैजुनतज्योज
गवंदह ॥ सत्रुनएकुतज्योहरचंद ह
३०॥ राजुवहैवहसाजुवहैपुर ॥ धा
मुवहै वहनामुवहैगुर ॥ भूटसोअ

९.

रहीबाधतहोमन॥ छांडतहोनपसस
सनातन॥३०॥दोहा॥ जान्यो विस्वा
मित्रकेकोपउठोउरम्राइ॥ राजादमाथ
सोकहोवचनवसिस्टबनाइ॥३२॥
छपय॥ इनहीकेतपतेजजहकीरक्षा
करहै॥ इनहीकेतपतेजसकलवलर
क्षसहरिहै॥ इनहीकेतपतेजतेजवठ
हेतनतान॥ इनहीकेतपतेजहोहिगे
मंगलपूरन॥ कहवेसवजयजुतम्रा
इहैइनहीकेतपतेजघर॥ नपवेगरा
मलछमनदुम्रोसोपोविस्वामित्रक
र॥३३॥सोरठा॥ राजाम्रोरनमित्र जा
नौविस्वामित्रते॥ जिनकोम्रमितच
रित्र॥ रामचंद्रमयमानिये॥३४॥दो
हा॥ नपसोवचनवसिष्टकोकेसमे
टोजाइ॥ सोपेविस्वामित्रकोरामचं
द्रम्रकुलाइ॥३५॥ म्रादिमगनपनि

नगनरचिवहुजिगनहैआनअंतलपं
कजवाटिकातेरहवरनवषानु २६ ॥पं
कजवाटिका॥ रामचलततनपकेजुग।
लोचन॥ वाजिमिटिभएवादिमाच
न॥ पाइनपरिषकेसजिमोनह॥ के
सवउठगएभीतभौनिह॥३७॥दोहा
रगनजगनपुनिभगनिरचिवहुरेरग
नहिआन॥ आदिअंतगरचामरहि
पंद्रहवरनवषान॥३८॥ चांमर॥ वेद
मंत्रतंत्रसोधिअस्त्रसस्त्रदेभले रा
मचंद्रलछमनैसुविप्रछिप्रलैचले
लोभछोभमोहगर्भकामकामनाहु
ई॥ नीदभूषप्यासत्रासवासनासवै
गई॥३९॥दोहा॥ भगनजगनपुन
सगनरचिवहुरेतगनविचारु॥ होहि
छंदनिसपालकापंद्रहवरैविचार
४०॥निसपालका॥ कांमवनएम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सवघामनस्देषियो नेनसुषदेनम
नमेनममलेषिसो ईसजहकामत
नुकेअतनुडारिसो क्षोरिवहजग्प
पलुलोचनिनिहारियो ४१ दोहा
एमचंद्रलछमनसहिततनमनअत
सुषपाइ देष्योविस्वामित्रकोपामेत
पोवनजाइ ४२ इतिश्रीमत्सकल
लोकलोचनचकोरचिंतामनश्रीरा
मचंद्रचंद्रिकायांविस्वामित्रतपोव
नदर्सनंनामदुतीयप्रकास ॥ दो
हा यहतीसरेप्रकासमेरक्ष्याकरमे
षमित्र धनषजग्यकीसुभकथासुने
हेपरमविचित्र १ छंद यस तरुता
लीसतमालतालहितालमनोहरमं
जुलवंजुललकुचवकुचकुलनारि
केरवर एलाललितलवंगसंगपुं
गीफलसोहे सारीसुककुलकलि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नचिंतके किलक्कलमोहे सुभाजहं सकलहंसजहनाचतमत्तमयूरगन॥ अतिप्रफुल्लितफरातिसदारहतकेस वदाससविचित्रवन ॥२॥ दोहा ॥ समुझिसवैलघुछंदगुरसुप्रियछंदप्रकास॥ अक्षिप्तपदपंचदसवरनेहुकेसवदास॥३॥ सुप्रिया॥ कहुजगन मिलिसुषश्रुतपठही॥ कहुहरिहरि कहहरहरटही॥ कहुमृगपतिमृगसिसुपयपियहीं॥ कहुमुनिगनचित्रवताहियहरही॥४॥ दोहा॥ लघुगुरकैमहीदेहुपदसोरहवरनप्रमान॥ छंदनराजवषानियेकेसवदाससुजान॥५॥ नराज॥ विचारजेमानव्रह्मादेवअर्चमानमानिये॥ अदीहमानहुदुषःसुषःदीहमानिजानिये॥ अदंडमानदीनगर्वदंडमान

भेदुवे॥ अपसमानपापगंषपसमा
नवेदुवे॥ ६॥ दोहा॥ पंचभगनमय
अंतगुरएकरचेहहुसुषसाज॥ प्रगटहु
छंदविसेषकाकेसवकविकविराज॥
७॥ विसेषक॥ साधुकथाकथिएत
हकेसवदासजहां॥ निग्रहकेवल
हेमनकोदिनमानतहां॥ पावनवा
सुसदारिषिकोसुषकोवरषै॥ कोव
रनेकविताहिविलोकनहमोहरषै
८॥ दोहा॥ कमहीगुरलघुदेहुप
दप्रतिपदषोडसवर्न॥ चारुछंदय
हचंचलाप्रगटहुकविमतिधर्न॥ ९॥
चंचला॥ रक्षिवेकोजगपकूलवैठि
वीरसावधान॥ होनलागेहोमके
जहांतहांसवैविधांन॥ भीमभां
तिताडिकासुभंगलागीकरनआ
इ॥ रामपेनवांनतांननाहिजानिक्षे

ए॰
१२

डिजाइ॥१०॥षिचाच॥सोरठा॥ कर
मकरनपहघोर॥विप्रनकौदसहूदि
सो मत्तसहसगजजोर॥नाऐंजो नि
नछुंडिऐ॥११॥कुडरिआ॥ सुताबि
रोचनकीहुतीधीरघजिह्वानाम॥सु
रनारकुवहसंघरीपरमपापनीवा
म॥परैपापनीवामच्योउपजीकपि
माता॥नाएपनसोहतीचक्रचिंता
मनदाता॥नाएइनसोहतीसकल
दुजदूषनसंजुत॥त्यौ ब्रवत्रभुवन
नाथतारकाताहुसःसुत॥१२॥दो
हा॥दुजदोषीनविचारिसैकहापु
रिषकहनार॥एमविएमनकीजरई
वांनतारिकातार॥१३॥मरैठा॥सुन
गुरबानीधनगनतानीजांनीदुज
दुषदान॥ताकासंघारीदारुनभा
रीमारीअतिवलजान॥मारीचुवि

म

ह

१२

उपजलिधिउतारेमारेसवलसुवा
हु॥ देवनिगुनपरषेपुष्पनवरसोह
रष्योअतिसुरनाहु॥१४॥ दोहा॥ प्र
नजगपभयोजहीजानोविस्वामित्र
धनषजगपकोसुभकथालागेसुनन
विचित्र॥१५॥ दोहा॥ एगनहोइपुनि
तगनइकुवहुरजगनहेआन॥ आदि
अंतगुरचचरीवरनअठारहजान
१६॥ चच्चरी॥ आइयोतिहिकाल
वाम्हनजगपकोफलदेषके॥ ताहि
बूझतवोलकेरिषिभांतिभांतिविसे
षके॥ संगसुंदररामलछमनदेषिदे
षिसहर्षहीं॥ वैठकेसोईराजमंडि
लवनेईसुषवर्षहीं॥१७॥ सादूल
विक्रीडितश्लोक॥ सीतासोभनवा
हंत्सवस्तभामधपसंभावना॥ ततः
कार्जसमग्रामीमिथिलावासीजन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥सोभना॥राजाराजप्रोहितादिसु इह रा
गंद्रीमहामंत्रदा॥नानादेससमागता
नपगनापूजापरासर्वदा॥१८॥दोहा॥
श्रीषंडपरसकोसोभिजैसभामह्हको
हेग॥मानहूसेषश्रसेसधराधरनहा
रवलवंड॥१९॥सवैया॥सोहतिमंच
नकीश्रवलीगजदंतमईछविउज्जनत
छाई॥हीतुमनोवसुधामेसुधासुधा
धरमंडलीमंडिजुन्हाई॥तामहेकेस
वदासविराजतराजकुमारसबैसुष
दाई॥देवनसोजनुदेवसभासुभसो
पहलमंवारदेषनआई॥२०॥दोहा॥
नचतमंचपंचालिकाकासंकुलित
अपार॥राजतहेजनुनृपनिकीचित
वृत्तिसुकमार॥२१॥सोरठा॥सभाम
ध्यरानग्राम॥वंदीजनहैसोभिजैसु
मतिविमतइहिनाम॥राजनकोवर

ननकरन ॥ २२ ॥ सुमत ॥ दोहा ॥ कोय
उदेषतु आपने पुलकित वाह विसा
ल ॥ सुरभि स्वयंवर जनु करी मुकलि
त साष रसाल ॥ २३ ॥ विमत ॥ सोरठा
जिहि जस परमल मत्त ॥ चच्चरीक चा
रन फिरत दिसि विदिसिन अनुरत्त सु
तौ मल्लिन का पंडन प ॥ २४ ॥ सुमति दो
हा ॥ जाके सुष मुष वास तें वासित हो
त दिगंत ॥ सु पुनि कहौ यह को नुन प
सो भासो भि अनंत ॥ २५ ॥ विमत ॥
दोहा ॥ राजराज दिगवान भाल ला
लला भी सदा ॥ अति प्रसिद्धि दि
नाम ॥ कासमीर को तिलकु यह २६
सुमति ॥ दोहा ॥ निजु प्रताप दिनक
र करनु लोचन कमल प्रकासु ॥ पान
पात मसक्वा नु मडु को यह कैसो दा
स २७ ॥ विमति ॥ सोरठा ॥ नृपमा

ति

निक्कसुदेस। दक्षिनतियजियभाव
तो कटितदिक्षपरसुवेस। कलका
चीकहिमंडई॥२८॥सुमति दोहा॥
कुंडलनपासमनमिसकहतुकहोकौन
यहराज। संभुसएसनगनके।रोकरनो
लंबितआज॥२९॥सुमति॥सोरठा॥
जानहिबुध्धनिधान। मत्तराजयह
राजकै॥ समरसमुद्रसमान। जानतु
सबअवगाहिकै॥३०॥सुमति॥दोहा॥
अंगरागरंजितरुचिरभूषनभूषत
देह। कहतविदुषनसोकबहसपन
केहानपएहि॥ विमत॥सोरठा॥
चंदनचित्ततरंग। सिंधराजयहजानि
यो। वहुतवाहनीसंग। मत्तामाल
विसालउर॥३१॥सुमति॥दोहा॥सि
गरेराजसमाजकेकहहुगोनतगुनग्रा
म। देससुभागउप्रभाउअरुवलवि

क्रमपरनाम॥३३॥विमन॥दंडक॥पाव
कपवनमुनिपनंगपतंगपित्रजितजो
तिवंतजगजोतिसिनगाएहै॥अमुर
प्रसिध्धिसिधितीरथसरितसिधक्रम
वचरणचरजेवेदनवताएहै॥अजर
अमरअजअंगियोअंगीसवरनिमु
नाए॥ऐसेकौनेगुनगाएहै॥सीता॥
केस्वयंवरकोरूपअवलोकिवेकोभू
पनिकोरूपधरविस्वरूपआएहै॥
॥विमति॥सोरठा॥कह्यौविमतिप
हठेरि॥सकलसभाहिसुनाइकै॥च
ह्वोरकरफेर॥सवहीकोसमुझाइ
कै॥३५॥दोहा॥सगनजगनहूंभग
नपुनिरगनसगनपुनिआनलघुगु
रअंतहगीतकाविंसतवरनवषान
३६॥गीतका॥कोईआजराजसमा
जमेवलसंभुकोधनकर्षिहै॥पुनक

नेकपरिमानन्त्रानसुचित्तमेंत्र्प्रतिहर्षहे॥नहरंकुहोइकैराजुकेसवदाससो
सुषपाइहै॥नपकंनिकायहत्तासकेउ
रपुष्पमालानाइहै॥३७॥दोहा॥नै
कुसरासनत्र्प्रासनैतजेनकेसवदास॥
उदिमकैथाकेसवैराजसमाजप्रकास॥
॥विमति॥सुंदरी॥सन्नकरीनहिभंन्न
करीग्र्पव॥सोननयोपलसीसनरेस
व॥देषहुराजकुमारनकेवर॥चापुच्च
ढोनहित्र्प्रापुचढेषर॥३८॥सवैया॥
दिगपालनकीभुत्र्पपालनकीलोक
पालनकीकिनिमातगईत्त्वै॥भाडभ
एतजत्र्प्रासनतेकहिकेसवसंभुसरा
सनकोछ्वै॥सुकाहूनवायोनकाहूंव
ढायोनकाहूंउढायोनत्र्पंगलहे॥कछ
स्वारथभोनभसोपरमारथत्र्प्राएतेवीर
चलेवनितांहे॥४१॥इतिश्रीमत्सक

लोकलोचनचकोरचिंतामनश्रीएम
चंद्रिचंद्रकायांसीतास्वयंवरवरननंनाम
त्रतीसप्रकास॥३॥दोहा॥ चौथेचार
प्रकासमेंकेसवदासप्रमान॥धनषजग्य
मेंएम्रतिकरेहेएवनवान॥१॥सवही
कोसमुझौसवनिवलविक्रमपरमानु
सभामधतेहीसमेंम्राएराउनवानु॥२॥
डिल्ला॥ नरनारतवे॥भयभीतसवे
म्रचिरजुयहे॥सवदेषिकहे॥३॥दोहा
हेराषसुदससीसकौदेयंतुवाहुहजा
र॥ कियोसवनकेचित्तमयम्रद्भुतएस
संसार॥४॥रावनविपोहा॥ संभुकोदं
डेहू॥टूकहेहुतीनके॥राजपुत्रीकितेजा
हुलंकाहिले॥५॥विमतससिवदन द
ससिरम्रावहू॥धनषचरावहू॥कछुव
लकीजे॥जगुजसलीजे॥६॥वानरीन
का॥दसकंठरेसठछांडिदेहठवारवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रनवोलिये॥ अवआजुएजसमाजमे
बलुसाजचिन्ननडोलिये॥ गिरएजते
गुरज्ञानिसेसुएजकोधनुहाथले॥७
सुषपाइताहचगाईकेघनोहरेजसु
साथले॥८॥ एवनमंथरा॥ वानीकही
वानकीनीनसोकान॥ अद्यापिआनी
न॥ ऐसेदकानीन॥ ॥दोहा॥ जगनदो
इषदवन॥ जुनज्ञानमालनीकंतुन
गनदोइगुरअंतहैरचहुंतुरंगमसंतु
रवानमालनीक्षंद॥ जोपैजियजोर
तजोसबुसोर॥ ससनतोसलहो
हितजोर॥१०॥ एवन॥ दंडक॥ वजके
अषर्वगर्भजेते तिहिपर्वतारिजीते
हैसुपनसर्वभाजे लेले अंगनाष
डितअषंड आसकीनेहै जलेस
पासचंदनसीचंद्रिकासोंकीनीचं
दवंदना॥ दंडकमेकीनोकालदंडही

कौमानषंडमानौंकीनींकालहीकी
कालकालषंडना। केसवकोदंड वि
सहंडऐसोरंजेअवमेंभुजदंड न
कोवडीमैविटंमना॥११॥वाननुरंग
म॥ वहुनवदनजाके॥ विविधिवच
नताके॥ वहुभुजजुनजोई सवल
कहियेसोई॥१२॥एवन॥दोहा॥अ
तिअसारभुजभारहीवलीहोहुगे
वांन॥ममवाहुनकेजगतमेंमुनिद
सकंठविधांन॥१३॥वान॥सवैया॥
हौंजवहींजवपूजनजातुपितापद
पावनपापप्रनासी॥ देषिफिरौंसि
गरेतवकेसवसातोरसातलकेजि
विलासी॥ लेअपनेभुजदंडअषंड
धरौंछितमंडिलछत्रप्रभासी॥जाने
कोकेसवकेतिकवारमेंसेसकेसीस
नदीनींउसासी॥१४॥दोहा॥गन
न

आदिदेसगनदैलघुगुरदीजहिअंत॥
अरुवरनप्रतिपदनिदैकमलाक्षंद
कहंत॥१५॥रावनकमला॥तुमप्रवल
जुहते॥भुजवलनिसंजुते॥पितहि
भुवलाउते॥जगतजसुपावते॥१६॥
॥दोहा॥सगनएकरचैहजगनतामर
क्षंदप्रसिधि॥पतिपदनवधावरनको
केसवदाससुसिधि॥१७॥वानतोमर
पितुगविएकिहिवाक॥द्विपदक्षिना
सवलोक॥यहजानराउनदीन॥पितु
वन्हकेरसलीन॥१८॥सवैया॥केट
भसौनरकासुरसोपलमेमधुसोम
रसोजिहिमारयो॥लोकचतुर्दसरछ
कुकेसवपूरनवेदपुरानविचारयो॥
श्रीकमलाकुचकुंकुममंडितपंडि
तदेवअदेवनिहारयो॥सोकरमाग
नकोवलिपैकरतारहूतेकरताहि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पसारो॥१९॥रावनदोहा॥ हमेतुम्हे नहिबूझिएविक्रमवाहुअषंड॥ अ वजुयहैकहिदेहिगोमदनकदनकोदं ड॥२०॥संजुता॥ ब्रजुवांनरावनको सुन्यो॥ सिरराजमंडलकोधुन्यो ज गदीसअवरक्ष्याकेरो॥ विपरीतवा तसवेहरो॥२१॥दोहा॥ रावनवां नमहावलीजांनतसवसिंसार॥ जोदोउधनकर्षहैताकोकहाविचार॥२२॥वान॥सवैया॥ केसवओ रतेओरभईगतजानीनजाइकछुक रतारी॥ सूरनकोमिलवेकहआयमि लोदसकंठसदाअविचारी॥ वाढि गयोववकवादवृथाअवभूलनभा टसुनावहिगारी॥ चांपचढायजेकी रतकोयहराजकरैतेरीराजकुमा री॥२३॥रावन॥ मोकहरोकसके

कहि कोर ॥ जुध्धजु रैजमहीका जो
रे ॥ राजसभा तिनु का करलेषो ॥ दे
षिके राजसुता धनु देषो ॥ २४ ॥ वान
सवैसा ॥ वानक हो नव एवन सौ
च्चववेग चठा वस एसन कौ ॥ वाने
वनाइ बनाइ कहा कहि छोड देच्ची
सनवासन कौ ॥ जान नहे हि किधौ जा
न तनाहि रलू अपने मद नासन कौ ॥
ऐसे ही के से मनो रथ पूजन पूजे
विनान पसासन कौ ॥ २५ ॥ एवन ॥
वानृ नवात तुम्हे कहि आवे ॥ वान
जो इक है जियतो हि सुभावे ॥ एव
न का हौहै हम सो ही हरेगे ॥ वान है
हू राज करी सु करैगे ॥ २६ ॥ एवन ॥
दंडक ॥ भौजे सौ भवत वासु किंगनेस
जुत मानो मकरंद वुंद मालगंगौ लको ॥
उडत पराग पट नालसी विसालवाहू

कहा कहै हो केसवदास सोभा पल पल
की ॥ आजु सगन सर्व मंगला समेत
जुत पर्वत उठाइ गति कीनी हो कम
लकी ॥ जानत सकल लोक लोक
पाल दिगपाल जानत न वान मेरे
वाहु वलकी ॥ २७ ॥ मधुवार ॥ नज
के हुए ॥ सि चित्त मारि ॥ दस कंठ
आनु ॥ धनु छिपो पान ॥ २८ ॥ विम
ति ॥ तुम वल निधान ॥ धन अति
पुरान ॥ योस जहु अंग ॥ नहि हो इ
भंग ॥ २९ ॥ सवैया ॥ षर तु मान भसो
सव कौन प मंडल हारि रहो जगती
को ॥ व्याकुल वाहु निराकुल वुद्धि
थके ॥ वल विक्रम लंकपती को ॥ को
टि उपाइ करे कहि केसव क्यो हूं न
छांड तु भूमरती को ॥ भूरि विभूत प्र
भाव सुभाउ हि ज्यो न चलै चितु जे

गीजतीकौ ॥ ३० ॥ पधिटक ॥ धनुश्र
तिपुरानलंकेसजानि ॥ यहवातवों
नमोकहीश्रान ॥ होपलकमाञ्र
लैहोचढाइ ॥ कछुतुमहीघोदषोउ
ठाइ ॥ ३१ ॥ वान ॥ दोहा ॥ मेरगुरकौ
धनुषयहसीतामेरीमाइ ॥ दुहुभात
श्रसमंजसैवानचलेसिरुनाइ ॥ ३२ ॥
रावन ॥ मोदक ॥ श्रवसीयलपैवि
नुहोनटरै ॥ कहजाउननोलगिनै
मुधरै ॥ जौलौनसुनोश्रपनेजनकै
श्रतिश्रारतसद्वहतौतिनकौ ॥ ३३ ॥
॥ ब्राम्हनोवाच ॥ दोहा ॥ कहसरसा
सरमारियै ॥ श्रारतसद्वश्रकासपु
कारिय ॥ रावनकेवहिकांनपरयोज
वक्षोउिसमंदराजातुभयोतव ॥ ३४ ॥
॥ दोहा ॥ जवजानौसवकौभयोस
वहीदिघिघ्रतभंग ॥ धनषुधरौ

लैभवनमेराजाजनकअनंग ॥ ३५ ॥
॥ इति श्री मल्लकूललोकूलोचनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रिकायाराम चानसंवादवर्ननंनामचतुर्थप्रकास ॥ ४ ॥ दोहा ॥ यहपाचयेप्रकासमेजनकराजसुषजाल ॥ सीताज्यारघुनाथकोपहिराहेसुभमाल ॥ १ ॥ वाल्मनउवाच ॥ नवग्रानिभईसवकेउचनाई । केसवकाहूहोमेटीनजाई ॥ सियसंगलियेंरिषकीत्रियआई ॥ इकराजकुमारमहासुषदाई ॥ २ ॥ मोहनि ॥ सुंदरवपुअतिस्यामलसोहै ॥ देषतसुनरकोमनुमोहै ॥ आनिलिषीयसिपकेवहऐसो ॥ यहराजकुमारदेषियतुजैसो ॥ ३ ॥ तोटक ॥ रिषिराजमुनीयहवातजही ॥ नृपपांच

६

लेमिथलाहितही॥वनरामसिलाद रसीजवही॥त्रियसुदररूपभईतवही ४॥श्रीराम॥दोहा॥ वूझीविस्वामि त्रकोरामचंद्रश्रकुलाइ॥पांहनतेति यकैोभईकहमोसोरिषराइ॥५॥वि स्वामित्रंमोरटा॥गोतमकीयहनार इंद्रदोषदुरगतिभई॥देषतुम्हेनका र॥परमपतितपावनभई॥६॥कुसम विचित्र॥तिहिश्रतिरूररघुपतिदे षे॥सवगुनपूरतनमनलेषे॥यहव रमागेपादिसैनकाहू॥तुममममजि यनेकवहूनजाहू॥७॥कलहंस॥न हताहदेवरचलेश्रीरघुनाथजवी रदोउसरसुंदरलसततपोरिषिसा थजू॥जनुसिंघकेसुतदयोसिंघ हश्रीदपा॥वनजीवदेषनहीसवैमि थलागए॥८॥विस्वामित्र॥दोहा॥

काहूकोनभयोकहूंऐसोसगुननहो
न॥ परेपेहतश्रीरामकोभयोमित्रउ
दोत॥ ९॥ श्रीराम॥ चौपही॥ कछुरा
जतराजश्रम्हनघेरे॥ जनुलक्ष्मन
केअनुरागभरे॥ चितवतचित्तकमो
दिनचेसे॥ चोरचकोरचितासोलसे॥ १०॥ लक्ष्मण॥ छपय॥ अरुन
गातअतिप्रातपद्मिनीप्रांननाथभ
य॥ मानहुकेसवदासकोकनदकोप्रेममय॥ परिपूरनसिंदूरपूरकै
धोमंगलघट॥ किधोसक्रकोछत्र
मढ्योमानिकमयूषपट॥ कैश्रोनित
कलितकपालयहकिलकापालि
कपालको॥ ललितलालकैधो।
लसतदिगभामिनिकेभालको।
॥११॥ तोटका॥ पसरेकरकुमुदिनि
काजमनो॥ किधोपद्मिनिकोसु

षदेनमनोजनु रिक्षसवेदिहि चास
भगे॥ जनु जानिफ़ूदोनिचकोरउग
॥१२॥ चच्चरी॥ ओमनेमुनिदेषिएब्र
तिलालनश्रीसुषसाजही॥ सिंधमे
वरुवाग्निकीजनुज्वालमालवि
राजही॥ पद्मरागनिकीधोदिवि
धूरपूरितसीभरी॥ सूरवाजनकीपु
रिअतितिक्षनानिनकीहरी॥१३॥
॥विस्वामित्र॥सोरठा॥ चढोग
गनतरुधाई॥ दिनकरवांनरअ
रुनमुष॥ कीनोझुकअहराइ म
कलतारकाकुसमविनु १४॥ ल
क्ष्मनदोहा॥ जहांवारुनीकीक
रिरंचकरुचिदुजराज॥ तहीकयो
भगवंतविनसंपतिसोभासाज॥
१५॥ तोमर॥ चहुभागवागत
डाग॥ अबदेषिएवडभाग॥ फू

लफूलसोभसजुक्त ॥ ऋलियोरमेऊ
नुमुक्त ॥ १६ ॥ दोहा ॥ तिननगरीतिन
नागरीप्रतिपदहंसकहीन ॥ जलज
हारसोभितनजहप्रगटपयोधरपी
न ॥ १७ ॥ सवैया ॥ सातहूदीपनिके
अवनीपतिहारगएजियमेजवज्ञा
ने ॥ वीसविसेव्रतभंगभयोसुकहो
अवकेसवकोधनुताने ॥ सोककी ।
आगलगीपरपूरिसुआइगएघ
नस्यामविहाने ॥ जानुकीकेजन
कादिककेसवफूलउठेतरुपन्यपु
राने ॥ १८ ॥ दोहा ॥ आइगएरिषि
जहिलीने ॥ मुष्यसतानदविप्रप्रवी
ने ॥ दषिदुवोभएपाइनिलीने ॥ आ
सिषसीषवासुलेदीने ॥ १९ ॥ विस्वा
मित्रसवैया ॥ केसवयेमिथिलाधि
पहेजगमेजिनिकीरतवेलवरी

है॥ दांनकृपांनविधांननिसौंसिग
रिवसुधाजिनिह्रायलईहै॥ अंग
छैसातकच्याउकैसोभचलीनहूंलो
कनिसिध्धिभरीहै॥ वेदचरीअ
हराजसिरीपरिपूरनतासवजोग
भरीहै॥ २०॥ जनक॥ सोरठा॥ जि
निअपनौतनस्वर्न॥ मेलितपोम
पअगिनिमेकीनौउत्तमवर्न॥ तेईवि
स्वामित्रऐ॥ २१॥ वि स्वामित्रमोदक॥
जनराजवंत॥ जगजोतिवंत॥ तिनके
उदोत॥ विहिभांतिहोत॥ २२॥ सवैया
सवछत्रियआदिदेकहूंछरीनलगै
विजनादिकुवातउगे॥ घटैनबढैनि
सवासरकेसवलोकनिकेतमतेजभ
गे॥ भवभूषनभूषितहोतुनहीमदमत्त
गजादिमषीनलगे॥ जलहूथलहूंपरि
पूरनश्रीनिमकेकुलअहुनजोतिजगे॥ २२

॥जनक॥नारक॥यहकीरतियोरन
ऐसनसोहै॥सबदेवअदेवनिकोमनु
मोहै॥हमकोवपुराम्रुनिजेरिषिराई॥
सवग्रामछसातककोठकुराई॥२४
॥विस्वामित्रसवैया॥आपनेआपने
ठौरनतौभुवपालसबैभुवपालैस
दाई॥केवलनामहीकेभुवपालक
हावतहेभुवपालीनजाई॥भूपनि
कीतुम्हईधरीदेहिविदेहनिमेक
लकीरतिगाई॥केसवभूषनकोभ
योभूषनभूतलनैतनपाउपजाई॥
२५॥जनक॥दोहा॥इहिविधिकीचि
तचातुरीतिनकोकहाअकथ्यलो
कनिकीरचनारुचिररचिवेकोजु
समथ्य॥२६॥सवैया॥लोकनकीर
चनाकहचित्तजहीपरिपूरनवुधि
विचारी॥केसवदासनहीस

रा॰
२३

वमुनिक्रुकासप्रकसितभारी॥सुद्रसला
कसमानलसोअतिरोषमहीइहगदोह
तिहारी॥होतभएनवसुधाधराजा
वकसुभसुधाराधाई॥२७॥दोहा
केसवविस्वामित्रकीरोषमईद्रुगजा
न॥संध्याजोतैलोकमेकिहिनउपा
सीत्रांन॥२८॥जनकनरक॥येसुतके
नकेसोभहिश्राजे॥सुंदरस्यामलगोर
विराजे॥जांनतुहोजिएसेदरदोउ॥के
कमलाविमलापतिकोउ॥२६॥वि
स्वामित्र॥सुंदरस्यामसुरामहिजानो॥
गोरसुलक्षमननामवषानो॥आ
सिषदेहइन्हेसवकोउ॥सूरजकेकुल
मंडनदोउ॥३०॥दोहा॥नृपमनिदस
रथनृपतकेप्रगटेच्यारकुमार॥राम
भरथलछिमनललितअरुसत्रुघु
न्नउदार॥३१॥दंडक॥दांननकेसी

२३

लेपरदांनकेप्रहारीदिनदांनवातत्र तिदेषिएसुभाइके॥दीपहूकेदीपञ्च वनीपतिकेन्नवनीपप्रयुसमूकेसोदा मदामदुजगाइके॥ आनंदकेकंदसु रपालकेसवालकेएपरदारप्रियसाधु मनोवचकाइके॥ देहधारीधर्मसोवि देहिराजजूसेराजराजनकुमारत्रै मेदसरथराइके॥ ३१॥ सोरठा॥ जब तेवैठेराज॥ राजादसरथभूमिमे सु षसोएसुरराज॥ तादिनतेंतिहिलोक मे॥ ३३॥ स्वागता॥ एकराजदसरथ जनेजू॥ रामचंद्रभुवचंद्रवनेजू॥ त्यौविदेहतुमहूंअसमीता॥ ज्यौचकोरतनयासुभगीता॥ ३४॥ विस्वामित्र॥ तारक॥ रघुनाथसरासनचाहतदे ष्यौ॥ अतिदुष्करराजसमाजनिले षौ॥ जनक॥ रिषिहैवहमंदिरमां

झमगाऊ॥ गहिलावनिकोजनुंप्थ वुलाऊ॥३५॥ विस्वामित्रतोटक॥ अ वलोगकहाकरिवोअपार॥ रिषिराज कहीयहवारवार॥ इनराजकुमारन देहुजांन॥ सवजांनतुहैवलके विधां न ३६॥ जनकदंडक॥ वजेतेकठोरके लासतेविसालकालदंडतेकरालस वकालकालगावही॥ केसवत्रैलोक केविलोकहारेदेवसवछोडिचंद्रचू डएककीरकोचढावही॥ पनगप्रच उपतिप्रभुसीपनिचपीनपर्वतारि पर्वतप्रमानमानपावहींविनाइ कअनगहेपेआवेनपिनाकुताहि कोमलकलपानरामकैसैल्याव ही॥ ३७॥ विस्वामित्र॥ दोहा॥ रामह तौमारीचुजिहअस्तारिकासुवा हु॥ लक्षमनकोयहधनषुदेतुम

पिनाककोजाइ ॥३८॥ जनकत्रभंग ॥
सिगरेनरनाइकअसुरविनाइकरक्ष
सपतिहियहारगए ॥ काहूनउठायो
थलुनछुडायोटस्योनटारोभीतभ
ए ॥ सोनिराजकुमारनिअतिसुकमा
रनिलेआएरिषपेजकेरे ॥ व्रतभंग
हमारोभएतुम्हारेरिषितपतेजन
जानिपरे ॥३९॥ विस्वामित्र ॥ नाम
ह ॥ सुनिरामचंद्रकुमार ॥ धनुआन
योरिहिवार ॥ पुनिवेगिताहिचढा
उ जसुलोकलोकपठाउ ॥४०॥ ज
नक ॥ दोहा ॥ रिषहिदेषिहरषेहि
योरामदेषकुम्हिलाइ ॥ धनषुदे
षिरपेमहांचिंताचित्तउलाइ ॥४१
॥ प्रतहारिनी ॥ स्वागता ॥ रामचंद्र
कटसोंपटबाध्यो ॥ लीलाहीहरि
कोधनुसाध्यो ॥ नेकुताहिकरप

ल्लवसोछै॥ फूलमूलसमदूकक
चोहे॥ ४२ सवैया॥ उन्निमणाथजेवे
धनुश्रीरघुनाथजूहाथकेलीनो॥
निगुनैतेगनवृंतभयोसुषकेसवसं
तग्रनंतनदीनो॥ अच्योजहीतव
हीकियोसंजुततिक्षकटाक्षनराचु
नवीनो॥ राजकुमारिनिहारिसिनेह
सोसंभुकोसाचोसरासनुकीनो॥ ४३॥
सतानंद उक॥ प्रथमटंकारझुकिआ
रसंसारमदददंडकोटंडरह्योमंडिनव
षंडको॥ चालिअचलाअचलचा
लिदिगपालवलपालरिषिराज
केवचनपरचंडको॥ सोधुदेईसवो
धुजगदीसको क्रोधुउपजाइ भगु
नंदवलिवंडको॥ वाधिवरस्वर्गको
साधुअपवर्गकोधनभंगकोसव्द
गपभेदिव्रह्मांडको॥ ४४॥ जनकदो

हा॥ सतानंद आनंदमतितुमजुहृते
उनिसाथ॥ वाजेनकोहजबधनसु
नैचौहोरघुनाथ॥ ४५॥ सतानंदतो
मर॥ सुनराजराज विदेह॥ जवहोगये
उहिग्रह॥ कछुमेनजानीवात॥ कव
टोरियोधनुतात॥ ४५॥ प्रतहारिनीदो
हा॥ सीताजरघुनाथकोअमलक
मलकीमाल॥ पहिराईजनुसवनि
कीहृदयावलिभुवपाल॥ ४६॥ चि
त्रपट॥ सीयजहींपहिराई॥ रामहि
मालसुहाई॥ दुंदुभीदेववजाए॥ फू
लतहीवरषाए॥ ४७॥ इतिश्रीमत्सक
ललोकलोचनचकोरचिंतामनि।
श्रीरामचंद्रचंद्रकायाधनषुभंगव
र्ननंनामपंचमप्रकास॥ ५॥ दोहा॥
छटयेमैयहवरनवोहहे अतिउन
साह॥ नरनारीआनंदअतिसीता

समदो

रंभविवाह ॥ १ ॥ दोधक ॥ विनतीरिषि
राजकी चित्त धरी ॥ वहु भेय नके स
वमाह करी ॥ सब वोलहु वेगवरात
सबै ॥ विटियां सुष पाइ सबै ॥ २ ॥ दो
हा ॥ पठईतवहीलग्गुनलिषस्रव
धपुरी सुववान ॥ राजादसरथ सुनत
सजि चाले चली वरात ॥ ३ ॥ मोहन
आए दसरथ्थ वरात सजे ॥ दिगपाल
गयंदन देषि लजे ॥ चामी दल दल्ल
ह चार वने ॥ मोहे सुर ओरन को नु गने
४ ॥ तारक ॥ वनि चारि वरात चहुं दि
सि आई ॥ नृपचारि विमं च जगि वो न
पठाई ॥ जनु सागर को सरिता पग धा
रे ॥ तिन के मिलवे कहवाहु पसारे ॥
५ ॥ मरहटा ॥ दसरथ्थ सघाती सक
ल वराती वनि वनि मंडफ माझ
गए ॥ आकास विलासी प्रभा प्रका

सीजललजगुछ्छजनुनषतनऐ॥ चत्र
तिसुंदरनारीसवसुषकारीमंगलगा
रीदैनलगी॥ वाजेवहुवाजेजनुघन
गाजेजहातहांसवसोभजगी॥ दोहा
रामचंद्रसीतावनेसोहतिहैतिह
ठोर॥ सुषवनेमयमनिमयषचित
सुमसुंदरसिरमोर॥ ७॥ छपय॥ वेठे
मागधसूतविविधिविधीधरवार
नकेसवदोसप्रसिध्यसिध्यसव
असुभनिवारन॥ भरद्वाजजा वा
लअत्रगोतमकस्पवमुनि॥ विस्वा
मित्रपवित्रचित्रमतिवांमदेवप
नि॥ सवजगतप्रतिष्ठितनिष्टम
तितहवसिष्टपूजतकलस॥ सता
नंदमिलउच्चरतेसाषोचारसवेस
रस॥ प॥ अनकूल॥ पावकपूजेसम
घसुधारी॥ आहुतिदीनीसवसष

कारी॥ देतवकन्यावहुधनुदीनो॥
भावरपारिजिगतजसुलीनो॥९॥
स्वागता॥ राजपुत्रिकनिसौंछवि
छाए॥ राजराजसवडेरहिआए॥ हो
रवीरगजवोलुटाये॥ सुंदरीनवहु
मंगलगाए॥१०॥ सोरठा॥ वासर
चौथजाम॥ सतानंदआगेदिये॥
दसरथनपकेधाम॥ आएसकल
विदेहवनि॥११॥ भुजंगप्रयात॥ क
हूंसोभनेदुंभीदीहवाजे॥ कहूंभी
मभंकारकरनालसाजे॥ कहूंसुंद
रीवेनवीनावजावे॥ कहूंकिन्नरी
किन्नरीलैसुगावे॥१२॥ कहूंनत्त
कारीनचैसोभसाजे॥ कहूंभांड
वोलैवोलैकहूमल्लगाजे॥ कहूं
भाटभासौकरैमानुपावे॥ कहूंला
लिनीवेइनीतगावे॥ कहूंवेलभे

साभिरैभीमभार॥ कहूंत्र्यैंनत्र्यैंनी
नकेहेतकारे॥ कहूंवाकेवाकेकहूं
मेषमरे॥ कहूंमत्तदंतीलरैलोह
पूरे॥२४॥दोहो॥ आगेह्वैदसरथ
लियेभूपतिआवतदेष॥राजराज
मिलवेउठिपोव्रलाव्रलरिषलेष॥
२५॥मनानंदसोभन॥ सुनहुमरहू
जवसिष्टजा॥ बालिविस्वामित्र
सेवेहातुमवलरिषसिंसारमुह्न
चरित्रकीनीजुतुमपावसकेक
हिएकत्र्यंमनजाइ॥स्वादुकहवे
कोसमर्थुनगंगज्योंगहषाइ॥२६॥
सुषदे॥ ज्योंअतिप्यासोमगमेपा
वेगंगाजलु॥ प्यासनएकवुझा
इवुझैतेतापवलु॥ त्योंतुमतेह
मकोनभयोअवएकुसुषु॥ पूज
मनकेकामजुदेष्योरामसुष॥२७॥

रा.
२८

जनकसवैया ॥ सिद्धिसमाधिधरै
अजहूनकहूजगजोगिनदेषनपा
ई ॥ रुद्रकेचित्तसमुद्रवसेतिनढूंढ़ि
हूपैवरनीनहिजाई ॥ रंगुनरूपनरे
षविसेषनआदिनअंतसुवेदसु
गाई ॥ केसवगाधिकेनंदहमैयह
जोतिसुमूरतिवंतदिषाई ॥ १८ ॥ ता
रक ॥ जिनकेपुरषाभुवगंगहिल्या
ए ॥ नगरीसवस्वर्गसदेहसिधारे
जिनकेसुतपाहनतेत्रियकीनी
हरकेधनभंगभमेपुरतीनी ॥ १९ ॥
जिनआपुअनेगअदेवसघारे
सवकालपुरीकरषवारे ॥ जिनि
कीमहिमामहिअंतुनपायो ॥ ह
मकोवपुराजसुवेदनगायो ॥ वि
नतीकजेजनुजोजियलेषो ॥ दु
षदेषोज्योकालिन्दोआजुहिदे

रं द

षो॥ यहजांनहियेंदिठईमुषभा
षी हमहैचरनोदिककेअभिला
षी॥२१॥तामरस॥वशिषिराजवि
नोकरलीनो॥सुनिसवकोकुर
नामनुभीनो॥दसरथराजपहै।
जियजानी॥पहवहएकभईराज
धानी॥२२॥दोहा॥हमकोतुमसे
नपनकीदासीदुल्लभराज पुनि
तुमदीनीकन्नकाचभुवनकोसि
रताज॥२३॥भरद्वाज॥तामरस॥
सुषदुषआदिसवेतुमजीते॥सु
रनरकोवपुरावलरीते॥कुलमह
होइवरोलघुकोई॥प्रतिपुरषांन
वडोसुवडोई॥२४॥वसिष्टसवैया॥
एकतषीइहिलोकविलोकिये
हैउहिलोकनिरपणधारी॥एक
इहिंदुषदेषतकेसवहोतउहां

ए०
२६

सुरलोकविहारी॥ एकहिहांकंउहं
अतिदीनसुदेतदुहूदिसिकेजन
गारी॥ एकहिभांतसदाअवलोक
निहैप्रभुतामिथलेसनिहारी॥ २५
जावालसवैप्र॥ जोमननिमैं अति
जोतिहंतीअरु ओरकहूएविते
छविछारी॥ चंदहिवंदततेतसवके
सवसंभुतेवंदकनाअतिपारी॥ भा
गीरथीहृतियेमुवपावनतेअति पावन
पावनताई॥ त्योनिमिवंसुवडोरी
हतेभईसीयसजोगवडीयेवउ
री॥ २६॥ विस्वामित्रमालती॥ गु
नगनमनिमाला॥ चित्तचातुंज
माला॥ जनकसुषदगीता॥ पुत्रि

ता

कापाईसीता॥ २७॥ अखिलभुवन
भर्त्ता॥ ब्रम्हरुद्रादिकर्त्ता॥ थिरच
रअभिरामी॥ कियजामातनामी॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२५ दोहा ॥ पूजिराजरिषिवृंम्हारिषि
दुंदुभीदीहवजाइ ॥ जनककनकमं
दिरगएराउ(?)समेतसुषपाइ ॥ २६ ॥ स
मानिक ॥ आसमुद्रकेछितीसचौ
रदेवकोगने ॥ राजभोनभोजकोस
वेजनेनगएवने ॥ भांतिभांतिअंन
पांनविंजनादिजेवहींदेतिगारिना
रिपारिभारिभूरिभेवही ॥ ३० ॥ हरिगी
तकागीत ॥ अवगारिनुमकहेदहि
वकहकेहिमुनइंदलहराजमजू ॥ तु
ववापुत्रिपदारसुनिजनुकरी
कहतुकवांमजू ॥ कोगनेजितने
पुषकीनेकहतइंसराज ॥ मुनि
कुवरमनुदेवरनताकेकहोसव
मोहराज ॥ ३१ ॥ वहुरूपसौनवजा
वनाअतिरत्नमयवपुमानियै ॥
पुनिवस्त्ररत्नाकरवरन्योतनचि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्तचंचलजानियो॥ सुभसेषफनिम
निमालपलिकापरतिपढतिप्रबंध
जू॥ कासीसपछिमपाइपूरवगात
सहजसुगंधजू॥ ३१॥ वहहाहहदि
हिरनाछदेयतदेषसुदरदेहिसो॥
वलवीरजगपवराहतिनलहोछीन
सहजसनेहसो॥ द्धगईविहवल्ल
भ्रगभ्रयुकीसजेसकलसिंगारज॥
पुनिकछुकदिनवसभईतिनके
दिप्रसवससाजू॥ ३३॥ वहगयोप्र
भुपालोककीनोहितनकासिवना
थजू॥ तिहभांतिभांतनभोगईभ
मिपलुनछांडेसाथजू॥ वहच्य
सुश्रीनरसिघमासोलईप्रव
लछिडाइकै॥ लैदईहरहरचंदरा
जहिवहुत्तजिपसुषपाइकै॥ ३४
हरिचंदविस्वामित्रकोदईदृष्ट

तनमनमानिकै॥ तिहिवरोवलिव
लवडवाहीविप्रतपसीजानिकै॥ व
लिवांधछलवलैंडीवावनदडीडि
द्रहिआनिकै॥ इंद्रतजपतिकस्यो
अर्जुनसहसकरकोजानिकै॥ ३५॥
तवतासुमदछवछकोअर्जुनह।
त्योरिषिजमदग्निजू॥ परसरामत
वसकुलजान्योप्रवलवलकोअ्रा
ग्निजू॥ परसरामतवसकुलजाय्यो
तिहवैरतवतिनिसकलक्षत्रिय
मारिमारिविनाशिकै॥ इकईसवे
रजुदईविप्रनरुधिरजलअन्हवा
इकै॥ ३६॥ वहुरावैरपितुकरियप
तिनीतजिपविप्रनिष्ठकिकै॥ अर
कहनहेअवरहेताकहराउनादि
कठकिकैपहिलाजमरियनुता
हितुमसोभयोनातोनाथजू॥ अ्र

वयोरसुषनिरषेनजैसोन्मोंगपिये
रघुनाथजू॥३७॥सोरठा॥गातभयेप
सवभूप॥वनिवनिमेंडिफसैंगये
जहंहोंएवहुरूप॥सवहींविधिसे
साभिजे॥३८॥समानका॥ऐचीवि
चित्रवासुसीनिपंभएजिकाभली॥
जहांतहांविछांवनेघनेवनेथली
थली॥वितानसेतस्यामपीतला
लनीलकोएग॥मनोउडुंदिसान
केसमांनविविसेजग॥३९॥पधि
टिका॥गजमोतिनकीअवलीअ
पारकलसनउपरउरमतिसुठर॥
प्रीतिसुचित्रनुहुचितहचिरठाइ
जहंतहंअकासंगगाउदार॥४०॥
गजदंतनिकीअवलीसुवेस॥त
हकुसमराजएजातिसुदेस॥सुभ
नपकुमारिकांतिगण॥जनुदे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनकेपुष्पकविमां॥४१॥नामर
स॥इतउतसुदासोभनडोलै॥अर्थ
अनेकनिबोलनिबोलै॥सुषमुष
मंउतिचित्तनमोहे॥मनहुअन
ककलानिधिसोहै॥४२॥भ्रकुटि
प्रकासविलासनिदेष॥धनुषम
नोजमनोमयलेष॥चर्चितहांसु
चंद्रिकनिजानो॥सुषमुषवासुनि
वासितमानो॥४३॥दोहा॥अम
लकपोलेआरसी॥बाहेचंपकमा
र॥अवलोकनेविलोकिएमृग
मदमयघनसार॥४४॥गतिकोभा
रुमहावरोअंगअंसुकेभार॥केस
वनषसिषसोभिजेसोभाहीअं
गार॥४५॥सवैया॥वैठीइजरेप
लिकापरएामसियासवकोमन
मोहे॥जोतिसमूहरहेमठिकेसु

एभूलि रहे वपु एन रके है ॥ केसव
तीनहु लोकनि के अवलोक के जथा
उपमा के हटी है ॥ सोभन साज मंडि
लमाह मनौ कमला कमलापति
सोहै ॥ दोहा ॥ गंगाजल की पाग सि
र सोहत श्री रघुनाथ ॥ सिव सिर गंगा
जल किधौं चंद्र चंद्रिका साथ ॥ ४७ ॥
तामरस ॥ कछु भृकुटि कुटिल सु
वेस ॥ अति अमिल सुमिल सुदेस
विधि लिषि सोधि सुतंत्र ॥ जनु ज
पा जय के मंत्र ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ जद
पि भृकुटि रघुनाथ की कुटिल दे
षि जतु जोति ॥ तदपि सुरासुर नरन
की निरषि सुद्ध गति होति ॥ ४९ ॥ श्र
वन मकर कुंडल लसत मुष सुष
मा एकत्र ॥ ससि समीप सोभित
मनौ श्रवन निमकर नक्षत्र ॥ ५० ॥

॥पधिटिका॥ अतिवदनसोभसरसी सुंएा॥ सुभकमलनयननासानएा जगजुवतिचितविभ्रमिविलास॥ ते श्रीभमाभमतूसनूपआस॥ ५१॥ निसपालिका॥ सोभितजतुदंतस्चिसु भउस्त्रानिसे॥ सत्म अनूनूपजनन पकुचषानिपे॥ औठनुचिरषसवि सेषसहहेपे॥ सोघिजनुईसमुभ लक्षनसवैदय॥ ५२॥ दोहा॥ श्रीवा श्रीरघुनाथकीलसतिकंवुकेव ष॥ साधुमनोवचकाइकीमानो लिषीत्रेरेष॥ ५३॥ सुंदरी॥ सोभ नदीरघवाहुविराजत॥ देवसिहा तअदेवतिलाजनहेहितकाति कीधुजमानो॥ वैरिनिकोअहिरा जवषानो॥ ५४॥ पोउमेभगुल्ना नवषानों॥ श्रीकरकोसरसीहह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मानौ॥ सोभितहैउरमैमनियौज
नु॥ जांनुकीकेअनुराग॥ ऐसौमनु॥ ५
५॥ दोहा॥ सोहतिपनटपरमरुदे
षतितिनकौभाग॥ आइगयौउप
मनौअंतरकौअनुराग॥ ५६॥ सुंद
री॥ मोतिनकीदुलरीदेस॥ जनुवे
दनकेआषरसुवेस॥ गजमोतिन
कीमालाविसाल॥ मनमानहुसं
तनिकोसाल॥ ५७॥ विसेषक॥ ।
स्यांमदुऔषगलालललसेंदुतिपै
तलकी॥ मानहुसेवतिजोगिर
जमुनाजलकी॥ पाटजरीअतस्वे
तसुहीरनकीअवली॥ देवनदीक
नसेवतिमांनहुभांतिभली॥ ५८॥
॥ दोहा॥ कयौवरनौरघुनायकु
वकेसववुद्धिनुसार॥ जाकीसो
भासोभजेसोभासवकेसार॥ ५९॥

सवैया॥ कोहै दमयंती दमती रति राति दिन होहि न छबीली छबिछीन जो सिगारिये॥ केसव लजात जलजात वेद वोपे जातजात रूप बापुरे विरूप से निहारिए॥ मदन निरूप भनि रूपम निरूपभ सो चंदु बहु रूप अनरूपक विचारिये॥ सीताजू के रूप पर देवता कुरूप को है रूप ही के रूप कतो वारि वारि ए॥ ८०॥ गीतका॥ जह सोभिजे सषि सुंदरी जनु दामिनी दुति मंडिकै॥ घनस्याम को जनु सेवही जड़ मेघ निछंड कै॥ इक अंग चर्चित हैं चंदन चंद्रिका तजि चंद को॥ जनु राहु के भय सेवही रघुनाथ आनंदकंद को॥ ८१॥ मुष ए कहै न नलोलल लोचन लोक लोचन को हरे॥ जनु जानुकी सगसो

हरि

वांध

चा

ए॰
३८

भिजैसुमलाजदेहनिकौधैरे॥ तहऐ
कफूलनिकेविभूषनएकमोतिन
केकियै॥ जनुक्षीरसागरदेवतातन
श्रीकेश्रीटनिक्षियै॥ ८५॥ सोरठा॥ प
हिरेवसनसुरंग॥ पावकजुतस्वा
हामनो॥ सहजसुगंधितअंग॥ मान
हुंदेवीमलयकी॥ ८६॥ चामर॥ मत्त
दंतराजसाजिवाजराजराजिकै॥ हे
महाहेमसुक्तिचीरवाहसाजिकै॥
वेषवांहनीअसेषवस्तुसोधिसो
धिपो॥ दाइजोविदेहराजभांतिभां
तिकोदियो॥ ८८॥ वस्त्रभोनस्योंवि
तानआसनेविछावने॥ अस्त्रस
स्त्रअंगत्रानभाजनादिकोंगने॥ दा
सिदासवासिवासरोमपाटकोकि
यो॥ दाइजोविदेहराजभांतिभां
तकोदियो॥ ८९॥ दोहा॥ जराकराजपहिं,
सौ

राइयैराजादसरथसाथ॥ क्षत्रचौराजवाजदे ग्रामसमुद्रछित्तनाथ॥६६॥निसपालिका॥दानदियराइदसरथ्यसुषपाइके॥ वोलिरिषिंद्रन्हरिषिंजनिवुलाइके॥ नोषिजाचकसकलदादुलमपूरसे॥मेघजिमिवर्षिराराजपयपूरसे॥६७॥

॥इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांसीताजूविवाह्विवर्णनंनामषष्टमप्रकास॥६॥दोहा॥ यहसातेंप्रकासमेकेसवदाससुजांन॥परसरामश्रीरामसोंकरहेवादवषांन॥१॥विस्वामित्रविदाभयेजनकफिरेपहुंचाइ॥ मिलेआगिलीफौजकोंपरसरामअकुलाइ॥२॥चचरी॥ मत्तदंतिअमत्तह्वै

ज

ष

रा॰
३५

गएदेषिदेषनगर्ज्जही॥ठौरठौरसुद
सकेसवंदुदभीननहीवज्जही॥का
टिकैतनत्रांनएकैंनाविषनसज्जही॥
नै आरे आहिष्यारसूनजीवलेलेभज्जही॥
३॥दोहा॥वांमदेवरिषिसोंकह्यौपर
सरामनधीर॥महांदेवरिषिकौधनु
षु[illegible]किहिटोर्‍योबलवीर॥४॥वांम
देव॥महांदेवकौधनषुसुनपरसरं
म मरिषराज॥तोर्‍योरांयहकहतहौंस
मझ्यौरावनराज॥५॥परसरांम॥अति
कोमलनपसुतनिकीग्रीवादलनी
अपार॥अवकठोरदसकंठकेकांद
डुकेठकुठार॥६॥सवैया॥बांधिकैवां
धौजुवालवलीपलिनापरलेसु
तकौहितगौर॥हैहयराजलियौग
हिकेसवच्छापौहोछुद्रजुछिद्रनि
उठै॥वाहिरकाढदियोवलदासि

नआपिसोजुपतालकीहोटे॥तो
कोकुठारवडाइकहाकहतोदसकं
ठकेकंठनिकाठे॥७॥सोरठा॥जद्दप
हेअतिदीन॥मोहितथापिसुमा
रैन॥गुरुअपराधहिलीनकेसवके
सेठंपैप॥८॥चंद्रकला॥वरवानसि
षीनअसेषसमुद्रहिसोषिसषासु
षहीनरहीं॥पुनिलंकहिओटिके
लंकिनकेफिरपंककनंकहिकीभ
रिहो॥भूजिकेरापसषाषससेदु
षदोरघदेवनकेहरिहो॥सितकं
ठकेकंठनिकोकठलादसकंठकेकं
ठनिकोकरिहो॥९॥संजुता॥परसरां
म॥यहकोनकोद्दषिपे॥वांमदेवा
यहरांमसोप्रभुलेपिये॥परसराम
कहिकोतुरांमनजानियें॥वांमदेव
सरनारिकाजिहितानिये॥१०॥पर

दल

सरांम॥त्रभंगी॥तारिकामं॥धारीदे
पनविचारीताहवउाईकाहहेने॥वां
मदेव॥मारीचुहतेसगप्रवलसकल
षलन्यरसुवाहुकाहंनगने॥कर
कृतरषवारीगुरसुषकारीगौतम
कीत्रियसुधिकरी॥जिनरघुकुलं
मंडोहरधनषंडेसिसासवयवामा
अवरी॥११॥परसरांम॥दोहा॥ह
रहंहोतोदंउहै धनषुचढावनसक
स॥देषहुमहिमाकालकीकीनो
नासिसनष॥१२॥सवैया॥वोरौ
सवैरघुवंसकुठारकीधारमेवार
नवाजसरथ्यहि॥वांनकीवाउ
उाइकेलक्ष्मनलक्षिकरौअरिहां
समरथ्यहि॥रांमहिवांमसमेत
पठैवनुकोपकेभारनिभूजेभरथ्य
हि॥जोधनुहाथलियोरघुनाथ

तो अवजु अनाथ करो दसरथ्थ हि
ए ॥ सोरठा ॥ रांमदेषरघुनाथ रथते
उतरे वेगदै ॥ गहे भरथको हाथ ॥ आ
वत रांम विलोकि कै ॥ २४ ॥ दंडक ॥ अ
मलसजलघनस्यांमवपुकेसोदास
चंदहूतेचारुमुषसुषमाकोवासुहै ॥
कोमलकमलदलदीरघविलोचन
नि ॥ सोदरसमानरूपन्यारोन्यारोना
मुहै ॥ बालकविलोकिजतुपूरनपुरि
षगुनमेरोमनुमोहिजतुएसोएक
कुजामुहै ॥ वेरमांनिवांमदेवको
धनषुत्पातसोइनिजांनतुहोंवीस
विसोरांमवेषकामुहै ॥ २५ ॥ भरथ
गीतका ॥ कुसमुद्रिकासमधेश्रुवा
कुसकोकमंडलकोलिये ॥ कटि
मूलसर्षननतर्कसीभगुलातसी
दरसेहिये ॥ धनुवांनुतिक्ष्कुठार

रा॰
३८

केसवमेषलामृगचर्मसो॥रघुवीर
कोपहदेषिरसवीरसानुकधमेसो
॥१६॥श्रीरामनराज॥प्रचंडहैहैया
दिराजदंआमांनमांनिये॥अषंडकु
तिलयभूमिदोधमानिजांनिये॥द
वदेवजेअभीतरस्समांनलेविसे
अमेयतेजगर्भजुत्रभार्गवेसदेवि
षे॥१७॥तोमरा॥सहभाग्यलछिम
नराम॥वहकिसेअनिषनाम॥भृ
गुनंदआसिषदीन॥रनहोहुअज
यप्रवीन॥१८॥पारसराम सुनिराम
चंद्रकुमार॥ममवचनक्रोतिउदा
र॥श्रीराम॥भृगुवंसेअवतंस॥म
नवृत्तिहैकिहिअंस॥१९॥परसरा
ममंदिर॥तोसिरासनसंकरकोसु
भसीसखपंचवामोझवरी॥नातेवसो
अभिमांनुमहामनिमेरियोनेकु

के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नसंककरी॥ सोअपराधअगाधिपरेअ
वकेयोंसुधरेतुमहीधोकहें॥ बांकु
टेटेउकुटाराहिकेसबआपनेधा
मेकोपथुगहे॥ २०॥ अथरामकुंडरी
या॥ टूटहिटूटनहारनेरुवानहिदी
जतदोसु॥ सोअवहरकेधनुषको
हमसोकोजननेरसु॥ हमसोकी
जनेरसुकालगनिजानिनजा
ई॥ होनहारहोरहेमिटेमेटीनमि
टाई॥ होनहारहोरहेमोहमद
सबकोछूटे॥ होहितिनकाब
जवजतिनुकाहकटूटे॥ २१॥ प
रसरामसवैया॥ केसवहेहयए
जकोमासुहलाहलकोरनिषा
इलियेरे॥ तोलगिमदमहीपन
केघननघोरपियोनसिराएपैहियरे
रे॥ मैरैकहीकरिकोपकरालजो

चाहत है वह काल जियो ए ॥ तौ लौ
नहीं सुष जौ लौ हूं नेर षुवंस को श्रो
न सुधान पियौ ए ॥ २२ ॥ मध्य त्रभंगी
बोलत के सम गुप तिसु निजे सो कहि
जे तन मन वनि आवै ॥ आदि वडु है
वडपन एषो जैयों सिंग है जगजन सु
षपावै ॥ चंदन हीं को आनि नन षर के
आगि उठै यह सु निस बु की जे ॥ हे ह
यमान नपति सषा ए यह जस लेकि
न जुग जीजे ॥ २३ ॥ पद्मरामनराज ॥
म ली कही भिए ष्यों ते उठाइ आगि
अंग ते ॥ चठाउचौंपि चापु आपु वां
न लै निषंगते ॥ प्रभाव आप नौ दि
षाउवाल भाउ छांडि के ॥ रिझाउरा
जपुत्र मोहि एम लै छिडाइके ॥ २४ ॥
॥ सोरठा ॥ लिय चापु जव हाथ ॥ ती
न हु भैय न ए सं के ॥ वजे न व षुना

य॥ तुमबालककजानोकहा॥ २५॥ श्री

रामदोहा॥ भगवंत्तनिसेनहिजी

तिये कबहूंन कीजे सक्ति॥ जीति ए

एक हिवानतेकीनेकेवलभक्ति॥ २

६॥ गीतिका॥ जबहनौहेहयराजइ

नबिनक्षत्रक्षितमंडलकरे॥ गिरिवि

धषन्मुषजीतितारकनंदकोंजब

ज्यों हरे॥ सुनमैं नजायो एमसोय

हकैहौपवेतनंदनी॥ बहहैतुकाच्चि

यधनधरनीमेभईजगबंदनी॥ २

७॥ परसरामनोत्तर॥ सुनिएमसी

लसमुद्र॥ तुवबंधहेऋतिक्षुद्र म

मबाइवालककोप॥ अबकेंमाचा

हतलोप॥ २५॥ सत्रघनदोधक॥ हो

भयुनंदवलीजगमाही॥ एमविर

कजेंघराजाहीं॥ होतुमसोफिरि

जुद्धहिमांडो॥ छत्रियबंसकोवेहलेै

रा.चं.
३६

कोउ ॥ २९ ॥ तोटक ॥ यह बात सुनीभ
गुनायज जेवे ॥ कहो एं महि लेष रजाऊ
अबे ॥ तुन तेजग जीव न जो वचि हो ॥ तन
हो तुम सो फिर के रचि हे ॥ ३० ॥ दोहा
निज अपराधी केय है मो गुरु अपरा
धी होइ ॥ तो ने क हि न कुल ग अब
एम हि सो रन माउ ॥ ३१ ॥ सवैया
भूतल के सब भूपनि को मिर मोज
न तो व कु भांति किये हरी ॥ मोह से
ता रिके निर न में डुप सावरि यां
न सिर ये हि यो हरी ॥ बीर व्यडाव
म ह के सब सो पल मे हुहि पान लि
यो हरी ॥ एम तुम्हा उ ही कं ठ को को
नित पानी को चो द कु ठ र पि यो हरी
॥ ३२ ॥ लछमन तोटक ॥ जिन को
जु अनुग्रह वृद्धि करे ॥ तिन को क
से निग्रह चित्त धरे ॥ जिन के जग

अछतसोसधरे॥ तिनके ननसछ
तकोनकरे॥ ३३॥ श्रीएमसवैया॥
कंछकुटापपै अवहारतकिफूल
किसाकु असोकसमूएं॥ केचिन
साीचंरकिचिताततनुचंदनचिन
केपावकपूरे॥ लोकमैलोकवडे
अपलोकुकिकेसवदासजुहोउ
सुहोऊ॥ विप्रनकेकुलकोभ्रगुनं
दनसूरनसूरजकेकुलकोऊ॥ ३
४॥ परसरामविसेषक॥ हाथ
धरेहथियारसंबेतुमसोभत
हो॥ मारनहारहिंदेषकहाजिय
कोभनहो॥ छत्रिपकेकुलहेको
ऊबेननदीनचंवौ॥ कोरिकोउप
चारनेकेसहजेमीचुवचे॥ ३५॥ ल
छमन॥ क्षत्रिपदेकगुलोगनके
प्रनपालकरे॥ भूलिहूतोतिनके

गुनयैगुनजीनधरे॥ त्यौंहमपैगुर
दोषुनहोइवैयकरती॥ त्यौंतुमहो
आपनीजननिनीसुषपाइहती॥ ३६
॥परसराम॥ तनछिमनकेपुरिखांनि
किपौपुरिषारघसोनकछ्योपर
री॥ वेषुवनाइ किंयौंवनितांनिको
देषनेकसबहोंहारी॥ क्रूरकुठार
निहारतजेफलताकोजुदेहजुहिये
जारी॥ आजुनेकेसबताकोमहाय
कुक्षत्रिनकोजुदयाकारी॥ ३७॥
गीतका॥ तवयेकविंसनिवारमेवि
नछत्रिकीप्रथिवीरची॥ वहुकुंडिओ
नितसोभरेपितनपेमादिकियास
ची॥ उवोजुक्षत्रियछुद्रभूतलसो
धिसोधिसघांरहो॥ अबवालन्है
द्वनज्वानकछोडोधमेनिर्दयपाल
हो॥ ३८॥ श्रीरामदोहा॥ भगकु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लकमलदिनेसतुनिजोतिसकलसंसा
र॥ केयोचलिहेहिनितिसुनसिरजातै
हो निजुभार॥३९॥ परसरामसोरठा॥
रामसवंधसम्हार॥ कोउतुंहोसप्रां
नहर॥ देहहुध्यानरनउर॥ हाथसमे
ननिवेगदे॥४०॥ श्रीरामपद्धिड़िका॥
सुनिसकललोकगुरजांमदग्नि॥ त
विसेषनिकीजुअग्नि॥ सविसेषकै
हिसहिहै-अबंधु॥ हरयनुंकरोजिहिंब
ड़ंबरु॥४१॥ सवैया॥ बानरमारिनि
केननत्रानउपायविचारविरंचिवे
हे॥ गोकुलब्राम्हननारिनिपुंसकके
जगदीसतुभउभरेहै॥ रामकहाक
रिहै तिनकोतुमवालकदेवअदेव
उरहै॥ गाधिकोनंदनिहारोगुरूह
मेबरिषिविवेषकियेउवोहै॥४२॥
छप्पय॥ भगनभयोहरिधनुषताल

प

तुमकौ अवसाले॥ व्याहो हि विधि
अष्टईस आसनतें चाले॥ सकल
लोक संघरहि ससमिरनें धरमोरे॥
सप्तसिंधमिलिजाइ होइ नमहीन
मभोरे॥ अनिअमलजो लिनरएम
नीकरहे कें सवबुधि जाइवर॥ मगुंव
सकुठारसंम्हार अवकौ सारासन
जुकेसर॥ ४३॥ अगनो॥ एमराम
जवकोपकेएजू॥ लोकलोकभए
भूएभयेजू॥ वांमदेवनवआपुन
आये॥ रामरांमदोऊसमुआये॥ ४
४॥ दोहा॥ महादेवकोदेषिकेदुहूंए
मसवसेष॥ कीनेंपरमप्रनांमउनि
आसिषदियेअसेष॥ ४५॥ चतुर
दी॥ भगुनंदनसुनियेमनिमेगुनि
येरघुनंदननिरदोसी॥ निजुएअ
विकारीसवसुषकारीसवहीविधि

संतोषी॥ एकेतुमदेउ अोलेको
उ ऐकैनामकहायौ॥ आयुवल
पूरोचापुसुदृरोमेततनमनसुषपा
यो॥८८॥ पद्धरिका॥ तुम अमल
अनंत अनादिदेव॥ नहिवेदवषा
नतसकलभेव॥ सबकोसमानन
हिवैरनेह॥ सबभक्तनिकाजेधर
तदेह॥८९॥ अबआपुनपेपहि
चानिविप्र॥ सबकाहु आगिलेका
जछिप्र॥ नवनारायनकोधनुषजा
न॥ प्रभुनाधरियोरघुनाथपानि
॥८५॥ तारक॥ नारायनकोधनुवानु
लियो॥ अेचोहसिदेवनिमोदहि
यो॥ श्रीरामकहेअवकाहहनो
वेलोकुकरेपोभयमानियेनो॥८८
दिगदेवदहेवडुवानवहे॥ भुअकंपु
भयोगिरराजढहे॥ आकास अम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रा.चं.
५२

विमांनछुयौ॥ हाहा सबहीयह सबध्न
यौ॥५०॥ससिवदना॥ जगगुरु जांन्यौ
त्रिभुवनमान्यौ॥ ममगतिमारे स
मपुविचारी॥५१॥दोहा॥ विप्रहीकी
ऊचौपुष्पसरगतिकौ हनन अनंग
रामदेवजूमो कियो भृगुपतिकौ ग
तिभंग॥५२॥मरहटा॥ सुरपुरगति
भांनी सासनमानी भृगुपतिकौ सु
षमानी॥ आसिषरसभीने सब व
निरीने अवरसकंठहिं मारे॥ अति
अनलभयेपरविगगनिवटीदुवि
देवनिमंगलगाये॥ सुरकुलसब
हरष्यौ पुष्पनि वरष्यौ दुंदुभि दी
ह बजाये॥५३॥दोहा॥ सोवन
सीतानाथकौ भृगुदीनीं हे नात
भृगुकुलपतिकीगतिहरीमनो
सुमिविहवात॥५४॥मधुभार॥

दसरथजगाइ ॥ संभ्रमभगाइ ॥ च
लेरामराइ ॥ दुंदुभिबजाइ ॥ ५५ ॥ स
वैया ॥ नारिकानारिसुबाहुसंघारि
कै गौतमनारिकेपातिकटारि ॥ चां
पहत्यौंहरकोहसिकैसबदेवअ
देवहतेसबहारि ॥ सीतहिब्याहअ
भीतचलेगिरिगर्भचलेभृगुनंदउ
दारि ॥ श्रीरघुनाथजूकोधनुलैरघु
नंदनश्रौधपुरीपगधारि ॥ ५६ ॥ इ
तिश्रीमत्सकललोकलोचनचको
रचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रिकायां
रामपरसरामसंवाददवननोनाम
सप्तमप्रकासः ॥ ७ ॥ दोहा ॥ यह
आठयेप्रकासमेअवधिपुरीअ
तिभीर ॥ राजादसरथब्याहकैगए
आयेरघुबीर ॥ १ ॥ सुमुषी ॥ सब
नगरीबहुसोभभये ॥ जहतहंसं

गलचारुठये॥ व्रननतहेकबएजथैने
ननमनबुद्धिविवेकसैने॥२॥मोटन
कु॥ऊंचेबढ्ढबनेपनाकलेसे॥मानो
पुरदीपनिसीद्दरसे॥ट्वीगनदेषन
आमवसे॥सोभेनिनकेसुभि-अच
लसे॥३॥दोहा॥कलभनलीनेको
टपरषेलेननसिमुचहूलो॥-अमल
कमलपुरपरमनोचक्रएकचिन
चाए॥४॥कलहंस॥पुर-आठ-आठ
दरवारविराजेस॥जुन-आठ-आठस
नावलसाजे॥रहे चारिवारिपहिका
परवाने॥घरजाहि-औरजवआठ
जांने॥५॥दोहा॥ आठोंदिसकेसी
लगुनभाषावेषविचार॥अवलो
कैनेविलोकिए केसवयेकहिवार
॥६॥कुसमविचित्रा॥-अनिसुभवी
थीजपरहे॥चंद्रकनीपीघहय

नषैरे॥ दुंदुंदिसिाजेसुबरनमये
कलनसविराजेमनिमयनये॥७॥तो
टक॥ षषषंटनकेरवराजे॥वि
चविचसंषजुआलरवाजे॥पटह
पषावजि-आवअसोहे॥मिलस
हनाइनकोंमनुमोहे॥८॥हीरा॥
सुंदरीसबसुदरग्रतिमंदिरपरयो
वनी॥मोहनगिरआंगनपरमानहु
मनमोहनी॥भूषनगनभूषनन
नभूरिचितनिचारहीं॥देषतजनु
रेषतननचांननयनकोरहीं॥९॥सु
दरी॥ संकरसैलचढीमनमोह
नि॥सिद्धिनकीनतुयाजनुसोह
नि॥पद्मिनिऊपरपद्मिनिमान
हु॥रूपनिऊपरदीपनिमानहु॥
१०॥कीरतिसीजयसंजुतसोहति
श्रीपतिमंदिरकीजनुमाहति॥ऊ

परमेरमनैनोसनरोचन॥ज्यनैलना
जनुलोचनिलोचन॥११॥विसेष
का॥यकलिपैकरदर्पनचटनचि
त्रकैं॥माहूनिहैमनुप्रानक्षचट
निचटुधरैं॥नैनविलासनक्षवर
लालनिजोनजगी॥मनहुंरागिनि
एजनिहै अनुएगरगी॥१२॥नील
निचोलनिकौपहिरैइकचित्रहैरैं॥
मेघनिकीदुतिमानहुदामिनैदै
हिधरैं॥यकनिकेतनसूक्षमसा
रिजराइजरी॥सरकएवलिसोज
नुपसिनिदैहिधरी॥१३॥तोटक
वरवैकुसमावलिरेकघनी॥सु
भसोभनिकांमकलासोवनी॥वर
षैफलफूलनिलाइककी॥ज
नुहैनरुनीरतिनाइककी॥१४॥
॥दोहा॥भौरभैपेगजपरचढैं

रघुनाथ विचार॥ तिन्हें देषिवरात
तसबेन गरनोगरि नारु॥ १५॥ तो
टक॥ नमपुंजमनो गहिमा नुलि
यो॥ गिरि अंजनऊ परसोम वियो
किधो भासनुलो महिदानुधरे॥
किधो रजनु कामुसिगारकरे॥ १६॥
॥मरहठा॥ आनंद प्रकासी सबपु
रवासी करहि ते दोरादोर॥ आरती
उतारे सर्वस वारे अपनी अपनी
पोर॥ पढिमंत्र असेषनि करि अ
भिषेकनि आसिष दे हि विसेष॥
कुंकुमकरपूरनि मगमद पूरनि
वरषत वरषोवेष॥ १७॥ तोमर॥ इहि
विधि श्री रघुनाथ॥ गहे भरथ
को हाथ॥ पूजत लोग अपार॥ ग
ये राजदरबार॥ १८॥ गंसेयेकरी
वार॥ चांसो राजकुमार॥ सहित

बधूनिसनेह॥कौसिल्याकेगेह॥१९
॥त्रिभंगी॥बोजवकुधोजेनारनेसा
जैसुनिसुरलाजेदुखभाजे॥नाचें
नवहूनारीसुवनसिंगारैंननिमसु
हारीसुषकारी॥वीनांनवजावैगी
तनगावैमुननिरिआवैमनभीजै॥
भूषनपटदीजेसवरसभीजेदेष
तजीजेहसिलीजे॥२०॥सोरठा॥र
घुपतिपूतनचंद॥देषिदेषसवसुष
वैठ॥रिनदूने आनंद॥तादिनतैंनैंति
हिपुरवैठ॥२१॥इतिश्रीमत्सकल
लोकलोकलोचनचकोरचिंताम
नश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांअजोध्या
प्रवेसोवर्ननंनामअष्टमप्रकासअष्ट
मः॥दोहा॥नमेपैनपसौमागिहै
कैकेईदोवरदोहि॥भरथराजरघुनाथ
जूसवरवनकोजाहि॥१॥रामचंद्र

लछमनसहितघराएोषदसरथ्थ॥
विदाकीननसाकैांसंगमत्रघन
भरथ्थे॥२॥नोरठा॥दसरथ्थमहा
मनमाहि॥इतिनिवालिवसिष्टसु
मंत्रलेह॥दिनुएककहेसुभसाधि
रघौ॥हमचाहतनएमहिराजदयो
॥३॥यहवातभरथ्थकीमाइसुनी
यदहूवनएमहिवुधिगुनी॥तिहिमंदि
रमैनपपैसोविनयो॥वहदेहूहजोहम
कोजुदयो॥४॥नपवातकहीहहसिंह
रिहैंयो॥वरमागिमुलोचनमेजु
दियो॥नपतासुविसेषभएचलेह
वेषवनचौदहएमहै॥५॥पधिरिका
यहवातलगीउरवज्रनल॥हियप
होमनहूजीरनदुकूल॥उहिचलेवि
पनिकोसुनतएम॥तजतातमातत्रि
यवंधधाम॥६॥हरिलीला॥छूटेसवे

सवनके सुषरुचिविपास॥ विद्याविनोद गुन गीन विधांनवास॥ ब्रम्हादि अंतजन अनेकलोग॥ भूलेविसेषिसविसेषनिरागभोग॥७॥ मोदक॥ गयेतवएमजहां निजुमांतु॥ कहीयहवातसुहेघनजातु॥ कळू जिनजीदुषपावहिमाइ॥ सुदेहु असीसमिलोफिरिआइ॥८॥ कौसिल्यावाच॥ रहोतुपहैंसुत कोवनजाहु॥ नदेषिसकेतिनके ननदाहु॥ लगीअबवापतुम्हारहिवादि॥ करीउलटी विधि कैसाकहिजाइ॥९॥ रांमब्रम्हजूपक॥ अनुदेहिसीषदेहिरा षिलेहिप्रांनजात॥ राजवापुमीललेकरेजुदेहिपोषगात॥ दासुहोहिपुत्रहोहिसिष्यहोहिकोइमाइ॥ सासनानमांनहीसुकाइजन्मनर्कजाइ॥१०॥ कौ

सिल्या हरनी॥ मोहि चल्लो वन संग
लिये। पुत्र तुम्हे हम मेंट षिजिये॥ प
ह श्रीधि पुरिम हगाजर रो। के अव
रनंमर प्यके रे॥११॥ एंमंनाम ए॥ नु
म क्यो चलो वन आज। नितु सीस
रजनि राज॥ जियजां निजे पतिटे
व॥ करसर्व भांवन सेव॥१४॥ पतिटे
हिं जो अनि दुष्य॥ मन मांनि लीजे
सुष्य॥ सवजानिजे जु अमित्र॥ पति
जानिके वल मित्र॥१३॥ अमनगन
नित प्रनिप घर चलिय॥ सुषदुष
को दलदलिय॥ तनमनदु सेवकु
पतिको॥ तवलहि हो सुभगतिको
॥१४॥ स्वागता॥ जो गजा गव्रत आ
दि जु कीजे॥ न्हान गंन दिन दान
हि दीजे॥ धर्म कर्म सवनि फल देवा॥
होहि सुफल पतिकी सेवा॥१५॥ता

फल

तमानसुतसोदरजांनौ॥ जेठदेवर
सवसंगवषांनौ॥ पुत्रपौत्रसुतश्री
छविछाडी॥ हैविहीनभरतादुषदा
ई॥ ९६॥ कुंडलीया॥ नारीनजहनन्या
पनौसपनेहूभरताह॥ पंगुगुंगुवौर
वधिरअंधअनाथअपाह॥ अंध
अनाथअपाहवृद्धरोवनअति
रोगी॥ बालकुषंडकुरूपसदाकुव
चनजडजोगी॥ कलहीकोढीकुरू
पसदाकुवचनजडजोगी॥ कलही
कोढीकूरचोरज्वारीविभचारी॥ अ
धमअभागीकुटिलकुमतिपति
तजेननारी॥ ९७॥ स्वांगता॥ नारीत
जैनमोभरतारहि॥ तातैंसगसहति
धनंजयप्यारहि॥ जौक्यौंहूकरता
रजिवांवत तौतिनकौंपरदवातम
नावत॥ ९८॥ सिसिपालकौ॥ गा

नविनमांनविन हांसिविनजो वही
तम्नन हिंषाइ जलसीतलनपीवही।
तेलननजिषेलन जघारन हिंसावही
सीतलजलन्हाइनितउसवनंजा
वही॥१९॥वाइमधेरानन हिंयाइयन
हीयेरै॥कायमनवाचसवधमेक
रवोकैरै॥कछुउपवाससवइंद्रीइन
जीतही॥पुत्रसिषलीननन जैोल
गि-अनीतही॥२०॥दोहा॥पतिहिन
पितुपएननुतजोसतीसाषिदेदेव
लोकलोकपूजतभई तुलसीपति
कीसेव॥२१॥मनसावाचाकर्मतार
मसोछांडेनेह॥एजाकोविपदाप
रीतिनकीतुमसुधिलेहु॥२२॥पध्ध
डिका॥उठरामचंद्रलछिमनसमे
त॥तवगएजनकतनयानिकेत॥
मुनिराजपुत्रकायेकवान॥हमवन

पढ़ै है नपतत्तान ॥२४॥ तुम जनननिसे
वकौ रहौ धाम ॥ कै जाहु अाज हौ जन
कु धाम ॥ सुनि चंद्रवैंग जगम नियेन ॥
जियरु चाहि सुकी जै जल जमैन ॥२६॥
॥ श्रीसीताजू ॥ नराज ॥ नेहो है नजो
कुंजू विदेह धाम कौ-ऋषे ॥ कहौ जूवान
मात सौ सुआ जैम सुनी सबे ॥ लगे हु
धा हिमा भली विपन माझ नारि
ये ॥ पियास अास नीर वीर जुथ मे स
म्हारिये ॥२५॥ लक्ष्मन सुगियछंद ॥
वन महविकट विविधि दुष सुनिये ॥
गिरगह वरमग अगम निगुनिये ॥ क
हू अरिहीकि हूनिसिचरहहौ ॥ क
हू देवदहन दुसह तन दहहौ ॥२६॥ सी
ताजूदंडक ॥ कै सौ दास नीटभू षप्या
स उप वास त्रास दुष कौ निवास विष
मुष हूं गह्यो पेरो ॥ वाइको बहन दिन

दवाको दहनवडीवाडवा अनलज्वा
लजालमेरहोयपेरे॥ जीलजन्मजा
लजोरजुधोरपरिपूरनप्रगटप्र
तापकेयाकेहोयपेरे॥ सहितेहोत्तपन
तापपनिकप्रतापरघुवीरकेविर
हवीरमेपेनसहोयपेरे॥ २७॥ श्री
मनिसेषक॥ धामरहोत्तुमलछिम
नाछ्जेकीसेवकेए॥ मातनिकेमुनि
ज्ञानसुदायदुषहैए॥ आइमरथ्य
केहेधोकरासवभ्रतगुनो॥ जोदुष
देइतोलेवरगोयहसीषसुनो॥ २८
॥ लछमनदोहा॥ सासनेमेदोजाइ
केयाजीवनमेरहाय॥ असीकेसेवू
झियसेककयलेननाथ॥ २९॥ दूत
विलंवना॥ विपनमाएगएमविए
जहीं॥ सुपदिसदएसोदरसाथही
विविधिश्रीफलनिसिध्यिमांनोफ

पढ़ै हैं न पतन्नान॥२३॥ तुम जन नि से
वे कोर हैं धाम॥ कै जाकु आज्ञ हो जन
कु धाम॥ मुनि चंद्र वै ग जग म नि ये न॥
जिय रुची है सुकी जै जल ज्ञे नैन॥२४॥
॥श्रीसीताजू॥ नराज॥ ने हो है न ज्ञो
डुंजू विदेह धाम को-अबे॥ कहो जु बात
मात सो सु आज्ञ मे सुनी सबे॥ लगे छु
धा हिमा भन्नो विपन्न मा ज्ञ नारि
ये॥ पिपास त्रास नीर वी रज्ञ धर्म से
म्हारिये॥२५॥ लक्ष्मनसुग्रियछंद॥
वन महा विकट विविधि दुष सुनि ये॥
गिरगहवर मेग आगम नि गुनिये॥ क
हूं अहि सिंह कि हूं निसिचर है हीं॥ क
हूं दव दह न दुसह तन दहहीं॥२६॥ सी
ताजू दंडका॥ कंसो टास नीट भ ष प्पा
स उपवास त्रास दुष को निवास विष
मु षहूं गह्यो परे॥ बाउको बहन दिन

दावाकौदहनबडौवाडवाअनलज्वा
लज्वालनैमेरहैापै॥जीतलजन्मज्ञा
नजोरजुछोरपरिपूरनप्रगरपर
तापकैयाकैहापरै॥सदिहैातनपन
तापपनिकैप्रतापरघुबीरकैविर
हबीरमैपैनसह्योपरै॥२७॥श्रीम
मविसेषक॥धामरहैातुमलछिम
नएजकीसेवकैरै॥माननिकैसुनि
तानसुदारयदुषहै॥आइमरष्य
कैहैधौकहासबमंत्रगुनौ॥जोदुष
दैइनीनैउरगौयहसौघसुनौ॥२८
॥लक्ष्मनदोहा॥रामनमैदौजाइ
कैयोजीवनमेरेहाथ॥असीकैसेबू
झियेसकुकयरवननाथ॥२९॥दूत
विलंबना॥विपनमाएगएमविए
जही॥सुषदिसिदएसोदरसाथही
विविधिश्रीफलनिसिध्यिमानौफ

लौ॥ सकल साधना सिधि हि लैं चले लौ
॥ ३० ॥ दोहा ॥ राम चलत सब पुर चले ज
हत हसहित उछाह ॥ मनहु भगीरथ
पथ चले भागीरथी प्रवाह ॥ ३१ ॥ चं
चल ॥ रामचंद्र धाम तें चले सुने जबै
नृपाल ॥ बात को कहै सुनै सु है गये
महा बिहाल ॥ ब्रह्म रंध्र फोरि जीउ
यो मिल्यो बिलोक जाइ ॥ गेह चूरि
ज्यो चकोर चंद्र मै मिलै उड़ाइ ॥ ३
२ ॥ कुमार ललिता ॥ नृप हि देषन मा
हि ॥ इक दौन रकौ है ॥ संभ्रम चित्त
अरुझे ॥ राम हि यो सब बूझे ॥ ३३ ॥
चर्चरी ॥ कौन है किन ने चलै कित
जान हो कि हि काम जू ॥ कौन की दु
हिता बहू कहि कौन की यह बाम जू ॥
एक गांउ बसौ कि साजन मित्र बं
धु बषानिये ॥ देस के परदेस के कि

धौंपंचकौपहिचांनियै ॥३३॥ दंडक॥
किधौराजपुत्रीयहवरहीवरीहै किधौ
उपधिवरैहोइहिसो भा अभिरतेहो
किधौरतिरतिजसमा यकेसोरास
ज्ञानतपावनसिवेरूसुमिरतेहो॥
किधौमुनिश्रामहनिके धौब्रह्मदा
यरतेकिधौसिध्यजुतवएमविहरते
हो॥ किधौकोउठगैहोठगौरीलिये
किधौतुमहीहरसिवाश्रीहिचाह
तफिरतेहो॥३४॥नी त्नाकरदंडक॥
मेघमंदाकिनीचारुसौदांमिनी
रूपरूरेलसेदेहधारीमनौ॥ भूरी
भागीरथीभारथीहंसजा अंस
केहैमनौभागभारेमनौ॥देवराजा
लियैदेवरानीकिधौपुत्रसंजुक्त
भूलोकमेसोहियै॥पक्षदूसंध्य
संध्यासुधीहै॥ किधौलक्षिपैत्व

क्षप्रत्सक्षहीमोहिपै॥ ५४॥ अनंघसेष
दंडका॥ तडागहीननीं जेसनी है
नकेसोदासपुंडरीकअंडभौरमंड
लीनमंडहीं॥ तमालवल्लरीसमेत
सूषिसूषिकेरहैंतिवागपूलिफूल
केसमूलसूलषंडहीं॥ चितैचकोरनी
चकोरमोरमोरनीसमेतहंसहंसि
नीसुकादिसारिकासवैपपै॥ जहीं
जहीं विरामलेतरामजूतहीनहीं॥ अ
नेकभांतिकेअसेषभोगभागसौ
वढे॥ ५६॥ दुटी॥ घांमकोधांमसमी
पप्रदावलु॥ सोतरहिलागतहै अति
सीतल॥ ज्यांघनसंजुतदांमिनकेत
न॥ होतहैपूषनकेकरभूषन॥ ५७॥
मागेकीजेनापतिहै अति॥ के
सवसीतहिसीनललागति॥ पीप
रपंकजऊपरपाइन॥ देजुचलैनेति

हिनेसुषदाइन॥३९॥दोहा॥प्रतिपुर
अरुप्रतिग्रामकोनगरनागरीना
रि॥सीताजूकोनिरषमुषवरनन
हैसुषकारि॥३९॥टीका॥वासोमग
अककहैतोसोमगनेनीसववासो
सुधाधरतुहीसुधाधरमानिये॥व
हदुजराजराजैतोतूदुजराजजैव
हकलानिधतुहीकलाकलितव
बानियें॥रेनाकरकेदाईकेसवप्र
कासकरअवरविलासकुवलय
हितगानिये॥वाकेअतिसीतकर
तुहेसीतासोनकरचंद्रमासीचंद
मुषीसवजगजानिये॥४०॥अप
रंचवाच्या॥कलितकलंककेतुकेतु
असेतुगातभोगजोगकोअजो
गएगहीकोथलुसो॥पूनेहीकोपू
रनेपेप्रतिदिनदूनोदीनाछिनछिन

छीनछुवछीलरकोजलुसो ॥ चंदसो
जुवलनतएमचंद्रकोदुहाईसोईमति
मंटकविकसवकुसलसो ॥ सुंदसुवास
अहकामलअमलअनिसोताज
कोमुषसषीकेवलकमलसो ॥ ४१ ॥
॥ अन्यहवाच ॥ एकेकहेअमलकम
लमुषसीताजूकोएकेकहेचंदमय
आनंदकोकंदरी ॥ दोहूजोकमलतो
वेरेनिमाअसकुचेरी ॥ चेदजोतोवास
रहूहोहिहुतिमंदरी ॥ वासरहीकमलु
ग्यनमाअचंदमुषवासरहीरयनवि
राजेजगवंदरी ॥ देषोमुष[illegible]
भावतुनरेषोइकमलचंदतातामुष
मुंदसषीकमलवेनचंदरी ॥ ४२ ॥ दोहा
सीतानेनचकोरमुषरविवंसीरघुना
थ ॥ एमचंद्रसियकमलमुषभलो
वन्योइहसाथ ॥ ४३ ॥ मंदराथ वाग

रुऽगतरंगिनीतीरतमालकी छांह
विलोकिमली॥ घरिकाइकवैठनिह
सुषपाइवनाइतहांकुसकांसथली
मगकोअमुश्रीपतिदूरिकौंसिय
कोसुचिवालकअंचलके अमुते
ऽहेतेतिनकोकहिकेसवचंचलचा
रुद्रगंचलके॥८४॥सोरठा॥श्रीर
घुपतिकेदृग॥ अश्रुवलितसीता
नयन सांचीकीअद्रिग॥सूधेउप
मामीनकी॥८५॥दोहा॥मारगमेर
घुनाथजूदुषसुषसवहीदेत॥चित्र
कूटपरवनगयेसादरसियासमेत॥८६

॥इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचको
रचिंतामनिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांवन
वागवर्ननंनामनवमप्रकासः॥दो
हा॥दसयेजैसेभरथजूचित्रकूटको
आसु॥रामचंद्रकेदरसकानंदीपुरमे

बासु॥१॥दोधक॥ आइभरथ्थपुरी
अवलोकी॥ थावरजंगमजीउससो
की॥ भाटनहीबिरदावलिसाजै॥ कुं
जरगाजैनदुंदभीबाजै॥२॥राजसभा
नबिलोकियकोऊ॥ सोसगहेतबबो
रदोऊ॥ मंदिरमातबिलोकिअके
ली॥ ज्यौंबिनब्रक्षबिराजतिबेली
३॥ तोटक॥ तबबंदिभरथ्थप्रनामकियो॥ उ
ठिकैउनकंठलगाइलियो॥ नचितौ
जलसंभ्रमभूलिरहे॥ तबमातसौ
बातभरथ्थकहे॥४॥ सवैया॥ मात
कहांनृपतातगये॥ सुरलोकनिक्यौ
सुतसोकलये॥ सुतकौनुसुरामक
हाहै-अबैवनसीयसुलक्ष्मनसा
थगये॥ वनकाजकहाकहिकेवलमो
सुषतेरौकहासुषपांमैंभये॥ तुम
कौप्रभुनाथकतेकौकहाअपराध

धषिनासिगरेहिहूये॥५॥दोहा॥भ
न्नौसुतविह्वषिनीसबही कौदुषदा
हि॥पहकहिदेषभरथतवकौसि
ल्याकेपाइ॥६॥तोरका॥तवपांइन
जाइभरथ्थपरे॥उनिमेंरितुठाइ
केअंकधरे॥सिरसूंघविलोकिव
लाइलई॥सुनतापिनह्वांमविपरी
तभई॥७॥भरथनाके॥सुनिमान
भईपहवातअनेसी॥कहरुसुतमंत्रे
विनासिनजेसी॥यहवातभईअव
जानतजाके॥दुजदोषपरेसिगरे
सिरताके॥८॥जिनकेरघुनाथवि
रोधवसेजू॥मतिधार्मिनकौतिन्हे
पापगसेजू॥सरामरम्यौमनुना
हिनेजाके॥रनेमेरिनहोइपराज
यताके॥९॥कौसिल्यावाच॥जिन
सोहकरोतुमपुत्रसयाने॥अनिसा

ए.चं
५३

धचरित्रतुम्हेसवजानै ॥ सवकोस
वकालसदासुषदाई ॥ जियजाननत
हींसुनज्योंरघुराई ॥ १० ॥ चर्चरी ॥
हाइहाइजहांतहांसवेह्वैरहीसिगरी
पुरी ॥ धांमधांमनिसुंदरीप्रगटीस
वेजिहुतीदुरी ॥ लोगलेनृपनाथको
सवलोगश्रीसरजूतटी ॥ राजपत्नि
समेतपुत्रनविप्रवलाप्रगटीरटी ॥ १
१ ॥ सोमराजी ॥ करैअग्निअर्चा
मिटीप्रेतचर्चा ॥ सवैराजधांनी ॥ भई
दीनवांनी ॥ १२ ॥ कुमारललिता ॥
नृपभरथकीन्ही ॥ वियोगरसभी
नी ॥ सजीमतनवीनी ॥ मकुटपटली
नी ॥ १३ ॥ तारक ॥ पहिरेवकलासु
जटाधरिकै ॥ निजपाइनपंथचले
अरिकै ॥ तजिगंगगयेगुहसंगलियो
चित्रकूटविलोकितछाडिदियो ॥ १४

॥सवैया॥ सवसासहंस भगोषग
षेचवोरिद्धौंवहुवानेगाजे॥ व
नकेनखोनरवि नवोलकलेम
गन्योमगनाइक भाजे॥ नजिसिद्धि
समाधिनकेसवदोषदोरिदीनि
मे आसनसाजे॥ भूतलभूषहोलो
अचानक आनिभरथ्यकीदुंदभी
वाजे॥ ५ ॥लछिमनमोहन॥ देषो
भरथ्य चमूसजि आये॥ जानि अ
वनिहमकोउठिधाये॥ हीसनहयव
वानगाजे॥ दीरघ जहनह दुंदभीवा
जे॥ १६ ॥नारक॥ गजराजनिरूपा
पावरसोहे॥ अतिसुंदरसीससिरीम
नमोहे॥ मनिघूंषरघंटनिकेवणजे
तडिताजुनमानहुंवारिदगाजे॥ १७॥
विजय॥ जुद्धको आजभरथ्य चढे
घनदुंदभीकीदसहूदिसधाहे॥ प्रा

तचली चतुरंगचमूंवनी सुनके सव
कासहजाइ॥ सवके तनत्रांननिमे
अलके अवपी अहनोदयकी अ
रुनाई॥ अंतर तेज तुरंजनकौ ज
पूननकी जेऊण आई॥१८॥ तो
टक॥ उठिकै धरि धूए अकास चली
अतिचंचल वाजघुरीन दली॥ मु
वहालन जानि अकासहिये॥ ज
नुधूमि नैटा रनिटो हकिये॥१९॥
तारक॥ रनराजकुमार अरूढा हि
गे॥ अनिसांमुहे षाइ निजूझ हिगे
जनुटो रनिठो रनिभूमिन वीने॥ ति
निकै चढे वक हमारग कीने॥२०॥
सीताजू॥ रही पूरि विमाननि ओ
मथली॥ तिनको ■ जनु दारन पू
रि चली॥ पपपरी अकासह धूरि
रही॥ सुगपेमि रिसूर प्रकासस

हो ॥२१॥ दोहा ॥ अपने कुल को क
लह कैधों देष विभगवंत ॥ येहे जानि
अंत किधों मानहुं महीप अनंत
॥२२॥ तोटका ॥ बहु तामहु दीह पता
कलैसे ॥ जनु धूम में अग्नि की ज्वा
लवसे ॥ एसनाकिधों का लकाएल
षनी ॥ किधौं मीचनचे चहु वेगावनी ॥
२३॥ दोहा ॥ देषि भरथ की चल धु
जा धूरनि में सुषदेनि ॥ जुद्ध जुरन
कोमनहु मतजाधन वोलैलोनि ॥ २४
॥ नगिस्वन टेटका ॥ मारउोरेअनुज
समेत नई हितो न अवमे दिडोरो केव
लव चननिज गुरको ॥ सीतासान
सीतानाथवेहदे योद्धु चतरई है सु
वसप्पोत्रासुसव ही केउरको ॥ क
सोदासस वि लासवी सवि सोवा
सु होइ कै कहीके अंग अंग पत्र सो

कुंजरको॥ रघुराजजूकोसाजुसक
लछिडाइलैकुभरथहि आजुराज
देहुप्रेतपुरको॥ २५॥ दोहा॥ एकबा
रमैंप्रगटइहहैप्रभुकेसबदास
तहांबसतुहैरैनुदिनमूरतवनबि
नास॥ २६॥ कुसुमविचित्रा॥ नवठ
निसैनाउहियलगषी॥ मुनिजन
लीनैसम अभिलाषी॥ रघुपति
केपाइनसिरनाये॥ उनिहसिलैकै
कंठलगाये॥ २७॥ दोधक॥ मातु
सबैमिलिबिकट आई॥ ज्योंसुत
कोसुरभीअलवाई॥ लछिमनस्यों
उठिकैरघुराई॥ पाइनजाइपरेसुष
दाई॥ २८॥ मातनिकंठउठाइलगा
ये॥ प्रानमनोमततेंदेहनिपाये॥ आं
निमिलीतबसीयसभागी॥ देव
रसासुनिकेपगलागी॥ २९॥ तोम

म॥ नवपूछिये रघुराइ॥ सुष है पितातनमाइ॥ नवपुत्र कौ मुष जोइ॥ सिगरी उठी अति रोइ॥३०॥ दोधक॥ मातुनि सो सब पर्वत धायो॥ जीव कहा जर जंगम गायो॥ सिद्धि वधू सिगरी सुनधाई॥ राजवधू सिगरी समुझाई॥३१॥ सुषदा॥ धीर चित्तधीर गये गंगतीर॥ सुचि ह्वै सरीर॥ पितु तर्पकीन॥३२॥ मरह्यकाके॥ घरको चलिये अवश्री रघुराई॥ जनने हौ तुम राजसदा सुषदाई॥ परवात कही जलसो गलु भीनो॥ उठ सो रघनाइ पिता न वती मो॥३३॥ श्रीराम॥ राजुदियो हमको चनदूऐ॥ राजुदियो तुमको अतिपूऐ॥ सोह मही तुम ही अब कीजे॥ बापु को बालुन नेक हू छीजे॥३४॥ दोहा॥

रा. चं.
५८

एजाको अरु वापकी वचनु नमे टेको ॥ ३ ॥ जो नमांनि जे भरथ नोमा रेको फल होइ ॥ ३५ ॥ भरथस्वागता मद्यपान अस्त्री जिनु को रीं ॥ संनि पाति जु न वानि ल जो री ॥ दे षि टे षि निनको सव भोगे ॥ ना सु वानह तिपापुन लागे ॥ ३६ ॥ ईसईसज गदीसवषानो ॥ वेदवाक्य सव नै वल जानो ॥ ना हि मेरि हठु के एहि हे तो ॥ गंग नीर तनको नजि हे तो ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ मोन गहो प्रहवानकहि छोड्डो सवे विकल्पु ॥ भरथ जाइ भागीरथी तीर कियो संकल्प ॥ ३ ८ ॥ इंद्रवज्रा ॥ भागीरथी रूप अनरूप कारी ॥ चंद्रानना लोचन कंज धारी ॥ वांनी वषानी मुष तत्व सोध्यो ॥ एमा नु जे आनि प्रवोधु

बोध्यौ ॥ ३९ ॥ अनंतन्रस्तां दिन अं
तुपायो ॥ अनेगधावे छिनगीतगा
यो ॥ तिन्हें नएमानुजो वधुमानो ॥
सुनो सुधीकेवलग्य मजानो ॥ ४०
निजेछायाभूतलदेहधारी ॥ अथ
मेसंघ । कधमेचारी । चलेदसग्री
वहिमारिवेको ॥ जपीतपीकेवल
पालवेको ॥ ४१ ॥ उठो हठो होइ ननका
जकीजे ॥ सुबपाइए जअग्यांमा
तिलीजे ॥ अदोषनरी सुतमान
सोहे ॥ सुकोनमायाइ निकीनमो
हे ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ पहकाहिकेभागीर
थी केवलभई अदिष्ट ॥ भरथक
होउठिरामसों देहुपादुकाइष्ट ॥ ४३
॥ इंद्रवज्रा ॥ चलेवलीपावनपादुका
लेके ॥ प्रदछिनाएंमसीनाहिदेके ॥
गयेतिनंदीपुरवासुकीनो ॥ सवध

ए॰चं॰ ५७

श्रीएमहिहिचित्तदीनौ॥४४॥दोहा॥के
सबभरथहि-आदिदेसनगरकेलो
ग॥वनसमानघरघरवसेसकलवि
कलसंभोग॥४५॥इतिश्रीमत्सकल
लोकलोचनचकोरचिंनामनश्रीए
मचंद्रचंद्रिकायांभरथपादुकाग्रह
ननामदसमप्रकास॥१०॥दोहा॥
येकादसेप्रकासमेंपंचबटिनकोगा
नु॥सूपनेकेरूपकोंरघुपतिकरहे
नासु॥१॥उपता॥चित्रकूटएमज
तजौ॥जाइजग्यथलु-अत्रकोम
जौ॥एमलछिमनसमेतसीतादेषि
यो॥-अपनोजनमसुफलकरिले
षियो॥२॥-अत्रउवाच॥चंद्रवर्त्मनि
स्नानदानतपजापुजुकरिये॥साधि
साधचितजोमनधरिये॥जोगजग्य
हमजोलगिकरियो॥एमचंद्रसव

मा

५७

कीफलनलहियो ॥ २ ॥ वंसस्वनिता ॥
अनेकधापूजनु अन्नजूको ॥ अपा
लेहेश्रीरघुनाथजूधो ॥ पतिव्रता
देविमहर्षिकीजहां ॥ सुबुधिसीतासु
बदनगईतहा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पतिव्रतानि
कीदेवता अनुसूयासुभगाय ॥ सी
ताजू अबलोकियोजएसबधी केसा
य ॥ ५ ॥ चतुष्पदी ॥ सिहसेनुवितंजे
कोरतिताजेजनुकेसवतपवलको ॥
तनुवलीपलितजनुसकलवासु
नानिकसगईथलथलको ॥ कंप
तिसुभग्रीवासवअंगसीवदेषत
चित्तभुलाही ॥ जनुअपनेमनमे
यहउपदेसतियाजगमेकछुनाही ॥
६ ॥ प्रमनाछुदा ॥ हवाइजाइपग
सियधरी ॥ रिषिनारिसूधिसिअंक
धरी ॥ वहुअंगरागअगअंगरये ॥

सवभांतिनिकेउपदेसदयो ॥ ७ ॥ अथगवि
ना ॥ एमअंगेचलेमध्यसीनाच
ली ॥ वंधुपीछेचलेसोमिसोभाम
ली ॥ देषिदेहीसवेकोरिधांकेमनो ॥
जीवजीवसकेवीचमायामनो ॥ ८ ॥ मा
लनी ॥ विपनविराधुवलिनिदेषियो ॥
नपतनपापभभीतकेपियो ॥ तवर
घुनाथवांनेकेदयो ॥ निजधिरीनप
थपाठयो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ रघुनादिकसा
इरूपरेसकललोकसिरमोर ॥ गए
कृपाकरमंनिवसाषेअगस्तके
ठोर ॥ १० ॥ वसंततिलक ॥ रामल
क्ष्मनअगस्तसनारदेषियो ॥ सो
हासमेतशुभपावकरूपलेषियो ॥
अष्टांगछिप्रअभिवंदनजाइकीने
सदानंदआसिषअसेषदीने ॥ ११ ॥
वेठारआसनसवेअभिलाषपूजे ॥

सीतासमेतसवंधएमपूजे॥जोकेनिबि
त्रहमजम्पजजेसुपाऐ॥ब्रम्हांडमंडलन्रू
पजोवेदनगाऐ॥१२॥पद्धिठिका॥ब्रह्मां
दिदेवनवविनयकीन॥तरक्षीरसिंधुहेप
रमदीन॥तुमकह्योदेवअवतरहुजाइ॥
सुतुहेपदसरथकोहोतुआइ॥१३॥हम
नवतेअतिआनंदमान॥चितवतहे
मगआगमनजान॥ह्यांएहियकरिसे
देवकाजु॥ममफलितफल्योनपवनस
आजु॥१४॥श्रीरामवाच्य॥अगस्तरि
षएजजूवचनइकमेरोसुनो॥सवभांत
भूतलसुदेसमनमेगुनो॥सनीतमं
त्रिसंमध्यसोभाधेरो॥जहांहमनिवा
सकोविमलसालाकरो॥१५॥अग
स्तप्रष्टावनी॥जदपिजगकत्रोपा
लकहत्रोपरिपूनवेदनगाये॥अ
वनदपिकृपाकरिमायावपुधरिय

लपूछनहमकहआये॥ मुनिसुरना
इकरक्षसघाइकारक्षहुमुनिजनुजमु
लीजै॥ सुभगोदावरीतटविसदपंचव
टपनेकुटीनहकीजे॥१६॥ दोहा॥ केस
वकहेअगस्तकेपंचवटीकेतीर॥ पर्न
कुटीपावनकरीरामचंद्ररनधीर॥१७॥
॥पद्मावती॥ फलफूलनफूलेनरवर
हरेकुलनकोकिलकलरवबोलै॥ अ
तिमत्तमयूरीपियरसपूरीबनबनप्र
तिनाचतडोलै॥ सोरसुकपढिनगु
नगनमंडितभावनिमयवचनवषा
नै॥ देषैरघुनायकसियासहाइक
मनोमदनरतिजानै॥१८॥ लछ
मनसवैया॥ सबजातिफटीदुषकी
दुपटीकपटीनरहैजहएकघटी॥
निघटीरुचिमीचुघटीहूघटीजग
जीवजतीनिकीछूटीतटी॥ अघओ

षकीवेरीकरीविकटीनिकटीप्रग
टीगुनग्यानगटी॥चद्रुवोएनिनाच
तमुक्तनटीगुनधूरिजिरीजरीपंच
वटी॥१९॥हाकहिन्नका॥भांतनि
भांतिनसुंदरपेषनी॥सोभतिद्रनन
कीरुचिवनी॥सेववंटनपकीजनु
लसे॥श्रीफलभूपिभावजहवंसे॥
२०॥वीभयानकसीयहलगे॥स्र
केसमूहजहांजगमगे॥नैननिको
वडुरूपनिगसे॥श्रीहरिकोजनुमू
निलसे॥२१॥श्रीसीताजूदोधक
सोभतिहैयेंजोकुलकंन्या॥धा
हिविराजनहैसगधंन्या॥केलिय
लीजनुश्रीगिरजाकी॥सोमधरे
सितकंठप्रभाकी॥२२॥श्रीरामन
राज॥अतिनियटगोद्यवरीपापसं
घारिनी॥नलेननंगतुंगावलीचा

हंसचारिनी॥ अमलकमलसोंगंध
लीलामनोहारिनी॥ वदनपनसुरस
केअंगसोभामनोधारिनी॥ २३॥ दो
धक॥ ऐतिमनो अविवेककोपापी॥
साधनकीगतिपावनपापी॥ कुंजन
कीमतिसीवडभागी॥ श्रीहरमंदिर
सोअनुरागी॥ २४॥ अमनगति॥ नि
पटपनिव्रनधरनी॥ जगमगके सुष
करनी॥ निगनसदागतिसुनिजे॥ अ
गतिमहांगतिगुनंजे॥ २५॥ दोहा॥ वि
षमयसहगोदावरी अमतनकेफल
देइ॥ केसवजीवनं हारिके दुषअ
सेषहरलेइ॥ २६॥ त्रिभंगी॥ जवजव
धरवीनाप्रगटनवीनावहुरसलीी
नासुषसीना॥ पियजियहीनिआ
वेदुषनिभजावेविविधवजावेगुन
गीता॥ नजिमतिसंसारीविपनवि

पनविहारीद्रुमसुषकारीषिरिआवे॥
नवनवजगभूषनी॥पटलदूषनस
बकोभूषनपहिरावे॥२८॥नाटक॥
कवरीकुसमालिसिषीनिदई॥गजकुं
भनिहारनिसोभभई॥मुकतासुक
सारिकानाकरचे॥कटिकेहरकिंकि
नसोभसचे॥२५॥दुलरीकलको
किलकंठवनी॥मगषंजनअंजन
भांतिभनी॥नपहंसननूपुरसोभ
सिरी॥कलहंसनिकंठनिकंठसिरी॥
२६॥मुषवासनिवासिनकीनत
वे॥अनगुल्मलतानहसेलसवे॥
जलहूथलहूइहिभांतिरमे॥वन
जीवजहांतहसंगभमे॥३०॥दोहा
सहजसुवाससरीरकीवनउपवन
अवगाहि॥दूतीज्योंआइलियै
केसवसपनषाहि॥३१॥मरहठा॥

इकदिनाप्युना इकसियासहाइक
एतिना इकआनुहार॥ सुभगोदावरित
टविसटपंचवटवैदेहनमुराष॥ देषनही
नुमनुमटतनमध्यानननस्पनषानि
हिकाल॥ अतिसुदरपुकोरकछुयी
रजेथरिबोलीवचनएसाल॥ ३२॥ सूप
नषावाच॥ किंन्नरहोनारूपविजह्ह
नजक्षकस्वक्षसणरनसोहो॥ चित्र
चकोरकेचटकिधौमृगलोचनचारु
विमाननिरोहो॥ अंगधरैकैअनंगी
होकेसबअंगीअनेकनिकेमनमो
हो॥ वीरजरानधरेधनवानलिये
वनमेवनितातुमकोहो॥ ३३॥ श्री
रामनोवाच॥ हमहेदसरथनृपति
केसुतएमल्लछिमननामनिसंजु
त॥ यहसियदेपठइहिकाननमुने
पालरमाछरक्षसकेगन॥ ३४॥ सू

पनषा॥ नपएवनकीभगनीगनमा
कर॥जिनकौठकुराइसतीनहूलोक
हं॥सुनिजेदुषमोचनपंकजलोच
न॥अवमाहिकौपतिनीमनरोचन
३५॥ओमनोमरा॥नववयाकहोह
सिरांम॥अवमोहिजानिसवांम॥
नुजाइलछमनदेष॥सोरूपजोवन
लेष॥३६॥सूपनषाबोधका॥एमस
हाइमोतनदेषौ॥एवनकी भगनी
जियलेषौ॥राजकुमाररमोसगमे
रै॥होहिसवेसुषसंपतनेरै॥३७॥ल
छमन॥वेप्रभुहोजनुजानिसदाइ
दासीभयमहकोनवडाइ॥जोम
जिजेप्रभुनोप्रभुताइ॥दासीभयेमे
उपहांससदाइ॥३८॥मल्लिका॥हां
सकेविलासजांन॥दीहमानंषडमा
नि॥भक्षिवेकोचित्रचाहि॥सांमुही

भरीसियाहि॥७९॥तोमर॥तवरांमचं
द्रप्रवीन॥हसि अनुजस्यौंद्दगहीन॥गुन
द्रसजासहलीन॥श्रुतिनासिकाविनकी
न॥८०॥दोहा॥श्रानछिछुटातिवटनभी
मभरीतिहिकाल॥मानहुधूमाकुरि
लजुतपावकज्वालकराल॥८१॥इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंता
मनश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांसूपनषावि
रूपवर्ननंनांनामएकादसप्रकास॥११
॥११॥दोहा॥यहिद्वादसेप्रकासमेषर
दूषनवधनास॥सीताहरनविलाप
पुनिसुग्रीवअनुग्रहवास॥१॥तोट
क॥गईसूपनषाषरदूषनपे॥सजि
ल्याईतिन्हैजगभूषनपे॥सरएकअ
नेकनटारिकिये॥एविवेकज्योंतम
पुंजपिये॥२॥दोहा॥लक्षमनसौर
घुनाथजूकहियौवचनसुनाइ॥सीत

हिलैरषेषोगुफामेंमनज्योसुचिताइ
॥३॥ लक्षमनसीतासंगहैगुफाद्वार
वलवीर॥ आपुनतेतनत्रांनसजि
जुजुद्दरयुवीर॥४॥ मनोरमा॥ षरके
षरदूषनज्योषरदूषन॥ नवदूरि कि
येरविकेकुलभूषन॥ गदसत्रचैदोष
ज्योदूरिकियेंवर॥ असरसरज्योंरघु
नंदनकेसर॥५॥ दोहा॥ भयोजुध
वहुकैरागनेवाढ़कथाअपार॥ सहसच
तुरदसराक्षसनमारेनलगीनवार
॥६॥ दसकंध अंधयेजवगईषरदूष
नैजुआइ॥ सूपनषालछिमनसहि
तेवधसुनामेंजाइ॥७॥ दंडका॥ मय
कीसुताथीकोहेमोहिनीहूमोहेअसी
आजलोनसुनीसुनीनैननिनिहा
रिये॥ दहदुतिदामिनीहिमोहेकाम
कामिनीहियेकलोमरूपरेपलोम

ए॰चं॰
६३

जाविचारिये ॥ भागपरके मलासुहाग
परविमलाऊवानीपरवांनीकेसोदास
सुषकारिये ॥ सातलोकसातदीपसात
हरसातहूतनिन्नियनकीगीतासबसी
तापरवारिये ॥ ८ ॥ मनोरमा ॥ भगिसूप
नषागईएवनपेनव ॥ त्रसराषरदूष
ननासकहेसव ॥ सूपनषामुषवो
नसवेसुनि ॥ एवनगोजहमारीचहो
मुनि ॥ ९ ॥ दोधक ॥ एवनवानकहीसि
गरीस्यो ॥ सूपनषाजुविरूपकरीस्यो ॥
एषसएंमअनेकसषारे ॥ दूषनस्यो
त्रसराससमारे ॥ १० ॥ तूंअवहोहि
सहाइकमेरे ॥ मेवहूतोगुनमानि
होतेरे ॥ हौहस्सीतहिल्यावनपे
हे ॥ वेभमसोकनिहोमाजेहे ॥ ११ ॥
॥ मारीच ॥ एवनमानसुएमनजा
नौ ॥ पूतनचौदहिलोकचषानौ ॥ जा

दुजहांत्रियपलेसुनदेषो॥ होहीको
जलहूथलदेषो॥१२॥ रावनपंकज
वाटिका॥ तूंअवमोहिसिषावनुहेस
॥मे वसजग्तकोएहहेठहीहठ॥वे
गिचलेउठदेहिनउत्तरा॥देवसकल
जनएकनहीरूरा॥३॥ दोहा॥ जांनिच
लीमारीचुमनुमनदुहूविधि-प्रासु॥
रावनकेककनेरकनिजहरका॥हीपुर
वासु॥१४॥ श्रीरामसुंदरी॥ राजसुना
इकमेत्रसुनो-प्रव॥वारतुहीभुवभा
रहेरेसव॥पावकमेनिजदेहहिराषो
छायासीरमेगे-प्रभिलाषो॥१५॥
नराज॥ -प्राइसोकुरगएकचारुदे
हमहीरको॥जानुकीसमेनचित्तुमो
हिएमषीरको॥राजपुत्रकासमीपसा
धुवंधुएपके॥हाथचापुवानुलेगए
गिरीसनाषके॥१६॥ दोहा॥ रघुनाइक
साइकहयोजवहीइकमारीच॥हाल

ह्विमनय़रहकहिगियौरघुपतिकेसुरनी
चु॥ ८७ ॥निसपालका॥ राजतनयाजु
तबबोलिसुनियौकहो॥ जाकुचलैदेवा
नजाइहमपैरह्यो॥ हमसंगहोइनाहिरै
नचरूजांनियो॥ दीनसुरामकिहूभां
तउरआनियौ॥ ८८ ॥लक्षमन॥ सा
चआतिपोचउरमोचदुषदांनियै॥ मा
तुअबदातुमहवानमनमानियै॥ रन
चरक्षसवहभांति-[illegible]-अभिलाष
ही॥ दीनसुरामकबहूनमुषभाषही॥
८९ ॥चंचला॥ पक्षराजजक्षराजप्रेत
राजजातुधांन॥ देवता-अदेवतानदेव
ताजितेजहांन॥ पर्वतारअर्वषर्वसर्व
सर्वदाबषांन॥ कोरकोरसूरचंद्रराम
चंद्रदासजांनि॥ ९० ॥तोमर[illegible]॥ राजपुत्रि
काकहोसुऔरकोकहैसुनै॥ कोनमू
दिवारवारसौसुबीसधांधुनै॥ चापबार
रीषषाचिंदवसाबदैचलै॥ नाकिंहेति

भस्मैहोहिजीवजेबुएभले ॥२१॥ छिद्रपा
रिछुद्राजलंकनाथुआरियो ॥ मिछु
जानिजानुकीसुभीषकोबुलारि ॥ अं
तरीक्षहीहरीज्योंराहचंद्ररषको ॥२२॥
॥टडुक॥ धूमपुरकेनिकेतमानेधूम
केतुकीसिषाकिधूमजोतिमध्यरेषा
सुधाधामकी ॥ चित्रकेसीपुत्रिकाकि
रूरेवघरहरेमाअसंवरछिडाइलीनीकं
मिनीकिकामकी ॥ पाषंडकीश्रद्धाकिम
हसकीयेकादसीलीनीकिसुपचराज
साषासुधधामकी ॥ केसवअद्रिष्टसा
थजीवजोतिजेसीतेसीलंकनाथहा
थपरीछायाजायाएमकी ॥२३॥ सी
ताजूहरलीला ॥ हारोंमहारामजेगं
नाथधीर ॥ लंकाधिनाथवसजान
कुमोहिवीर ॥ इद्रपुत्रलक्ष्मनछिडाव
कुवेगमोहि ॥ मार्तंडवंसकीसवलाज
तोहि ॥२४॥ पंछीजटायुपरहवानसुन

रा.चं.
६५

तथापि॥ राकौनुंतंतबलनरावनदुष्टजाति॥
कीनौप्रचंडरथछत्रयुजाविहीन कोऊ
विपक्षजबधौपक्षहीन॥२५॥ संजुता
दसकंठ सीतहिलै चलौ॥ अतिग्रथ
गीधहिपेटलै॥ चितज्ञानकीअधको
किसौ॥ हरितौनहै अवलोकिसौ॥२६॥
॥पदपदकीतुभयूथरौ॥ निनीलहा
टकसौजरी॥ जुवजनरौपैविचारिकै॥
मुवडारिदियपगुटारिकै॥२७॥ दोहा
सीताकेपदपद्मकेनूपुरपटजिनुजा
नु॥ मनहुकिसौसुग्रीवघरराजश्रीप्र
स्थान॥२८॥ सोदरसहितविलोकि
योरघुवरसन्यौसदनु॥ सुभतासौभ
सुगंधजुतज्यौंपद्माविनपद्मु॥२९॥
जदपिश्रीरघुनाथजूसमसरवगस
रवग्य॥ नरकैसीलीलाकरतजिहि
मोहतनरअग्य॥३०॥ श्रीरामचंद्र
कला॥ निजुदंषौनहीसुभसीनहै

म

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गीतहिकातेकौनकहौ अवहौ॥ मोहि
तेकेवनमाअगईसिमोएमेमगुमोरै
जहौ॥ कहूंगतकक्षतुमसोकहि आइ
किधोतिहितासुउएहि हौ॥ अवहेकिधो
पनेकुटीयहऔरकिधौवहूलक्षमन
होहिनहौ॥ ३१॥ दोधक॥ धीजसोअ
पनेनाननुएकौ॥ पक्षीजटायुपरेए अ
वलोकौ॥ क्षत्रभुजाएमदेषकेंपेऔ
पक्षिकहौतेकोनसोजूष्पा॥ ३२॥ ज
टायुवाच॥ एषवएवनेलैगयोसी
तहि॥ हारघुनाथरहेसुभगीनहि॥ मेवि
नक्षत्रभुजाएमुकीनो॥ द्वैगयोविहू
लपक्षविहीनो॥ ३३॥ होजगमेसव
तेवडभागी॥ देहदसानुवकाएजलां
जी॥ जोवड्डभांगिनिवेदनगायो॥ ह
मप्रभुमेअवलोकनपायो॥ ३४॥ श्री
राम॥ साधुजटायुसदांवडभागी॥ तो

रा.चं.
६६
८

मनुमोवपुसो अनुरागी ॥ छूटोसरी रघु
नीपखानी ॥ रामहि मेनवजो निसमानी ॥
३५ ॥ मोटक ॥ दिसिक्षिनकोकरिदाटु
चले ॥ सरितागिरि देषतवृक्ष भले ॥ वनअं
धकबंधषिलोकतिदै ॥ दुबसारक्षैचल
एतवही ॥ ३६ ॥ जिहि भेवेको जियतुछिगु
नी ॥ तवबांनलै दोउ अंबाहदनी ॥ वह
छोडकेदेहचलो जवही ॥ यहज्योममैं
वेनकहोतवही ॥ ३७ ॥ पीछुमघवासु
हि आपदई ॥ गंधपतिनैरक्षसदेहभई ॥
फिरिकैमघवासहजुद्धठयो ॥ उहिके
धकैसीसमेवजह्यो ॥ ३८ ॥ दोहा ॥
गयोसीसुगडिपेटमेंपरोधरनअ
राइ ॥ तवकरुनगहियेमेंभ्रईदीनी
वाकुवडाइ ॥ ३९ ॥ वाकुदईहैकोसकी
आवैनगहिबाउ ॥ एमरूपसीतातरर
नउपाइअवनउपाउ ॥ ४० ॥ सुरसरितेआ

गेगेयमिलिहेनपसुग्रीव। दहेसीता
कोपवरवोटसुष-ग्रतिजीव॥ ४१॥ मो
दक॥ सरिनाइककेसवसोभिरही॥ ग्र
वलोकिनहांचककवाचकही। उरमेंसिम
प्रीनसमाइरही। जिनसोरघुनाइकवा
नकही॥ ४२॥ ग्रवलोकनतेजवहीजव
ही। दुषहोतहिमेतवहीतवही॥ यह वे
हनचिन्हकछूधरिये। सियदेहुवनाइ
कृपाकरिये॥ ४३॥ कतुचिन्हचकोक
छूकरिये। ससिके-ग्रवलोकनदूरि
किये। तिनकीमुषकीदुतिदेषिजि
ये॥ ४४॥ लक्षमनदंडक॥ कहिकेसव
जाचकके-ग्ररिचंपकसोक-ग्रसोक
लिये-ग्ररिके। लषिकेतुकीकेतिक
जालगुलावनतक्षनजानितजेदुरि
के। सुनिसाधुतुम्हेंहमपूछन-ग्रा
येरहमनमोनकहाधरिकै। सियको

कि सिय पंच उगाय कृपा करि

कछूसोधिकहैकरुनाकरुनामयसो
करुनाकरिकै॥७५॥श्रीरामनराज॥
हिमांसुसूरसोलगैसुवानवज्रसीवहै॥
निसालगैकसानसीविलेपअंग
कोदहै॥विसेषकालरातिसीकराल
रातिजानियै॥वियोगसीयकोनका
ललोकहाहमांनियै॥७६॥पद्धटि
का॥रहिभांतिविलोकसकलठौर
गयेसवरीपैदोऊदेवसिरमौर॥लि
यपादोदकतिहिषट्पवारि॥पुनअ
र्घ्यादिककीनेसुधारि॥७७॥हरिदैत
मैत्रतिनकोविसाल॥सुभकासी
मैपुनिमरनकाल॥तेंइआयेमेरे
धामआजसुफलकाननपजप
माज॥७८॥फलभोजनकोतिहिय

स

रेआनि॥भषिजगपुरुषआनिप्री
तमांनि॥तिहिरामचंद्रलक्षमनस

रूप॥मनधौरैचित्तजगजेतिरूप॥४९॥

॥दोहा॥सवरीपाउनपंथनहहरषिवि
गरीहरलोक॥वननिविलोकतहर
गयेपंपातीरअसोक॥५०॥तोटक॥
अतिसुंदरअतिसीतलसे॥जहरू
पअनेकनिसोभवसे॥वहुपंकजप
छिविराजतहे॥रघुनाथविलोकि
तलाजतहे॥५१॥सवरीरितुसोभति
सुभजहा॥लहेश्रीश्रमपेनप्रवेसत
हा॥नवनीरजनीरतहासरसे॥सिय
केसुभलोचनसेदरसे॥५२॥विजय॥
सुंदरसेवतसेरहसमेकाहाटककोदु
तिहाटककोहे॥तापभोरूभरेरोम
नरोचनलोकविलोचनकीरुचि
रोहे॥दूषिदईउपमाजलदेवति
दीरघदेवनकेमनमोहे॥केसवके
सवराइमनोकमलासनकेसिर

ऊपरसोहे॥५३॥लक्षमनचंद्रकला॥
मिलिचकिनिचंदनबानबेहेऽग्निमाहि
निन्याइनिहीमनिको॥मगमिनुविलोक
नचिनुजोलियेचंदनिसांवरपद्मनिको॥
प्रतिकूलसुकाह्किकेयोंहीएठेजियजा
नेनहीऽअपनीगतिको॥दुषदेननडाग
नुम्हेनवनेनकमलाकरहैकमलापति
को॥५४॥दोहा॥एष्पमूकपर्वतगये
कपवश्रीरघुनाथ॥देषवानरपांच
विभुमानोदाक्षिनहाथ॥५५॥कुसुं
विचित्रा॥नवकपिराजारघुपतिदेषे
मननानारहिनसमलेषे॥दुजवपुध
रिनहहनिमतऽआये॥बहुविधिदेऽआ
सिषमनभाये॥५६॥हनूमानवाच॥
मृवविधिहरवनमहकौंहो॥ननमन
स्तुमनमथमोहो॥सिरसजरावाकल
वपुधारी॥हौंहमानोविपनविहारी॥

५७ ॥ परमवियोगीसबरसभीने ॥ त
नमनएकैजुगतनिकीने ॥ कोतुम
हौकौंलगिबनआए ॥ किहिकुल
हौकौनेतुमजाए ॥ ५८ ॥ वक्षी ॥
पुत्रश्रीदसरथ्यकेबनराजसासनआ
इयो ॥ सियसुंदरीसंगहींहतीबिछुरी
सुसोधुनपाइयौ ॥ रामलक्षमननाम
संयुतसूरबंसबखानियो ॥ रावरेबनकौ
नहौकिहिभांतहमपहिचानियो ॥ ५९ ॥
॥ हनूमान ॥ दोहा ॥ यागिरिपरसुग्री
वनृपतिसंगमंत्रीचारि ॥ बानरलई
छिडायप्रियदीनोबालिनिकारि ॥ ६० ॥
॥ दोधक ॥ बाकहजोअपनोकरजा
नो ॥ मारहुबालिबिनैमहमानो ॥ ए
जुदैदेउजोताकीत्रियाको ॥ तोहम
दैहिबताइसियाको ॥ ६१ ॥ लक्ष्मन
आरतिकीप्रभुआरतिटारौ ॥ दीनअ

नाथनिकौप्रतिपारै॥ थावरजंगम
जीवजिकोइ॥ सनमुषहोतन्कनाए
षसोइ॥ ६२ वानरदेहहनिमंनुसि
धारे॥ सूरजकौसुतुयाहिनपारे
रांमकहेतउठिवांनरराइ॥ एजासिरी
सषिसोत्रियपाइ॥ ६३॥ दोहा॥ उ
ठिराजासुग्रीवतनवतनमन-अतिसुष
पाइ॥ सीताजूकेपटसहितनृपदो
नेआइ॥ ६४॥ नाटक॥ रघुनाथज
वपटभूषनदेषे॥ कहिकेसवप्रान
समाननिलेषे॥ अबलोकिनल
छ्मनकेकरदीने॥ आनदसोसिर
मांनिकेलीने॥ ६५॥ श्रीरामदंडक
पंजहरकिपंजरीरूनेननिकोकिधो
मीनमानसकोकेसोदासजलुहे
किजालहे॥ अंगनिकोअंगराग
गेरूवाकिगलसुहीकिधोकरिजे

वै हीकोउ कौकि हारु है ॥ वंधनरुमा
ऐकमकेलिकौकि नाडिवेकोनाजनो
कि विजनकि चव विचारु है ॥ मनको
जमनिकाकिकं जुमुषमू दियेकोसी
नाजूकोउ न्नीयसव सुषमारु है ॥ ६६
॥ स्वागता ॥ वानरं दूनवयोहसिवालो
भीनभेदजियकोसवबोलो ॥ आग
वानवसाषकीजू ॥ ऐमचं द्रहीयो
हधरीजू ॥ ६७ ॥ सूजेपुत्रनवजोवन
जानौ ॥ वालिजो खदुभांतिवषां
नौ ॥ नारिछीनतिहिभांतिलइजू
सोअसवविनतीविनईजू ॥ ६८
॥ चौपही ॥ नहीवालनयनाभरि
नाना ॥ हमलक्ष्मवेजेभाना ॥ क
छुकहिनाआनिहिनसेगए ॥ र
घुपवेरजुद्धआनिठऐ ॥ हयेदद
मोहनोवालिवलवीर ॥ नासुवे

रुक्मांजलनिधीरा॥ भग्योएकगहवरमे
गयो॥ हमेद्वाररापिभीतरफिरगयो॥७०
मयोजानिमेसिलनेदद्वाररा॥ राजवैठन
हिकीसम्हाररा॥ छुटयेमाससमाररा फिर
आयो॥ हमेदपीसिकेनवधायो॥७१॥
॥दोहा॥ भागीमेदसहूदिसांवऔरकहू
नजाइ॥ नवआयोइहिठौरिषज्ञा
नोआपतपाइ॥७२॥ स्वांगना॥ एक
वरसएकहनीतो॥ मानतालवलवन
गुनीने॥ रामचंद्रनववानचलायो॥ ना
लमेदफिरिकैकरआयो॥ ७३॥ विज
य॥ वावनकोपदलोकनिमापिज्यो
वानकेवपुमाअसिधायो॥ किसव
सएताजलुसिंधुनिपूरनिसूरएहैको
पदपायो॥ कांमकवाननुचामवकु
दिकेकांमपेआवतज्योजगगायो॥
रामकोसारिकसातद्रूतालनिमेदि

केरामहिकेकरआयो॥ ७४ ॥सुग्रीववाक्य॥ यहअद्भुतकर्मनआरपेहोरी॥ सुरसिद्धप्रसिद्धनमैतुमकोरी॥ निकसीमननैनसिगरीदुचतारी॥ तुमसोप्रभुपायोसदासुषदारी॥ ७५ ॥लक्ष्मनसोरठा॥ जिनकोनामविसाल॥ अषिललोकभेदनपतिन॥ तिनकोकेसवदास॥ सप्रनालभेदनकहा॥ ७६ ॥ श्रीरामवाक्य॥ अतिसंगतवानरकीलघुतारी॥ अपराधविनावधकोनवरारी॥ अवहेकछुमोमनआसिहीइछा॥ हतिवालिहदेहुतुम्हेनृपसिछा॥ ७७ ॥इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रकायांप्रश्रीअनुग्रहवनेनंनामहादसप्रकासः॥ १२ ॥दोहा॥ प्रातेहेप्रकासमेवालिवधोकपिराज॥ वरषावर

ननसर्दपुनउदधितलंघनकाज॥१॥
लंकविलोकनसिषपकोरावनवचनवि
सेष॥ मुद्री अरु हनिमंतकोदाससनबं
धनलेष॥२॥ चौपई॥ सुग्रीवगएस
गरामलियेतव॥ गजेकीपुरद्वारगए
जव॥ वालिचलौसुनिक्रोधकेजोम
ह॥ वानकरीत्रियपरीहासियमह॥३॥ नराए
वाला॥ लीनेसहायअएहेजुद्धहि॥ को
तुसहेरघुनाथकेकुथाहि॥ मेनकछूअ
पराधकीनसुनि॥ जानहिगवलजुध्य
कियेपुनि॥४॥ दोधक॥ वालचलौहठि
केरनजश्रन॥ जुध्धकियौदुहूसोदास
अन॥ रामहिवालननसूझिपरीमन॥ भ
गसुग्रीवगएफिरवावन॥५॥ दोहा॥
रामसुफेरिवुलाईयौनिकटन आवेत्रा
स॥ तुममरोवनमेलियोजियमेभ
योबदास॥६॥ कैसीहूकेजौहूलेगयेअुर

जुद्ध फिर जाइ॥ बाल हयौ सुठ काहि ये
न वहि नर घेर पाइ॥८॥ सुंदरी॥ रवि पु
त्र वालि सो हैं ति जुद्ध॥ रघुनाथ न येम
न मां अकुद्ध॥ सये क हैं सौ उर मित्र
काम॥ नव भूम गीं को कहि हैं राम॥९॥

७६ कपु चेत न भयौ बल निधांन॥ रघुनाथ
किलाकिय हाथ वांन॥ चौ रजटा नन स्या
म गात॥ वन मा ललस्यिय मनि विमला
त॥१०॥ वाल॥ पद्धडिका॥ जग आदि
मध्य अवसान एक॥ जग मोह ति हो
धो विपु अनेक॥ तुम सदा सुद्ध सब
को समान॥ किहि हित न हतौ करुनानि
धांन॥११॥ श्रीराम॥ सुनि बास बसु
त बुधि बलनि धांन॥ मै सरन गनि हि
त हे प्रान॥ यह सांटौ लेक्क स्या वत्ता
र॥ तुम हू हो न बसंसार पार॥१२॥ रघु
राजरंक तै राजु कीन॥ जग राज बिरद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंगदहिदीन॥नवकिष्किंधानारामभे न सुग्रीवगये अपनेनिकेत॥ ९३॥ दोहा॥ किऐानपतिसुग्रीवहनिवालनव लीनेधा॥ गंधप्रश्नवन अद्रिसौ लछमनश्रीरघुबीर॥ ९४॥ त्रभंगी॥ देष्योसुभगिरवासकलसोभधर फूलनिवरबहुफूलनफेरे॥ सगसरभोक्ष जनकेसरिकिंगनमनकुधरनिसुग्रीव घेरे॥ सगसिवाबिराजेगजमुषगाजे पाभनवोलेचित्तहरे॥ सिरसुभचंद्र कधरपरमेदिगंवरमानकुहरा अहिराजधेरे॥ ९५॥ तोमर॥ सिसुसोलगे सगधाइ॥ वनमालज्योसुरराइ॥ अहिएजंमोरहिकाल॥ बहुसोससोमनिमाल ९६॥ स्वागता॥ चंदमंदद्युति वासरदेषो॥ भूमिहीनभुवपालविसेषो॥ मित्रदेषिपहलाजतुरे॥ राजसा

जविनसीनरहैहेसो ॥१८॥ दोहा ॥
पतिनीविनपतिहीनअतिपतिविन
पतिनीमंद ॥ चंदविनाज्यौंजामिनी
जामिनविनज्यौंचंद ॥१९॥ सो ॥ गना ॥
दीषिएंमवरषारितुआई ॥ ऐमऐम
वहुधादुषदाई ॥ आसपासनमकी
छवछाई ॥ तिहैसकछुजांनिनजा
ई ॥१९॥ मंदमधुनिघनगाजे ॥ सूना
रजनुआवमवाजे ॥ ठौरठौरचपला
चमकेज्यौं ॥ इंद्रलोकत्रियनाच
तिहेसो ॥२०॥ मानक ॥ सोहेघन
स्यामलघोरघनै ॥ मोहैतिनमेवग
पातमनै ॥ संषावलिपीवकुधांज
लसो ॥ मानौतिनकोउगिलेवल
सो ॥२१॥ सोहेअतिसुंदरएसन
मे ॥ नानादुतिहीसनिहैघनमे ॥ हा
रावलिसीदिवहामेनो ॥ वरषाग

सो

मवांधियंदेवमनो ॥२२॥ नारक ॥ घन
घोरमनौ दसहूं दिसधाये ॥ मघवाजनुस
रजैपेचढिआये ॥ अपराधविनासवेक
ननताये ॥ तिनपीडनपीडितहोउठिधाये
॥२३॥ अतिगाजनवाजनदुंदिभीमानो ॥
निरघातनसैवेपरिघातनवषानो ॥ धनु
हेयहहेगोरमदाइननाही ॥ सरजाल
वैहेजलधाख्रघाही ॥२४॥ भरचात्र
कदादुरमोरनिबोलै ॥ चपलाचमके
नफिरैषगषोलै ॥ दुनिवंननिकोवि
परा अतिकोनी ॥ धरनीकहचंदवधू
धीरदीनी ॥२५॥ नहनीयह अत्री
बीसुकेसी ॥ उरमैहमचंद्रप्रभासम
दैसी ॥ वरषानसुनैकिलकारी ॥ स
वजांननहैमहिमा अहिमानी ॥ र
अभिसारिनिसीममुंजोपरनारी ॥
सनमारगमैरनकौ अधिकारी ॥ म

हूतौ

तिलोभमहां अति छोरकुई है ॥ दुजए
जमुमित्र प्रदोषमई है ॥ २७ ॥ दरक ॥ भो
हे सुरचापचारुप्रमुदित पयोधरभू
षनजराऊ जो तिन्हडितनारलाई है ॥ दू
रकोरसुषमुषसुषमासमसीके नैन अ
मलकमलदलनि निकाई है ॥ केसोदा
स प्रबलकैनेकागमनरहमुकतासु
हंसकसवरसुषदाई है ॥ अमरवलि
तमतिमोहै ॥ नीलकंठजूकी कालिका
कि चषाहरषि हिये आई है ॥ २८ ॥ दो
हा ॥ वरतें केसव सकल विधि विषम
गा ठनम आहि ॥ कुपुरिषि सेवा जे पो
भई सेनतनि फैलाइहि ॥ २९ ॥ चंद्रक
ला ॥ कलहंसकलाविधि बंजनकं
जकछु दिनके सब देषिजिये ॥ गति
आंननलोचनपाइनिकी अनुरूपक
सेमनमानिलिये ॥ दुहिकालकएल

त

तिसोंधिसवै दृटिकै वषेषासिस दूरि कियै
अवधौ विन प्रान प्रिया रहि है कहि कौं
नहिन अवलंवहिये ॥ ३० ॥ दोहा ॥ बीनै व
रषा काल ज्यौं आइ सरद सुजानि ॥ ग
ये अध्यारी होति ज्यौं चारु चांदनी रानि
३१ ॥ मोटनक ॥ दंतावलि कुंद समान ग
नौ ॥ चंद्रानन कुंतल चौर मनौ ॥ भौ है
धनषं जननैन गनौ ॥ राजीवनि ज्यौं
पदपांनवनौ ॥ ३२ ॥ हारावलि नीरज ही
यरमै ॥ है लीन पयोधर अंवर मै ॥ पाटीर
जुन्हाइय अंग धरै ॥ हंसीगति केसव चित्त
हरै ॥ ३३ ॥ श्री नारद की दरसै मति सी ॥ लो
पैतमता अपकीरति सी ॥ मानौ पति देवि
न की मनकै ॥ सनमारग की समुझै गति
कौ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ लक्षिमनदासी वृध्या
सी आई सरद सुजानि ॥ मनहु जगावन कौं
है मै बीतै वरषा रानि ॥ ३५ ॥ कुंडरिया ॥ ता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तेनपसुग्रीउथेजेजे अवहीनात॥ कहि
योवचनसकोपसोकुसलनचाहोगा
त॥ कुसलनचोहोगातजाइ अबवालहि
देषो॥ काकुनसीनासाधुकामवसएम
नलषो॥ रामनेदेषोचित्रलहेसुषसंप
तजानें॥ मित्रके रागहिवोहकानकीज
तुहेतोने॥ २६॥ लछिमनकिषेधाग
षवचनकहकरिकोधु॥ ताएनवस
मुआइयोकोनेवकुनप्रवाधु॥ २७॥

॥सुग्रीम॥ दोधक॥ वालिलिये हनिमं
तनवेज॥ त्यावोसजिवानरएजअवे
जू॥ वारलेंगेनकछुविरमाई॥ ऐकन
काऊहेथमाही॥ २८॥ त्रभंगी॥ सु
ग्रीवसघातीमुषदुतएनीकेसवसा
युधसूनेंए॥ आकासविलासीप्रभा
प्रकासीनवहीवानरआएगए॥ दिसि
दिसिअवगाहनसीनहचाहनजूथप

दोहा॥

रा॰चं॰ ७५

जूथसवैपठये॥ नलनीलरिक्षपतिअंग
दकेसगदक्षिनदिसकौविदाभये॥ ३९॥ दु
दोहा॥ बुधिवलविक्रमवासजुतसाधुस
मथिरघुनाथ॥ वलअनैहनुमंतकौमु
दरीदीनीहाथ॥ ४०॥ हंसकंद॥ चंडवरन
छंदधरनमुडगगनधावही॥ दछिनदि
सिदछिनदे लछिनद्वैपावही॥ वीरवर
नधीरधरनसिंघतरसुभावही॥ नांम
परमधामधरमरौकामगावही॥ ४१॥
अंगदअनुकूला॥ सियानपारीअव
धिविनासी॥ हो कृसवैसागरनरवासी॥
जौघरैजेजेसकुचअनंना॥ मोहिनछां
डेजनकनिदंना॥ ४०॥ हनूमाना॥ अं
गदरछाारघुपतिकीनी॥ सोधिनसी
ताजलथललीनी॥ आरसुछांडोक्र
तउरआनौ॥ होकृकृतघीजौसिख
मानौ॥ ४३॥ अंगदरंडका॥ जीएनज

त

म

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टायुगीधुधंनरएकुजिहतोक्रितउतनवि
रथक्रीनोसहीनिजप्रांनहांनि॥ हने
हनिमंतवलिवनतुमपंचजनदीनेह
तेनूपुरकछुकनरहपजांनि॥ आएति
एकारतश्रीरामनंभवाएवाएलीनोन
छिडाइहनुमसीताअतिभीतमांनि॥ गा
रुडुजराजप्रियकाजनपुकारलोगेभो
गवेनरकघोरवोरकेअभयदांनि॥४
४॥ दोहा॥ सुनिसंपातसपक्षहेरांम
चरितसुषपाइ॥ सीतालंकामाअ
हेषगपतिदइवताइ॥४५॥ दंडक॥
हारिकेसोवांहनकेविधिकेसोरम
हंसुलीकसीलिषततभयांहनके
अंककी॥ तिजकीनिधांनएममुद्रि
काविमांनकेधौलछिमनकौक्षू
टोवानएवनतिसंककी॥ गिरराजंग
रेतेउडानौसुवरनेअलिसीतापरपं

कजसदाकलंककंरककी॥ हवाइ अैसी
क्षयिकेसोदासञ्जासमांनमेकमांनके
सीगोलाहनूमांनचलेलंककी॥४६
॥दोहा॥ वीचगयेसुरसामिली आधे
गिनीना॥ लीलिलियेहनिमंननिहि
कदउदकीफार॥४७॥ मैनाकनाक
पतिसकेउंदितजानिवलवंत॥ अं
तरिक्षहीलक्षिपटअक्षाक्षियोहनि
निमंत॥४८॥ नाटक॥ कछुएनगयेलंक
रिदसदसासी॥ पुरमाझचलेवनराजविलासी॥ जवहीहनिमंतचलेतजु
संका॥ त्रियहेमगुणकाहीतवलंका॥
४९॥ लंका॥ कहिमोहितलंघचले
तुमकोहो॥ अतिसूक्षमरूपधरेमन
मोहो॥ पठयेकिहिकानकोकन
चलेहो॥ सुरहोकिधोकाउसुसभ
लेहो॥ ५०॥ हनुमान॥ हमवानरेहैं

घुनाथपराये॥ तिनकीतहनीहैवि
लोकनआये॥ लंका॥ हनिमोहिमस
मतिभीतहैये॥ हनूमान॥ तहनीहि
हैतेकवनेसुखपैये॥ ५१॥ लंका॥ तुम
मोरेहियेपुरपेठनेपैहो॥ हठकोठिओ
षाहीफिरजैहो॥ हनिमंतहटीवहथा
परमारी॥ तजिदेहभरोतवनैवनारी
॥ ५२॥ धनदपुरीहोरावनलीनी॥ वहुवि
धिपापनिकोरसभीनी॥ वुतुएननचि
न्हींचिंननकीनो॥ वहुकरुनाकरमोक
हदीनो॥ ५३॥ जवदसकंठसियाहर
लैहै॥ हरिहनिमंतविलोकनजैहै
जववहनारिहहैतेतजिलंका॥ तवप्र
भुहोइविभीषनलंका॥ ५४॥ चल
नलगोतवहीयहकीजौ॥ मतकस
रीरहयावकदीजौ॥ यहकहिजानभ
इवहनारी॥ सवनगरीहेनिमंततनिहा

री॥ तवहीरावनसोवनपायो॥ मनिम
यपालिककोछविछायो॥ तवतरुनी
वहुभांतिनिगावे॥ विचविचआवअ
वीनवजावे॥ ५६॥ मनकुंचितापरमांन
नहुसोहै॥ चहुंदिसिप्रेतवधूनिधिमो
है॥ जहजहजाइतहीदुषदैनो॥ सिय
विनदेषिसिगरोघरसूनो॥ ५७॥ भुजंगप्र
यात॥ कहूंकिन्नरीकिंनरीलैवजावे॥
सुरीआसुरीपांसुरीगीतगावे॥ कहूंज
छनीपछनीकोपठावे॥ नगीकंन्निका
पंन्नगीकौनचावे॥ ५८॥ पियेएककहा
लाहुहेएकमाला॥ नैचेचित्रसारीव
नीएकवाला॥ कहूंकोकलाकोककी
कारिकाकै॥ पठावेसुवालैसुकीसार
काकौ॥ ५९॥ फिरैदेषिकैराजसाला
सभाकौ॥ रहीझिंकेवारिकाकीप्रभा
कौ॥ फिरैवोरचोंहूंचितैनैसुद्धगीता॥ वि

लोकी भले सिंसिपा मूलसीता ॥ ६० ॥
धेरे एकु वेनी मिली मेलसारी ॥ मना
लीमनो पंकसोभा धिकासी ॥ महां ए
मएं मेरे दीन वांनी ॥ चडुं वारहे एष
सो दुष्पदांनी ॥ ६१ ॥ ग्रसी बुद्धसी चित्र
चिंतातमानो ॥ किधो जीभ दद्दावली मे
वषानो ॥ किधो घीके राहनारी निली
नो ॥ कला चंदकी चारुपीयूषभीनी ॥ कि
धो जीवकी जोतमायी भीनी ॥ कुविद्या
निकमध्यविद्याप्रवीनी ॥ मनो संवरा
स्त्री निमेकाम वामा ॥ हनूमंतयेसील
षौएं मएंमा ॥ ६२ ॥ नहादेवदेषीदस
ग्रीव आयो ॥ सुनोदेवि सीता महादु
ष्यपायो ॥ सबै अंगुले अंगहीमें दुरा
यो ॥ अधो द्रष्टिके अश्रुधारा अन्हा
यो ॥ ६४ ॥ रावन ॥ सुनो देवमोत्यो क
छूद्रष्टकीजे ॥ इता साचु तोएम कीजे

नि

ए.चं.
७८

नकीजे ।। वसेदंड काम्न्यदेषोनकोऊ
जुदेषेमहांवाचौहोहिसोऊ ।। ६५ ।। कन
घ्यौकुदानाकुकंन्याहिचोरे ।। हिन्नूनग्न
मुंडीनकोजोसदाहे ।। अनाथ्येसुनेोमे
अनाथ्यानमारौ ।। वसेचित्रदंडीजटीमु
डधाऐ ।। ६६ ।। तुमेदेविदूषेहि तूनाहिमां
ने ।। उदासीननोसोसवेताहिजाने ।। महा
निर्गुनीनांमनाकोनलीजे ।। सदादास
मोपैक्रपाक्यौनकीजे ।। ६७ ।। अदेवीनि
देवीनिकाहाकूएनी ।। कौसेववांनीम
घोनीमडानी ।। लिषेकिंन्नरीऐकिंन्नरी
गीतगावे ।। सुकेसीनचेउर्वसीमांनपा
वे ।। ६८ ।। अीसीताजमात्नी ।। जिनवीच
देवोनीसियगंभीरवांनी ।। दसमुषको
तूकोनकाराजधांनी ।। दसरथ्यसुतदाषी
रुद्रब्रंम्हानभांसे ।। निसिचरवपुऐतूं:
क्यौनस्योमूलनासे ।। ६९ ।। अतितन

धनरेषानेकुनाकीनजाकी॥ चलषग
धाएकोसेहूनिष्टताकी॥ विदुकनघू
भक्षिकैवायुजीवे॥ सिवसिरससिश्री
कैदुष्टकैसमुद्धीवे॥ ७० ॥ उठैठउठिस
ठह्यांनेभागेतोलीअभागे॥ समबचन
बिसपीसर्पजोलीनलागे॥ विकलसकु
लनाथुआसुहीनासुदेषोसुनेए॥ नि
पटमतकतोकोाषमोऐनमेऐ॥ ७१॥
॥ दोहा॥ अवधिदईहैमासकीकहे
ाषिसिनवाल॥ जैपींसमुझैसमझा
इ जोजुगतेछुाएनितनछाल॥ ७२॥
॥ छंद॥ दृषिदषिकेअसाकराजप
त्रिकांकह्या॥ दहिमाहिवगेआगि —आनि
अंगहूरह्या॥ षेपाइपवनपुत्रउाि
मुद्रिकादई॥ आसपासदषिकेउठा
इहाथकेलई॥ ७३॥ तोमर॥ कछुल
गोसियपीहाथ॥ यहअभिनिकेसोना

ए॰च॰
७६

थ॥ यह कहैं लषि न वनारि॥ मनि जरित
मुदरी आहि॥ ७४॥ जब वांचि देषौ नाउ॥
मनु पैयों संभम भाउ॥ आवाल नै रघु
नाथ॥ यह धरी अपनै हाथ॥ ७५॥ विधु
रिपु कौ न उपाउ॥ किहि आंनि यो इहि
ठाउ॥ सुधि लहै कौ न उपाउ॥ अब का
हि पूछन जाउ॥ ७६॥ चहुं धा चितै न सब
त्रास॥ अवलोकियो आकास॥ नर रूसा
षवे मोनी हि॥ नवपरै वांनर डीठि॥ ७
७॥ सीताजू॥ नवक हीकोनं आसि॥ सु
र असुर मो मन भाहि॥ कै जक्षपक्ष
विरूप॥ दसकंठ वांनर रूप॥ ७८॥ क
हि आपनौ तूं भेद॥ अति चित्त उप
जतु षेद॥ कहि वगि वांन रयाप नन जो
हिटै है आव॥ ७९॥ वानर पाठका॥ करि
जोरि कै हों है पवन पूत॥ जिय जांनि ज
निन रघुनाथ दूत॥ रघुनाथ कौ नद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरष्यनंद॥ दसरथ्थकौनंदनअजय
चंद॥ ८०॥ किहिकारनपठयेरिहिनिके
त॥ निजुलैनदैनसंदेसहेत॥ गुनरूप
सीलसोभासुभाउ॥ कछुरघुपतिकौल
छनवताउ॥ ८१॥ हनूमान॥ अतिजद
पिसुमित्रानंदभक्ति॥ अतिसेवक
अतिसूरसक्ति॥ अतिजदपिअनुज
नीयौसमान॥ अतितदपिभरथ्थभा
वतिनिदांन॥ ८२॥ ज्यौंनाराएनउरश्री
वसंति॥ त्यौंरघुपतिउरकेछुदुतिल
संत॥ जगजितनैहैसवभूमिभूप॥
सुअसुनपूजततामरूप॥ ८३॥
॥सीताजूनिसिपालका॥ मोहिपर
तीतिइहिभांतिउपजेनही॥ प्रीति
कहिधौसुनरवांनरकैयोभई॥ वा
नसचवनेपरतीतिहारियोदई॥ अ
व्रअनलवाउलनाउमुदीनई॥ ८४॥

॥दोहा॥ अअगुवारिषिसिंगाएहरिषिक
छुसीतासुषदसुभाइ॥दषिदषिप्रि
यमुद्रिकावरनेतेहेवहुभाइ॥८५॥पद्धि
ठका॥यहसुनिकिननमदुष्पहार॥सम
कनाकिधौंउरसीतकाए॥कनकीरति
सीसुभसहितनाम॥किधौंएजासि
रीमहतजीराम॥केनारइनउरसमल
संत॥सुभअंकनऊपरश्रीवसंत॥वर
विधासीअनंददांनि॥जुतअसरापर
मनसिवामानि॥जनुमायाअक्षरस
हितदेष॥कैपातीनिश्चयदंनिले
ष॥प्रियप्रतीहारिनीसीनिहार॥श्री
रामाजयउच्चारकारि॥प्रभमांनो
पठईसषिसुजांन॥जगभूषनकौभ
षननिधांन॥निजु[illegible]आईहमको
सीषदेन॥यहकिधौंहमारोमरम
लैन॥८६॥ ॥दोहा॥ सुषदासिषदा

अर्ष्येदासदाजसदानार ॥ ऐमचंद्र
कीमुद्रिकाकिधोपमगुरनार ॥ ६० ॥
वङ्कवनोसज्जि हसिप्रिसानमगुनह
एप्रमान ॥ जगमागटएसावनी
सूएजेकिानसमांन ॥ ६१ ॥ दोधक
कहुकसलमुद्रिकेमेएमगान ॥ सु
निलछिमनसहितसमांनजान ॥ य
ह्वचन्नदेहिनबुद्धिवंत ॥ किहिकारन
कहिहनमंतसंत ॥ ६२ ॥ हनूमान
दोहा ॥ तुमपूछनिकहिमुद्रिका मो
नहोनइहिनाम ॥ कंकनकीपदवी
दईयाकहतुमविनएम ॥ ६३ ॥
॥ दंडक ॥ दीरघदरीनिवसेकेसोद
सकेहरीज्योकेहरीकेदेषेवनक
रीज्योंकपतहे ॥ वासरकीसंपति
उलूकज्योनचितवनचकईज्यो
चंदचितेचोगुनोचपतहे ॥ केकी

ए० चं०
८१

सुनिप्यारीजैसो बिरलानजानघन
स्यांमघननकी घोरजीवजावासेज
रतैहै ॥ भैयारजैसोभवतवनजोगीजैसे
जगतरैनिसांकनजैसोंनामसुषतैऐ
हीररतैहै ॥ ६४ ॥ सुंदरी ॥ राजसुताइ
कवातसुनैापुनि ॥ एमचंद्रमन
माअकहौगुनि ॥ रानिदीहजमुराज
जनीजनु ॥ जानुनानिननुजाननु
हेमन ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ दुषुदेषसुष
होइगोदुष्यनसुष्याविहीन ॥ जैसात
पसीतपसानिकरहैानपरमपदली
न ॥ ६६ ॥ वरषावैभवदेषिकैरषी
सरदसकांम ॥ जैसैरनमैकालभ
टभैरिभैरिजनुबांम ॥ ६७ ॥ दुष्यदे
षिकरदेषिहोतुवसुषआनंदकंद
तपनतापतपिहैसनिसजैसेसीत
लचंद ॥ ६८ ॥ आपनीदसाकहावहोदी

परस्पासी देहिं॥ जानिजानिनिसवा
सराहिकेसवसहितसनेहं॥ दो॥ सुगति
सुकसमुनेनसुनिसमुखसुंदतिसुसे
न॥ दासावेगोवगहीतुमकोसासि
जेनेन॥१०५॥ गीतका॥ कछुजननि
दूहप्रतीतनोतेरामचंद्रहि आवही॥
सुभसीसकीमनिदईयहकहिसु
जसतुवगुनगावहीं॥ सबकालहू
जो अमर अति अरुसमाजप
जसुपाइहो॥ सुत आजतेरघुना
थके तुमपरमभक्तकहाइहो॥१
०६॥ चक्षरी॥ कजोपपिपगतो
रउपवनकोदृक्षउखारियो॥ त
वेवधियोतहजंबुमालीदूतजा
इपुकारियो॥ उठिदोरियो मनक्रो
ध अति करसोधकपिजवजानि
यो॥ वहु आइयो तिहिटोरनव

हीसंकनहिउरआनिसो॥१०२॥अ
तिजोरसोहनिमंतदेषिआनंतवांन
नमारियो॥मनमानियोनहिहै॥म
मंतवकपिसकलसेनसघारियो॥पु
निजंबुमालीसोभिरलरीजुगल
वाहुउषारिके॥मठपेठकेआभिला
षसोपुरमेचरीनीडारिके॥१०३॥पी
योतिरावनकीसभातिहिदेषिके
पहिचांनियो॥तहपंचसुतनमत्रीनि
केउठिसोसुआइसुमानियो॥तन
त्रांनकसआसवांनधनतिहिकाल
लेतिगएतहां॥तदूतपूतसमेतसो
दाजंबुमालियपरोतहा॥१०४॥वषे
तिवानसमानघनतनभेदियोहनि
मंतको॥तवधारिपोकपिनादक
रकैरोककोमयमंतको॥पठनालि
लेसिगोरहैनेउरसालरावनके

भयो॥ तिहिकाल अक्षकुमारबो
लिप्रहस्तकों आइसुदेयो॥१०५॥न
राजछंद॥ जुप्रहस्त हस्तलै हथ्या
रहि आपने॥ कुमारि अक्ष तिक्षबां
नछांडियो घने घने॥ भयो कपीस
क्रुधसुध अक्षहारियोसघारि॥ मु
ष्टमारियो प्रहस्तसीसमंतवेप्रचा
रि॥१०६॥दोहा॥ मारे अक्षसुनें
जहीरावन अतिपछिताइ॥ इं
द्रजीतसोंयहकही बानरजिय
तनजाइ॥१०७॥तोटक॥ सज
केइंद्रजीतगये जबही॥ हनुमंत
सोंजुध्धजुरेतबही॥ बलिवंतग
नोनवहीहियो॥ मनमेंगुनएं
कउपाउकियो॥१०८॥तोमर॥ तब
इंद्रजीत विलोक॥ विधिपांसि
दीनीएक॥ कपिबंधतेजहिजां

रा.चं.
८३

नि॥ बहसीस लीनी मानि॥ १०९॥
गीतका॥ करजोरि खगपर तोरि उपव
न कोरि किंकर मारियौ॥ जंबुमाली
मंत्रसुत अरु पंच मंत्र संघारियौ॥
रन मारि अक्ष कुमार बहु विधि
इंद्रजीत सो जुद्ध कै॥ पुनि ब्रह्म अ
स्त्र प्रमान मानि सु बस्य भो मन सु
द्ध कै॥ ११०॥ इति श्रीमत्सकल लोक
लोचन चकोर चिंतामनि श्रीरामचंद्र
चंद्रिकायां हनुमान बंधन वर्ननो नाम
त्रयोदस प्रकास:॥ १३॥ दोहा॥ य
है चौदसे प्रकास मैं है लंका दाह॥
सागर तीर मिलान कौ करिहै रघुकु
ल नाह॥ १॥ विजय॥ कपि कौ न
मूं अक्ष कौ घाव न कदून बलीय सुनं
दनजू कौ॥ कोपु सुनें दस नैन स एब
र दूषन दूषन भूषन भूको॥ साग

कैसे तेरो जैसे से गोपद काजु कहा सि
य चोर हि देषो ॥ कैसे वधायो जु सुंदर
नेरी छुद्र गैसो वनपान कलेषो ॥ २ ॥
॥ चामर ॥ कोरि कोरि फेरि फेरि तो
जजेन मारियो ॥ काटि काटि फाटि
फाटि मांसु बांटि डारियो ॥ षाल षै
चि षैचि हाड भूंजि भूंजि षाउं रे ॥ पी
रि टांगि मुंड लंक लै उडाइ जाउं रे ॥ ३ ॥
॥ विभीषन ॥ दूत मारि जे न राज री
स छोड दीजई ॥ मंत्री मित्र पूछि कै
सु श्रोर दंड दीजई ॥ एक कौं कुमारि कै
व डौ कलंक लीजई ॥ बूंद सू षियो व
हा म हा समुद्र छीजई ॥ ४ ॥ नलि ने
ल वेगि छोरि जोरि जोरि बीस सी ॥ ले
श्रपार एरु अनंद नसून सोक सी ॥ पं
छ्म वन पूत की सवार बार दे नहीं ॥
अंग को घराइ कै छुडाइ जात भो

नहीं ॥ ५ ॥ चच्चरी ॥ धांम धांम नि अग्नि कीवङ्क ज्वाल माल विराजहीं ॥ पव नकी झक झोर तें अमरी मरोष नभा चहीं ॥ बाजबार न सा र्फो सु कमा जो रनभाजहीं ॥ कुद्रज्यों विपदाहि न्त्रा वति छोरजा न नलाजहीं ॥ ६ ॥ भुजंग प्रयात ॥ जरी अग्नि ज्वाला अटा से तें देख्यो ॥ सखा लके मे घ संध्या समे ज्यौं ॥ लगी ज्वाल माला व लीनी लए जे ॥ मनो खनेकी किंकिनी नाग साजे ॥ ७ ॥ लसे पील छ्या वलीज्वाल मानो ॥ हुके बाटनी लंकव छोज मानो ॥ जरे जूह नारी चढी खि न्न सारी ॥ मनो चे नकामे सती सम धारी ॥ ८ ॥ कहूं रैन चारी गहे जो निगाटे ॥ मनो शीस रोषा ग्नि मे कां मडाटे ॥ कहूं कामिनी ज्वाल माला निभोरे ॥ नजे नील सारी अलंका

रनौरै ॥ ९ ॥ कहूं औरऐनैखैधूमछं

है ॥ ससीसूं मांनौ लसैमेघमाहीं ॥

जैसैसहस्रसालामिलीगंधमाला ॥

मिलै अग्निसीमानौ लगीदवज्वाला

१० ॥ चलीभागचौंहूंदिसाराजधांनी

मिलीज्वालमालाफिरैहुब्यदांनी

मनौ इसवानाउलीलाललोलै ॥

सवैदैसजायानिकेचित्रडोलै ॥

११ ॥ सवैया ॥ लंकलगाइदईहन

मंतविमांनवचे अनितद्भमुखीहू ॥ पा

तिफरैउचेरैवकुधामनिराणीरटेपा

नीपानीदुखीहू ॥ कंचनकोपिघलो

पुरपूरपयोनिधिमेपसरैनसुखीहू ॥

गंगजाएमुषीगनिकैसौगिरामि

लीमांनो अपारमुषीहू ॥ १२ ॥ दो

हा ॥ हनमंतलगाईलंकसववचे

विभीषनधांम ॥ जैसें आनोदपवे

रा.चं.
८५

रैसेपंकजपूरवजांम॥७३॥संजुत॥
हनुमंतलंकलगाइकै॥पुनिपूक्षसि
धुवआइकै॥सुभदेषिसीतहपापरे
मनिपाइ-आनदजोभरे॥७४॥संदे
सयहसीताकहे॥पुरक्षनसुनतक्षिन
दहो॥इक-अंछषगाहिहोनोकियो॥त
बजाइकै-आसनलियो॥७५॥दोहा॥
संदेसपाइसुषपाइजषनतचहिचले
हनुमंत॥पुष्पवृसिदेवनिकरीसाग
रतरन-अनंत॥७६॥संजुत॥इहपार
-अंगदभेटियो॥सबकेसबेदुषमेटि
यो॥जैसीबवरवीतोसबे॥सिगरीक
हीतैसीतबे॥७७॥अंगदनामरा॥सी
तानलायेवीर॥मनमाभउपजंत
पीर-आवेसोकोनउपाइ॥परपुरि
षछोवकाइ॥७८॥जबरांमधरिहेचां
पु॥रनरावनेसेनाप॥वरषेसुघनस

रधारि॥ लंका वहनिन हि वारि॥१९॥ च
लि अंगदादिक वीर॥ तव आइयो व
लवीर॥ सुभवाग नो सुग्रीव॥ फल
दृषक लपो जीव॥२०॥ तव षाइयो फल
फूल॥ रहियो सुके वलमूल॥ तव दे
षि दधिमुष आइ॥ वह मारियो कपि
धाइ॥२१॥ अंत तो सुवाल कुमार॥ ध
रि मारियो वकुवार॥ भगि लै गयो नि
जजीउ॥ जह वैठियो सुग्रीउ॥२२॥ तो
टक॥ उहि वानरसेन पसो विनई॥ व
हु भांत न अंगद की ढिठई॥ सुनि के
हसि राम कहीन वही॥ सियसा धुव
लाइसु नो अवही॥२३॥ दोहा॥ ले
आये सीता षवरि तो तैमन अति फू
ले॥ उन को वेग वुलाइयो नरिधीर
यो चित भूल॥२४॥ संजुता॥ रघुना
थ पेज व ही गये॥ उठि अंकला उनको

भए॥ अबमैकरुनाकरनीकरी॥ सिरपाइ
कीधरनीधरी॥२५॥ दोहा॥ चिंतामन
सीमनदई रघुपतिकरहनिमंत॥ सी
ताजूकौमनुरयपैजोअनुराग अनंत
॥२६॥ दोधक॥ श्रीरघुनाथजहीम
नदेषी॥ जीमहभागदसासमलेषी॥
फूलउठैमनुज्योनिधपाई॥ मांनहु
अंधहिडीठसुहाई॥२७॥ तामरस
मनिहोहिनहीमनुआरसिसाकौ॥
उरमैप्रगटोतुमप्रेमदियाकौ॥ सबभा
गिगयोजुहतोतमछायो॥ अबमेअ
पनेमनकोमतुपायो॥ दरसेहमकौंव
रहूंदरसाअै॥ उलागतिआनिवया
इलगायै॥ कछुउन्नादतिनहीचुप
साधी॥ जियजानतिहैहमकौअप
राधी॥२८॥ हनूमान॥ कछुसिपदसा
कहिमोहनआवै॥ चरुकाजटबा

तसुनेदुषपावे॥ मासोप्रतिवासरवा
सल्लागे॥ तनघाउनहींमनप्रानन
षागे॥३०॥प्रतिअंगकोसगहीदिनना
से॥ निससोमिलवारतदीहउसासे
निसिनेकहीनीदनआवतजानो॥र
विकीछविज्योअधरातवषांनो॥३१
॥दंडक॥ भोग्निीज्योभवतिरहतिव
नवीथिकानिहंसनीज्योमदुलम
नालिकावहतिहे॥पीउपीउरदति
रहतिचितचातज्योंचंदचितचक
हीज्योचुपुहैरहतिहे॥ हग्निीज्यो
हेरतिनकेसरीकेकाननहूंकेकासु
निव्यालीज्योविलानहूकेहतहे॥
सुनहूनपतिरामविरहतुम्हारेऐ
सीसुरतिविसीताजूकीमूरतिलग
तिहे॥३२॥सीताजू॥दोहा॥ ॥श्री
नसिंघप्रहलादकीवेदनगावतगा

य॥गयेमासुदिनआसुहीअंठीहूहै नाथ॥३३॥आगमकनककुंगकेवात कहीसुषपाइ॥कोपअनिलिजगिजा उजिनसोकसमुद्रसमाइ॥३४॥श्रीए मदंडक॥साचौएकुनामहरलीनेस वदुषहरि आनंनामपरिहरिठाएहो॥ वानाहोहुतुममेरवांनरसमवली मुषनाहीसुखलीनिजगाएहो॥सा षामगनाहीबुधिवलनिकेसाषा मृगकिधोवेदसाषामगकेसबकोभा एहो॥साधुहुनिमंतवलिवंतजसवं ततुमगाएएकोमकोअनेगकाआ एहो॥३५॥हनूमान॥तोमर॥गईमु द्रिकालेपार॥मनमोहिल्पाईवार जठव्रक्षतोरदीन॥मेकहाविक्रमकी न॥३६॥अतिहतोवालकुअक्ष॥ले गयोवांधिविपक्ष॥मेकहकरोवलएक

अतिमनकजारिलंका ॥ ३५ ॥ तिथिवि
जयदसमीपाइ ॥ उठिचलेश्रीरघुराइ
हरिजूथजूथपसंग ॥ विनपछसकेतिप
तंग ॥ ३५ ॥ समश्रेनसूरप्रकास ॥ आका
सवलितविलास ॥ पुनिपछिलक्षिन
संगजनुजलधगगनतरंग ॥ ३६ ॥ सु
ग्रीम ॥ दंडक ॥ केसौदासराजचंद्रसु
नोराजारामचंद्ररावरीजवहिसेना
उचकिचलतिहैपूरतिहैधूरिभूरिरे
धरौहिआसपासदिसिदिसिवरषो
जौवलनिवहतिहै ॥ पन्नगपतंगत
रुगिरिगिरिराजराजराजमगराजन
केमदनदलतिहै ॥ जहांनहांउपर
पतालपयआइजातुपुरइनकेसो
पांतुफुटुमीहलतिहै ॥ ४० ॥ लक्छिम
न ॥ भाकेउतारवेकौअवतरांम
चंद्रकिधौकेसौदासभूरभारथप्रव

रा॰
८९

हल॥हृदतेहेतखगैगनगिखा
सुषेसखसखसिंधकेसक.लजल॥
उकिचलतहाटिचक्रनिदचक्रतम
चक्रेसेसचकतभूतलकेथलथल॥
लचकलचकिजातसेसकेसेष
फनभागगईभोगवतीअतलवि
तलतल॥८१॥गीतका॥रघुनाथजू
हनिमंतऊपरसोभिजैतिहिकाल
जू॥उदयसोभनअंगमानहुसासुभ
विसालजू॥सुग्रीवअंगदसंगलक्ष
मनाछिजैवहुभातजू॥जनुमेरमंदर
अंगअद्भुतचंदराजतरातिजू॥८२॥
॥दोहा॥वलसागरलछमनसहि
तकपिसागरानधीर॥जससागर
रघुनाथजूमेलसागरतीर॥८३॥
विजय॥भूतिविभूतिपियूषहीं
कीविषईसससरीरकेपापविमोहे

हेकिधोंकेसवकासिवकोषघ्रदेवदे
वनिकोमनुमोहे॥सेतहि॥कैकिव
सेहसिंततसोभाअनंतकेहेकवि
कोहे॥चंदननीरतेरगतंरंगितनाग
गहकोऊकिसोगरसोहे॥४८॥गीत
का॥जलज्वालकालकरालमाल
तिमंगलादिकसोवसे॥उरलोभक्षो
भविमोहकोहसकामजोषबल
कोलसे॥वहुसपदाजुतजानिऐ
अतिपातकोसमलाषिये॥कोउ
मागनोअहपाहुनोनहिनीरपाव
नदेषिऐ॥४९॥इतिश्रीमत्सकललो
कलोचनचकोरचिंतामनश्रीरामचं
द्रचंद्रकायांसमुद्रदासनवर्णनंना
मचतुर्दशप्रकास॥१४॥रावन॥भु
पालभूतलपालहोसवमंत्रमूल
तिजानिसे॥वहुमंत्रवेदपुरानउत्त

ममधमाधमजांनिये॥ करिजैजुका
जुसुआदिउत्तममधमाधमजानि
ये॥ उरमध्यआदिअनुत्तमैतिगएति
काजवषांनिये॥१॥रावनसांगता॥
आजुसाहिकरनैसकहोहो॥ आपुमा
अजनिरोसुगहोहो॥ राजधर्मकहि
जैछबिछाए॥ रामचंद्रनहिंजौलगि
आए॥॥ प्रहस्त॥ वांमदेवनमकीवर
दीनो॥ लोकलोकसिगरवसकीनो॥
इंद्रजीतसुतकौजगमांहि॥ रांमदे
वनरवांनरकोहि॥३॥निकुंभ॥ म
सुपासभुजजोरनितोर॥ कालदंड
तमसोकरलोर॥ कुंभकरनलघु
सादरजोक॥ ओरकहामनआवन
ताकै॥४॥कुंभकरनवचनबंदी॥ आ
पुनसवजाननकहोनमाननकी
जेजोकछुमनभावे॥ सीतानमआ

नीमीचुनजांनीश्रवकोमंत्रवतावे॥
ज़िहिवलजगजीतोसवसुश्रजीतोता
सौंकह्यावसाहीं॥ श्रनिमूलिगएत
वसोचुकरतश्रवजवसिरऊपरश्रा
हीं॥५॥मंदोदरीविजय॥ रामकीवा
मजुल्यारेचुराइकैलंकमेंमीचुकी
वेलिवहीज़॥ क्योरनजीतहुगेतिन
सौजिनकीधनरेषुगहीनतरीजू॥ वी
सविसोवलिवंतहुतवहुतीतिपके
सवरूपरहीज॥ तोरिसरासनसंकर
कोपिससियस्वयंवरक्योनलहीजू॥
६॥वालिवलीनवचोपरषोरहिक्यो
वचिहोनिज्ञ श्रापनीषोरहि॥ केस
वछीरसमुद्रमथोकहिकैसेनवांध
हैसागरथोरहि॥ श्रीरघुनाथगनौ
श्रसमर्थनदेषिविनारथहाथिय
घोरहि॥ तोरसरासनसंकरकोजि

हिसोभकहातुवलंकैंतोरहि॥७॥मेघना
द॥दोहा॥मोहिसुग्रीइसुदेहुप्रभत्र
भुवनपालप्रवीन॥रामसहितसवजगु
कसोनरवांनकरहोंन॥८॥विभीषन॥
माटक॥कोहैअतिकायजुदेषिसवै॥को
कुंभनिकुंभव्रथाजुवकै॥कोहैइंद्रजीत
जुवातकहैकोकुंभकरनहैआरगहै॥९
देषिरघुनाथनधीरधरो जैसेतरैलव
वातकरे॥जौलौहरिसिंधतरैईतरे
तौलौसियलैकिनपाइपरे॥१०॥जो
लौनलनीलनसिंधतरैतौलौहन
मंतनइसिपरे॥जौलौनहिअंगद
लंकहही॥तौलौप्रभमांनहुवातक
ही॥११॥जौलौनहिलक्षमनवांनध
रे॥तौलौसुग्रीवनक्रोधभरे॥जौलौ
रघुनाथनसीसहरे॥तौलौप्रभलैकि
निपाइपरे॥१२॥रावनकलहैसभ॥अ

रिकाजलाजत्तजिकैउदधायौधकुता
हिमोउरवावनआप्तौ।तजिएमनाम
पहवोलुउचाम्यौ।सिमांअलातप
गलागतमाग्यौ।२३।तवहारवाउि
ठिदेहिसम्हारो।लियअंगसमामंत्रि
सबचारो।तजिअंधवंधदसकंध
उडांनो।रामचंदजगतीपतिजांनो।२४
दोहा।मंत्रनिसहितविभीषनेसोमा
वठीअकासजनुअलिआवतभांन
पतिछिपतिपग्रिनिपास।२५।ताम
रसु।०।निकटविभीषनआवतजा
नै।कपिपतिसोतवहीगदानै।रघु
पतिसोउनजाइसुनाए।दससुषसो
दासेवहिआए।२६।राम।वलवुधि
वंतसवेतुमनीके।मतसुनिलीजह
मंत्रनिहूंके।तवजुविचारपरेसोई
कीजे।सहसासत्रुनआंवनदीजो।२७

अंगद॥ रावनकोसुहमांचिहुसोदर
आपुवलीवलिवंतलियेंआ॥ सब
सवसहेमेहतिनेसच॥ काजुकहा
तिनसोहमसोंअव॥१९॥ जामवंत
वंधविरोधुहमेइनसोंअति॥ क्योंमि
लिहेंतिनसोंहमसोंमति॥ रावनकी
नतजोतुवहीइनिसीयहरीजवही
उहिनिर्गुनि॥१८॥ नलवाक्यचारप
ठइनिकोमतुलीजे॥ आसिहीकेंसे
विदाकरदीजे॥ राषिजेजोअतिजा
निजेउतम॥ नाहिमारियेछोउसवे
भम॥२०॥ नील सांचिहुजोयहहे
सोनांगनि॥ राषियेंराजिवलोचन
सोमनु॥ भीतुनराषियेंतोअतिपा
तकु॥ होहिजोमातपितासुतघात
कु॥२१॥ हनूमांन॥ हालीला॥ जा
नोनविभीषनराषसरामराज॥

प्रहलादनारदविसारदवुधसाज॥सुग्री
वनीलनलअंगदजामवंत॥राजाधि
राजवलिसमांनसंत॥२२॥दोहा॥कहु
नन पाईवातसवहनूमांन।वलिवांन॥
कहोविभीषनवीचहीसवहिसुनाए
प्रमांन॥२३ सवैया॥दीनदयालकहा
वतकेसवहो अतिदीनदसाणहोगाठो॥
रावनकेअघवोघमेराषमवूडतहोवा
हुगहिकाठो॥ज्योगजकोप्रहलादकी
कीरतसोहीविभीषीनकोजसुवाढो॥
आरतवंतपुकारसुनोकिन आरतिहो
जुपुकारतढाढो॥२४केसवआपुसदा
सहोदुषपेदासनिदेषसकेनदुषारे॥
ताकोभएतिहिभांतनहीतुमजेहीज
हीजिहिभांतिसम्हारे॥मोहिवाव
चारकहाकवहूनहिकाहूकेदोषवि
चारे॥वूडतहोमहिमोहसमुद्रमे

एषतुकाहेनरोषनहोर ॥ २५ ॥ हरिलो
ला ॥ श्रीएमचेद्र स्रुति स्रागतिवंन
जांन ॥ तीनोवुलाइसरनागतिदुष्प
दान ॥ लंकसञ्चाहुचिसजियहुलं
कधांम ॥ रजाकेहाउजगलोलगि
रांमवांम ॥ २६ ॥ तोटक ॥ जवहीर
घुनाइकवांनुलियो ॥ सवमेषवि
सेषतसिंघुहियो ॥ नवहीदुजरूप
सुन्नाइगयो ॥ नलसोतुम्हेंवेपहसे
तुटयो ॥ २७ ॥ दोहा ॥ जहतहांवा
नरसिंधमेगिरिगनडारतआन
सवरहेभरिपरमहिरावनकोदु
षदान ॥ २८ ॥ तोटक ॥ उछलेजल
उच्चअकासचले ॥ जलजोरदिसा
विदिसांनिदले ॥ जनुसिंधअका
सनदोस्रीके ॥ वहुभांतमनावति
पापहिके ॥ २९ ॥ सवमोमविमान

तिभीतिगऐ॥ जलजोभऐ रागरागम
ऐ॥ सुरसागरमानहुजहभेप॥ सिग
रेपटभूषनलटिलऐ॥ २०॥ अतिउक्ष
लिछिछत्रकूटछुपै॥ पराऐवनकोज
लजोरभपै॥ तवलंकहहनवलला
इदई॥ नलमांनहुआरवुयाइलई॥
२१॥ लगिसेतुजहांतसोभगहे॥ सी
तानिकेफेरिप्रवाहवहे॥ पतिदेवन
दीरतुदेषिभली पितुकेघरकोजनु
लूसिचली॥ २२॥ सवसागरनागरसे
तुरचो॥ वनैमहिमाजुतसत्रुसची
तिलकावलिसीसुभसीमलसै॥ म
निमालकिधेउरमेविलसै॥ २३॥ तार
क॥ उरतेसिवमूरतिश्रीपतिलीनो॥ सु
भसेतकेमूलअधिसुजकीनो॥ इनि
कदरसैंपरसैपगुजोई॥ भवसागरके
परपारसुहोई॥ २४॥ दोहा॥ सेतम

है

ए.
९४

लसिवसोभिजेपूरनपरमप्रकास
सोगाजगतजिहांजकेकरिपाकेस
वदास॥३५॥तोटक॥सुकसारनरा
वनदूतपठाइसो॥कपिराजसमाएकु
सदेससुनाइसो॥अपनेघरजैजहुहो
तुमभाइ॥जमहूंपरलंकलईनहि
जाइ॥३६॥सुग्रीव॥भजिजेहोक
हांनकहूथलदेषो॥जलहूथल
हूंघननाइकलेषो॥तुमवालसमां
नसहोदरमेरे॥हतिहोकुलसोत
नप्रानतिते॥३७॥सवरामचंमत
रसिंधुहिआई॥वहुधासुकसारनें
नैछवताई॥छविरिक्षनकीधसुं
माछाई॥फिरलंकमनोवरषारितु
आई॥३८॥किवदंतीदंडक॥कुं
तललकिततनीलभ्रकुटीधनुष
नैनकुमुदकटाक्षवांनसचलस

दाईहै॥ सुग्रीमसहितताराअंगदा
दिभूषननिमधपदेसकेसरीसगज
गतिभाईहै॥ विग्रहानकूलसवल
क्षिलक्षिरिसिवलरिक्षिराजमषी
मुषकेसोदासगाईहै॥ रामचंद्रजू
कीचमूराजश्री विभीषनकीराव
नकीमीचदरकूंचुकोंआईहै॥ ३
६॥ निसिपालिका॥ रामनसुभसो
मलतनमंदिरपेसोभिये॥ मानहु
दूसअंगजवकलिंदगिरिविमो
हिये॥ राघवसरलागवगतिछुट
मुकट्योंहये॥ हंससवलअंससं
हितमानहुउडिकेगये॥ ४०॥ लछि
नषलुतजितयलुभज्जिमवनू
मगयो॥ लक्षिनप्रभुतक्षिनगिरि
दक्षिनपरसोभयो॥ लंकनिरषि
अंकहरषिमरमसकलजीत

ह्यो॥ जाहसुमतिरावनपै अंगदसौ
सौ कह्यो॥४१॥ अंसनूपक॥ रामचंद्र
जू कहत लषन लंक देषि देषि॥ रि
वानराज घोरवोर चाहिं विसेषि
मुंजकंजगंधलुब्धभौरभीरसी
विसाल॥ केसौदास आसपास
सोभिजैमनौमराल॥४२॥ नामको
रिलोहकोटस्वर्नकोट आसपास
देवकीपुरीधिरीकिपर्वलारिकेवि
लास॥ वीचवीचहैकपीसवीस
वीचरक्षिजाल॥ लंककन्याकागोरि
किनीलपीतकंठमाल॥४३॥ इ
तिश्रीमत्सकललोकलोचन
चकोरचिंतामनिश्रीरामचं
द्रचंद्रिकायांलंकादरसनोनाम
पंचदसप्रकास:॥१५॥ दोहा॥
यहषोडसेप्रकासमैवरनतुके

सबदास॥एवनअंगदसोविधिसोभा
वचनविलास॥अंगदकूदिगएजहांआ
सनगतिलंकेस॥मानहुमधकुरहाटपर
सोभतस्यामलवेस॥२॥प्रतिहारनराज॥
पठेविरंचिमौनवेदजीवसोरछंडिरे॥कु
वेरबेरकैकहीनजक्षभीरमंडिरे॥दिने
सजाइदूरबैठनारदादिसंगही॥नबो
लिचंदमंदबुद्धिइंद्रकीसभानहीं॥३॥
तोमर॥अंगदसोसुनवानी॥चित्तम
हांरिसआनी॥रेलंकलोगअनेसेजा
रसभामहवेसे॥४॥प्रहस्तचर्चरी॥कौ
नहौपठएसुकौनह्यांतुम्हैंकहका
मुहै॥जातिवानरलंकनाइकदूतअं
गदनामहै॥कौनहैवहबांधिकैहम
देहपूछिसबैदही॥लंकजारसघारि
अक्षिगपोसुवातव्रथाकही॥५॥महो
दर॥कौनभांतिरहौतहांतुमराजप्रे

षककजानिये॥लंकजारगयोजुवांनरकौ
ननामुबषांनिये॥मेघनादजुवांधेकैव
हुमारियौबहुधातवे॥लोकुलाजदुरैरा
हेअतिजांनिजेनकहाअवे॥६॥एवन
कौनकेसुतबालकेकहिकौनबालिनजा
निये॥कांधचापितुलैजुसागरसातन्हा
तबषांनिये॥है कहांवहबीरअंगददे
वलोककवतारियो॥कयोगयोरघुनाथ
वांनविमांनवैठसिधारियो॥७॥लंक
नाइककोविभीषनदेवदूषनकोदहे॥
मोहिजीवतहोइक्योजगतोहिजीवत
कोकहे॥मोहिकोरनमारिहैदुरबुहि
तेरीजांनिये॥कौनबातकहाइएकड्डी
वीरवेगवषांनिये॥८॥अंगदविजय॥श्री
रघुनाथकोवानरआयोहोएकुनके
सवकोहहस्योजु॥सागरकोमडयारचि
कारत्रकूटकोदहिचिहारिछयोजु॥सि

प्तनिहारसंघारकैराक्षससोकुअसोकु
वनीहिदपोज॥ अक्षकुमारहिमारिकै
लंकहिजारिकैनीकहींजातुभयोज॥
९॥ गंगोदिका॥ रामरांजानिकेराज आ
एहोंधामतेरेमहांभागजागेअवैद
षिमंदोदरीकुंभकनीदिटेमित्रमंत्री
जितेपूछिदषोसबै॥ राषजेजातिकी
भांतिकोवंसकोसाधिजेलोककोला
परलोककी॥ आरिकेपांपरोदसुलेकी
सुलेआसुहीरीससीताहिलैवाककौ
१०॥ एवन॥ लोकलोकससोसोचिवं
म्हारचेआपनीआपनोसीवसोसा
रेहे॥ चारिवाहेधरविस्तरक्ष्याकेरवा
तसांचोयहेवेदवानीकहे॥ ताहिभं
भंगहीदवेदेवससोसोचिन्नम्हांदेदे
हद्जसंघरे॥ ताहिहोछोडकेपाइकी
केपरोआजसंसारतोपाइमेरेपरी॥ ११॥

रावन ॥ मंदिरी ॥ रामकोकांमुकहारि
प्रजीतिहिकोनुकवेरिप्रजीसोमहां ॥
वालिवलीछलसोभगनंदनगर्भे
सुहादुजदीनमहां ॥ दीनसुक्योछित
छत्रहेतुविनग्रानानिहेहुपराजाकिये ॥
हेहस्तकोनुवहेविसिमोजिनषेल
तहांतुम्हेवांधिलिये ॥ १४ ॥ अंगद ॥ वि
जय ॥ सिंधुतरीउनिकोवदरातुम पे
धनुरेषगहीनतरी ॥ वांध्योरीवांधत
सोनवध्योउनिवारधवांधिकेवार
करी ॥ अजहूंरघुनाथप्रतापकीवात
तुम्हेदसकंठनजांनिपरी ॥ तेलनि
तूलनिपूछजरी ॥ सवलंकजराहजरी ॥
१५ ॥ मेघनाद ॥ छोडिदसोहमहीवद
रवहपूछिकीअग्निसोलंकजरी ॥
भीरमिअक्षुमभ्योचपिवालकुवा
दहीजाइप्रसस्तकरीतालवधेअ

रुसिंधुवधोसहचेटकविक्रमकोंनु
किपो॥ वांनरकोनरकोवलकारनमे
सुरनाइकुवांधिलिपो॥ १४॥ अंगद
चेटकसौधनुभंगकस्योप्रमराववरकों
वलुजीरनहो॥ वांनसमेतरहेपछि
केतुमजासहपेनतस्योथलुह्वो॥ वा
नसुकोनवलीवलिकोसुतवेवल
वांवनवांधिलिये॥ वेरीसुतोतिन
कीचिरस्चेरिनिनाचनचाइकेछो
उदिये॥ १५॥ रावन॥ विजय॥ नीलसु
षेनहनूंमानिकेनलसौरसवेकपि
पुंजतिहारे॥ आठहेआठदिसांव
लिदेअपनोपदलेपितुजोंलगि
मारे॥ तोसिसपूतहिजाइकेवालि
अपूतनकीपदवीपगधारे॥ अंग
दसंगलेमेरोसवेदलआजुही।
क्योंनहनेवपआरे॥ १६॥ दोहा॥

रा.
९८

जोसुत अपनेबापकोवैसनलेइ प्र
कास॥ताकोजीवनहीमरोकहेसक
लतजिवास॥२७॥अंगद॥इनको
विलग्यनमानियेकहिकेसवपल आ
धु॥पावकपानीपवनप्रभुज्यों असाध
सोसाधु॥२८॥रावन॥उरसिअंगद
लाजकछुगहो॥जनकघातवातकहा
कहो॥सहितलछिमनरामहिसंघरो
सकलवानरराजतुम्हकरो॥२९॥अंग
दनिसिपालिका॥सत्यअसमिवह
मचित्तपहिचांनिहो॥हतवुधनतक
वहुनठरआनहो॥आपमुषदेषिअ
भिलाषमुषभाषहो॥रावुभुजसो
सतवओरकहराषहो॥३०॥रावनउं
दवछ॥मेरीवडीभूलिकहाकहोरे
तेरोकहोदतसवैसघोरे॥वेतोस
वेतोहिचाहतमारो॥मारोकहाती

हितादेवमारे ॥ २१ ॥ अंगद ॥ नाराचु
औरघुनाथजूधरेंगे ॥ असेषमाथके
टभूमेपरेंगे ॥ सिषासिवास्वानगहे ति
हारी ॥ फिरैवोरचोहसुअंगामिषविहा
री ॥ २२ ॥ रावन भुजंग प्रयात ॥ महां
मृत्युदासीसदापाइधोवे ॥ प्रतीहार
ह्वैकेजपासासोवे ॥ छपानाथलीने र
हेछत्रुजाको ॥ कहांगोकहादीनसुग्रीव
लाको ॥ २३ ॥ सकामेघमालासिषापा
ककारी ॥ करैकोतवालीमहांदंडधा
री ॥ पठेमंत्र ॥ बंम्हासदाद्वारजाकेक
होपकहादीनसुग्रीवताके ॥ २४ ॥ अं
गद विजय ॥ पटचलोपलनापलि
काचटिपालिकहूंचढिमोहमठोर ॥
चौकचलोचित्रसारीचलोगजवा
जचलोगढगर्भचलोरे ॥ व्योमविमा
नचलोहीरहेजिहिकेसवसोकव

हुंनपसोरे॥ चेततुनाहीरह्योचखिचि
तेसुचाहतुमूढचिताहीचसोरे॥२५॥
॥रावनभुजंगप्रिया॥निकाराजभेयांलि
योराजुताको॥दियोकाछिकेजोकह्यात्रा
सुताको॥लिपेवानरालीकहेवाततासो
सुकैसेजुरेरामसंग्राममोसो॥२७॥अंगद
विजय॥हाथीनसाथीनघोरेनचेरेन
गाउनठांउनठाउविलैहै॥तातुनमातुन
पुत्रनमित्रनवित्तुनअंगवेसंगरेहै॥के
वलरामकोनामविसांतुओरनिकामा
नकामहिऐहै॥चेतुरेचेतअजोचित
अंधसुअंतकवोकअकेलउजेहै॥२८॥
॥रावनभुजंगप्रियापात॥डेराइविप्रे
अनाथेजुभाजेपरद्रव्यछोडेपरस्त्रीनि
लाजे॥परद्रोहजापैनहाहीरतीकोसु
केसेजुरेभेषुकीनेजतीको॥२९॥दोहा
गेदकरेमेषेलहीहरिगिरिकेसवदा

स॥सीसचढाए आमनेकमलसमान
प्रकास॥३०॥ अंगदसवैया॥ जैसेतुम
कहतउठायोयेकुगिरवरुश्रेसेकोटिक
पिनकेबालकुउठावही॥ काटसुकहतसी
सकाटतघनेरघाषभगरकेषेलकहाभ
टपदपावही॥ जीत्योजुरेसरनआपरि
षिकिहसमुझइहमदजनानेसमआ
वही॥ गहोरामपाइसुषपाइकरैतपीत
पुसीताजूकोदेहुदेहुदंदभीवजावही॥
३१॥ चंद्रवर्तनाम॥ तपीजपीविप्रनि
छिप्रहीहरौ॥ देवअदोषीसवैदेवसंघ
रौ॥ सियानदेहोयहेनेमजीधरौ॥ आ
मानुषीभूमिआवांनरीकरौ॥३२॥ अंग
दसवैया॥ पाहनतेपतिनीकरीपावन
टूकाकीयोधनुदेहरकोरे॥ छत्रविहीन
करीछिनमेछितगर्भहत्योतिनकेवल
कोरे॥ पर्वतपुंजपरेनकेपातसमांनत

रेश्रजहूंधरकोरे॥होइनरोइनपेसरु
पेगुनश्रारइहांनरवानरकोरे॥३३॥रा
वन॥चच्चरी॥देहिश्रंगदराजतोकहमा
रिवांनरराजको॥वांधिदेहुविभीषनेश्र
रफेरसेतसमाजको॥पूछिजारहिश्र
छिरिपूकीपाइलाजहिरुद्रके॥सिप्रा
कौतवदेहुरांमहिजांइपारसमुद्रके॥३४
श्रंगद॥लंकलाइगयेवलीहनिमंतसं
तनिगाइयेो॥सिंधुवांधतुसोधुकेनल
छीरछीटवहाइयो॥ताहितोहिसमेत
श्रंधउषारिहोउलटीकरे॥श्राजुराजु
कहांविभीषनवेठहेतिहितेडरे॥३५॥
॥चौपही॥वालिपुत्रतवरोप्योपाउ
रावनसेकत्योश्रानिउठांउ॥सकलस
भामेश्रसेोकोर॥सोपहपाइउठावेमो
र॥३६॥पहिसुनिकेजोधासवकेहे वां
नरपांउकहाहमगेहे॥केतिकहेतेरे

यहपाइ॥ सिषिरिनिसहितधरेहिउठा
इ॥३७॥ छपय॥ प्रथममहोदरकुंभकर्ण
निनारंतकआए॥ प्रहस्तमहीपतिजुरे।
औजोधनिवलवाए॥ मेघनादअति
कायपायअंगदकोगहिसो॥ उसोन
केहूंभांतिगभुजीमेनहिरहियो॥ दस
कंठआदिदैथकगएचलनलग्योपाता
लकौंकहिकेसवगतिरघुनाथकीअ
सुपचेविनकाजकौ॥३८॥ दोहा॥॥
सकलसभाहर्ठकेरहीएवनअधिक
लजाइ॥ कहिकेसवहरिभगतकौअ
सुउठावैपाइ॥३९॥ अंगदरावनको
मुकुटुलेकरउडयोसुजांन॥ मनोच।
ल्योजमलोककौदससिरकौप्रस्था
न॥४०॥ इतिश्रीमत्सकललोकलो
चनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचं
द्रकायांदनसंवादवर्ननंनामषोडस

सोप्रकास॥१६॥दोहा॥यहसत्रहैप्रका
समैलंकाकौअवरोधु॥मंत्रचमूंवनर्न
समरलछिमनकौपरवोधु॥१॥अंगद
लैवामकटकौपरांमकेपाइ॥रामवि
भीषनकेसिरहभूषितकियोसुभाइ॥२॥
पधिटिका॥दिसिदक्षिनअंगदपूर्वनी
लपुनिहनूमंतपक्षिमसुसील॥दिस
उत्तरलछिमनसहितरांम॥सुग्रीवम
ध्यकीनोविरांम॥३॥सगजथपजूथन
वलविलास॥पुरफिरतविभीषनआ
सपास॥निसिवासरसवकोलेतसोधु
इहिभांतिभयोलंकाविरोधु॥४॥तवरा
वनिसुनिलंकानिरोधु॥उरउपजौतन
मनपरमक्रोधु॥राषेप्रहस्तहठिपूर्व
पोर॥दक्षिनहिमहोदरगयेदौर॥५॥प
येइंद्रजीतपछिमदुवार॥रहेरावन
उत्तरवलउदार॥किसोविरूपाछयि

तमधदेस॥ फिरैनारतकचहुधांप्रवेस॥ ६

प्रमता छंद॥ दंडक॥ होनलागोहाला

डोलसेनलागोसज्जियपनआवतहैराम

चंद्रमानोघटाउंनई॥ धराकीसकल

धूरिहीहैअमरपुरिसुरिहनदेषिपरे

अषछाहज्योंछई॥ रावनकीराजधानी

होनलागीधूंधानीजानीनहीअभि

मानीमतिधीसुकीभई॥ सेतुसेतुसिं

धसबकारेकारेसोभिजनुपीरीपीरीलं

कासबभूरीभूरिह्वैगई॥ ७ ॥प्रमता छंद

अतिहार हारप्रतिजुद्धभेहे॥ बहुरिछ्छ

कणूरनिलागरहे॥ तवस्वर्नलंककहसो

भभई॥ जनुअग्निज्वालमहधूंमदई

॥ ८ ॥ दोहा॥ मरकतमनिकेसोभिजेस

वेकगूरचारु आइगयोजनुघानको।

पानिककोपरवारु॥ ९ ॥ लषिरावनआ

रुसुदसोमंत्रीमित्रबुलाइ॥ इंद्रजीत

कोआदिदेजुद्दकरौसवजाइ॥२०॥लंक
चमूजवहीकरीहाएहारप्रतधाइ॥द्वंद
जुद्दद्वद्दलभयोपीछेदेतनपाइ॥२१॥
चच्चरी॥रनरामसोमनक्रोधकरतवजु
रेपंचमहारथी॥कोगनेछिनजुद्दिमेज
मलोककेजिभएपथी॥लछिमनहने
रनकोगनेजुअघैनेदुह्मसेनके॥एविअ
स्तकालकरालआएभस्ममुकटदिये
रैनके॥२२॥तिहिजोतितेतमनासिगो
सवकोप्रगटसवदेषियो॥नवधाईकेक
पिजुथनाथनिवीसवोहनलेषियो॥
पुनिइंद्रजीतअजीतरनिकसोप्र
गटरघुसाजिके॥तिहिदेषिआवतवी
रअंगदसामुनोभसोगाजिके॥२३
मेघनादिअसेषवांननिवीरअंगद
मारियो॥करक्रोधुसोगिरएकुलेर
थुद्दतुसुनसघारियो॥धायोपसादे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वानलेअंगदतवैचनकटहयौ॥ अम
धछोभभयौजहीतवभागिसोलंक
हिगयौ॥ १४॥ दोहा॥ कीनोजग्यनि
कुंभलाहौमोदधिअपार॥ कुंडमध्य
तेरथकसोसूतसहितहथियार॥ १५
॥ कुसमविचित्र॥ तवनिकस्यौए व
नसुतसूऐ॥ सवजगजीत्योहरषलप
ऐ॥ तपवलमायानमुठपजायौ॥ कपि
पतिकेमनसंभ्रमछायौ॥ १६॥ दोधक
काहुंनदेषिपैवहजोधा॥ जद्यपिहे
सिगरेवुधिवोधा॥ सायकसोअहिना
इकसाधे॥ लछिमनस्योरघुनाइकुवा
धे॥ १७॥ एमहिवांधिगयौजवलंका॥ ए
वनिकीसिगरीमिटीसंका॥ देषवधे
तवसोदरदोऊ॥ जूथपजूथत्रसेसव
कोऊ॥ १८॥ स्वागता॥ इंद्रजीततिहि
लेउरलायौ॥ आजुकाजसवतेकरि

आयौ॥ कै विमांन अति रूठ तिधाए
जांनु की हिर छुनाथ दिषाए॥२६॥सी
ताजू॥दोधक॥राजपुत्र जु तनागिनि दे
षे॥भूमिजु गत हरिचंदन लेषे॥पंन्नगार
प्रभु पंन्नग माई॥काल चाल कछु जा
नन जाई॥२०॥दोहा॥काल सर्प के क
वल तें छोडत जिनि कौ नाम॥ वधे ति
न वांम्ह नवच न वस मासा सर्प निरांम
२१॥दोधक॥श्रीरांमचंद्र पे नारद आ
ए॥ देआसिष वहु धाम न भाए॥भांति
भांति वहु अस्तुत कीनी॥गरुड वुलाए
सिध्य आदीनी॥२२॥चौपही॥पंन्नगा
रि तव हीं तह आये॥ व्यालजाल तव मा
रि भगाये॥ लंक मध्य तव हीं गई सीता
सुभ देह अवलोकि सुगीता॥२३॥ग
रुडइंद्रवज॥श्रीरांम नारायन लोक क
र्ता॥वंह्मादि रुद्रादि के दुष्य हर्ता॥सी

तासुमिस्यौदेहुप्रभुसिक्षा॥नांन्हीवडी
ईसजोहोहिदिक्षा॥२४॥एंम॥०॥कि
सेहोहिकाजेसुसवैकीनो॥आएइहां
मोकहसुषःदीनो॥पालागिवेकुंदप्र
भाप्रकासी॥स्वर्गलोकगोनछुनविस्त
धासी॥२५॥विभीषन॥धुंम्राछआसो
महांदंडधारी॥ताकोंहनमंतभएहेप्रहा
री॥जितअकंपादिकवलिष्टभारे॥ते
संग्राममेअंगदवीरमारे॥२६॥इंद्रवज्र
अकंपधुम्राछहिजुधजूझे॥महोदर
हिएावनमंत्रवूझे॥सदाहमारेतुममं
त्रवादी॥हेकहाहेअतिहीविषादी
२७॥मंदो॥कहेहेजकोऊहितवंतवा
नी॥जानोताकहमहांदुष्पदांनी॥ग
नोनदावेवहुधाकुदावे॥तातेसुधीवा
तमोनभावे॥२८॥कह्यौसुएचार्जसो
होकहोजू॥सदातुम्हारेहितसंग्रहो

हो

जू॥ नृपालभूमेविधिचारिजानो॥ सवेसु
नोमहांराजजोहोंवषानो॥२८॥ भुजंगम
प्रिपात॥ पहेपंकलोकेसदासुधिमानो
वलीवेनज्योंश्रापुहीईसजानो॥ करे
साधनासेकश्रनेमसे॥३०॥ दोहा॥ चहू
राजकेमकेहूं १२ परलोकहीको॥ हरि
श्ववदजेसंगएदूमहीको॥३१॥ दुहूंलोक
कोएकसाधेसयाने॥ विदेहीनिज्योंव
दवांनीवषांने॥ नठेलोकदोईहठीए
कश्रसे॥ त्रसंकेहसेज्योंभलंऊश्रनेसे
३१॥ दोहा॥ चहूराजकेमेकहेतुमसो
राजचरित्र॥ स्वेसुकीजेचित्तमेचि
त्तनमित्रश्रमित्र॥३२॥ चारभांतिमं
त्रीकहेचारिभांतिकेमंत्र॥ मोहिसु
नाएसुकनेसोधिसोधिसवतंत्र॥३
३॥ छपय॥ एकराजकेकाजहतेनि
जकाराजकाजे॥ जेसेसुरथ्यनिकारि

सकलमंत्रीसुषसाजे॥ एकराजकेकाजऋा
पनेकाजविगारत॥ जैसैलोचनहींनसहि
तकविवलिहिनिवारत॥ इकप्रभकोऋप
नोभलोकरतदासाथ्यदृतज्यो॥ इकऋप
नोप्रभकौवुरौकरतरावेरपूतज्यौ॥ ३४॥
दोहा॥ मंत्रीजुचारिप्रकारकेमंत्रिनिके
जुप्रवान॥ विषुसेदाडिमवीजसेगुरसेनी
मसमांन॥ ३५॥ चंद्रवर्तमान॥ राजनीत
मततंतसमुझिये॥ देसकालगुनजुद्ध
ऋसुसिये॥ मंत्रिमित्रऋरिकौगुनग्रहि
ये॥ लोकलोकऋपलोकनलहिये॥ ३६
रावन॥ चारिभातिनपतानुमकहियो
चारिमंत्रमतमेमनगहियो॥ रांममारि
मुएएकुनवचिहे॥ इंद्रलोकवसवा
सहिरचिहे॥ ३७॥ प्रमताछरा॥ उठिकै
प्रहस्तसजिसेनचलेवहुभातिजाइ
कपिपुंजदले॥ तवदोरिनीलउरमु

ष्टिहनै॥आसुहीयप्रभुवभूडिसनै॥३८॥

वसंमस्वनित॥महावलीजुअतप्रहस्त कौ॥मीरिचलेरावनितहीहस्तकौ॥अने गभेरीवहुंदुंदभीवाजे॥गयंदश्रोधाजहं तहांगाजे॥३९॥सनीरजीमूतनिप्रकास सोभही॥विलोकिजाकोसुरसिंघछोभ ही॥प्रचंडनेरित्यसमेतदेषियौ॥सप्रे॰ तमानौमहिलेषियौ॥४०॥विभीषन

वसंततिलका॥कोदंडमंडितमहारथ वंतजोहे॥सिंघध्वजीसमांनपंडितचं दमोहे॥महावलीप्रवलकालकराल केता॥सोमेघनादसुरनाइकजइजेता॥ ४१॥जोआघ्ववेषरथव्याघ्रनिकेतधा री॥संक्रलोचनकुवेरहिविपतिका री॥लीनेत्रसूलसुरसूलसमूलमा नौ॥श्रीराघवेदअतिकायजानौ॥४ २॥जोकांचनीपरथसंगममूरमाली

जाकीउदारउषनमुषसक्किसाली॥स्वधा
मधांमहरिकीएतिकैनजानी॥सोईमहा
दवकोदरवंघमांनी॥४३॥जाकेरथ्याग्र
परसर्पधुजाविराजै॥श्रीसूर्जमंडलवि
मंडलजोतिसाजै॥अषंडलीपउग्रजेसा
तनत्रानधारी॥देवातकसोकसोसुरलो
कविपतिकारी॥४४॥जोहसकेनभुजदं
उविषडूधारी॥संग्रामसिंधुवड्डधाअव
गाहकारी॥लीनीछिडाइजिहिदेवअ
देववामा॥सोईषरात्मजवलीमकरा
क्षनामा॥४५॥भुजंगप्रयात॥लगेसिं
दूनेवाजराजीविराजै॥तिन्हेदेषिकेप
वनकेवेगलाजै॥भलीस्वनेकीकिंकि
नीचारुसाजै॥मिलोदामिनीसोमनो
मेहगाजै॥४६॥पताकावनोसुभसा
दूलसोहै॥सुरंद्रादिन्द्रादिकौचित्त
मोहे॥लसैछत्रमालाहसेसोमभाकैं

रमानाथजानैदसग्रीवताकौं॥४७॥पुरह
रछौडैसवैआपुधाऐ॥मनौहादसादि
त्यकोराहुआऐ॥गिरयामलैलेहरग्रां
ममारै॥मनौपमनीपचदंती विहारै॥
४८॥विजय॥देषिविभीषनकौरनराव
नसक्तिगहीकररोषरईहै॥छौडनहीह
नमंतसुवीचहीपूंछलपेटिकैजारिद
ईहै॥दूसरैव्रह्मकीसक्तिअमोघचला
वतहीहाहाइभईहै॥राषौभलेसर
नागतलछमन॥फूलिकेफूलसीवा
डिलईहै॥४९॥आभिरी॥०॥जोर
हीलक्ष्मनेलेनलाग्योजही॥मुष्टछा
तीहनूंमंतमारीतही॥आसुहीप्रांन
कौनासुसोह्वैगयो॥दंडह्वैतीनमेचेतु
ताकौभयो॥५०॥मरहटा॥आऐउप्रा
ननल्लेधनुबांननकपिदलदियोभगा
इ॥चढिहनूंमंतपरऐंमचंद्रजूरणक्वो

ावनजाइ॥ धरिएकुवांनतवक्षत्रसुरत
एथुकोटमुकटवनाइ॥ लागपोहूजोसर
छूटगसौवललंकगयोआकुलाइ॥५१॥
॥दोधक॥ जदपिहैअतिनिर्गुनताई॥ मा
नसरूपधरोरघुराई॥ लक्षमनरांमजही
अवलोके॥ नेननितेनरहैजलरोके॥५२
वारकलछमनमोहिविलोको॥ मोकह
प्रांनचलेनतजिरोको॥ होंसुमिरोगुन के
तिकतेरे॥ सोदरसुरसहाइकमेरे॥५३॥
लोचनबाहुतुहीवलमेरो॥ तूंवलवि
क्रमवारकहेरो॥ तोविनुहौंछिनप्रांन न
राषौ॥ सियतजोंमुषझूठनभाषौ॥५
४॥ मोहिरहीइतनीमनसंका॥ देननपा
ईविभीषनेलंका॥ वोलिउठोप्रभुको
प्रनुपारो॥ नाहिनेहोतुहेमोमुषकारो॥
५५॥ विभीषनसुंदरी॥ होविनउरघुना
थकौअव॥ देवतजोपरवेदनकोस

व॥ श्रौंषदलेनिसिमेफिरश्रावे॥ केसव
सोसवसाधुजिवावे॥ ५६॥ सोदासूरको
देषतहीमुष॥ रावनकोसिगरोपुःजवेसु
षु॥ वोलुसुनेहहनिमंतकियोपनु॥ कूंदि
गएजहवोषदिकोवनु॥ ५७॥ मूलिगोना
मुनवोषदजानो॥ पर्वतलेनमतोमन
ठानो॥ श्रीराम॥ सवैया॥ लक्ष्मनसोंह
मसोनिजुसंगसियापुनसंगहिछोडन
रैहें॥ वांनररीक्षजितेसवकेसवतेसवकं
दराषाहिविलैहें॥ वंधकोछाडिमिल्यो
हमकोतिहिकीगतिकोनुकहासवकै
है॥ केवलएकमहादुषमोहिसोकोन
केभोनविभीषनजेहै॥ ५८॥ श्रीराम
छपय॥ कश्रादित्यश्रदिष्टनसजम
करोश्रष्टवसु॥ रुद्रनिवोरिसमुंद्रकरै
गंधर्पसर्वपसु॥ वलितकुवेरश्रवेरव
लिहिगहिदेहुइंद्रश्रवविद्याधरनि

अविद्यकरौंविनसिद्धसिद्धसव॥निजुहो
हिदासिद्दितिकीअदितिअनलअनि
लिमिलिजाइजल॥सुनिसुरजसुजउ
अतहींकरोअसुरसंघारवल॥५९॥भु
जंगमप्रयात॥हनेविघ्नचारिवलीवीर
वामे॥गयोसीघ्रग्रांमीजहांएकजामे
चल्योलेसवैपर्वतवैकेप्रनामे॥नजानै
विसल्योषधीकोननामे॥६०॥लसैओ
षधीव्रंदभूव्योमचारी॥कैहेदेवियोद
वेदवाधिकारी॥पुरीभौंमकैसीलियेसी
सीसराजे॥महांमंगलाथी।हनूमंतगा
जे॥६१॥लगेसत्तिएमानुजेएमसाथी॥
जरैठढ्ढेगएज्योमनोंहेमहाथी॥तिन्हे
ज्वाइवेकोमनोप्रेमपाली॥चल्योज्वा
लमालाहिलेऊत्पमाली॥६२॥किधो
प्रातहीकालुजीमेविचारमो॥चल्योअं
सुलेअंसुमालीसघारमो॥किधोजा

रा॰
१०८

तिज्वालामुषीजोरलीनै ॥ महांमत्रजुजामे
मिटैहोमकीनै ॥ ६३ ॥ विनापत्रहैजत्रपा
लासफूले ॥ एमेकोकिलालीभमेभौर
भूले ॥ सदानंदरामेमहानंदकोलै ॥ हनू
मंतआएवसंतैमनोलै ॥ ६४ ॥ मोटन ॥
ठाठेभयेलछिमनमूरछिये ॥ हंनीसुभसे
भसरीरलिये ॥ कोदंडधरेसहवानतरे
लंकेसुनजीवतुजाइघरे ॥ ६५ ॥ श्रीराम
तहीउरलाइलिये ॥ चूमेमुषआसि
षकेरिदिए ॥ कोलाहलजूथकियो ॥ लं
काहहलीदसकंधहियो ॥ ६६ ॥ इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंता
मनिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांलक्ष्मनसं
मोहनवर्ननंनामसप्तदसप्रकास १७
दोहा ॥ प्रसादसेप्रकासमेकेसववुद्धि
कराल ॥ कुंभकंनकोवरनिवोइंद्रजी
तकोकाल ॥ १ ॥ दोधक ॥ रावनलछिम

५८

नकोसुनिनीके॥ छंद॥ गएसबसाधनजी
के॥ रेसुतमित्रविलंबनलावहु॥ कुंभ
करनहिजाहिजगावहु॥ ३॥ लक्षनराक्ष
ससाधनकीने॥ दुंदभीदीहिवजाइनवी
ने॥ मत्रअमत्रवेडअस्वारे॥ कुंजरपंज
जगावतहारे॥ ३॥ आइगईसुरनांरिस
भागी॥ गावनवींनबजावनलागी॥ जा
गिउठौतबहीसुरदोषी॥ छुद्रछुधावहु
भछनपोषी॥ ४॥ नराज॥ अमत्रमत्रदं
तिपत्तिएककोरकेकरे॥ भुजापसारआ
सपासमेघघोषसंघरे॥ विमानआस
मांनकेजहांतहांभगाइयो॥ अमांन
मांनसोदिमांनकुंभकनआइयो॥ ५॥
॥एवन॥ समुद्रसेतबांधिकेमनुषदो
इआइसौ॥ लिएकुचालिवानराल्निलं
कअंकलाइयो॥ मिल्योविभीषननेन
नेकुमोहितोहिहीउरे॥ प्रहस्तआदि

देखअनेकमंत्रमित्रसंघरै॥६॥करैसुकाज
आनुवेगिचित्तमेजुआवही॥असुष्पहो
इजीवजीवसुक्रसुष्षपावही॥समेतरा
मलक्ष्मनेसुवांनराजभाक्षिसो॥सको
समंत्रमित्रपुत्रधामग्रामरक्षियो॥७॥
कुंभकरनमनोरमा॥सुनिजेकुलभूष
नदेवविदूषनवहुआजधिराजनिकेत
भूषन॥भुअभूषनचारिपदारथसाधत
तिनकोंकवहूंनहिवांधिकवाधत॥८॥
पंकजवाटिका॥धर्मकरतअतिअर्थ
वढावत॥संततहितरतकांमलगावत
संततउपजतहीनिसवासर॥साधतत
नमनमुक्तिमहीधर॥९॥दोहा॥राजा
अरुजुगराजजप्रोहितमंत्रीमित्र॥कां
मीकुटिलनसेइयेकृपनअरुतघ्नीमिं
त्र॥१०॥कवित्त॥कांमीवांमीमूढको
ठीक्रोधीकुलदोषीषलकांतरकृत्त

धीमित्रद्रोहीदुजद्रोहिये॥ कुपरिषुकिं
पुरिषुकाहलीकलहीकूनूकुटिलकु
मंत्रीकुलहींननहिंठोहिये॥ पापीलो
भीञ्रठाञ्रधवावैरोवधिरांगवोनाञ्र
विवेकीहठीछलीनिरमोहिए॥ समस
र्वभक्षीदेववादीजकुवादीजड्ड्ञ्रपसी
ञ्रैसोभूंमभूपतिनसोहिए॥ ११॥ निस
पालका॥ वांनरजांनसुरजांनसुभगा
थहे॥ मनुषजनिजांनषेनांथजग
नाथहे॥ जानुकिहिदेहुकरनेहुकुल
देहुसो॥ ञ्राजुरनसाजिपनिगाजुह
सिमहसो॥ १२॥ रावन॥ दोहा॥ कुंभक
रनकरिजुध्धकोसोइरहोघरजाइ॥ मि
लोकिजाइविभीषनेगहोसत्रकेपा
इ॥ १३॥ मंदोदरी॥ इंद्रजीतञ्रति
कायसुनिनारंतकसुषपाइ॥ भेय
निसोप्रभुञ्रकतहेतुमनकहतसमु

आइ॥९४॥चंचला॥देवकुंभकर्नकेस
मानजानिजेनआन॥ब्रह्मविष्नुरुद्रइं
द्रचंदकोहरोविमांन॥एजकाजकोकहे
जुमानिमेसुप्रेमपालि॥कोचलोनको
चलेनकालकीकुचालिचालि॥९५॥वि
स्वभाजिभाजिजातछोडिदेवताअसेष
जामदग्निदेषदेषिकिहिनकिएनारि
वेष॥रीसएंमतेवचौक्चेनवांनरेसवालि॥
कोचलोनकोचलेनकालकीकुचालि
चालि॥९६॥विजय॥एंमहिचारनदी
नीसियाजिनिकेदुषसोतपलीलि
ए्हो॥रांमहिमांरनदीनेसहोदचुरांम
हिआवनजांनदिएहो॥देहुधरोतुम
हीलगिआजुलोरांमहिकेपियज्वा
एजिएहो॥दूरिकीदुजरताढुजहीन
होईहिरआतताइोकिएहो॥९७॥दो
हा॥संषकरहुविग्रहकरोसीताको

तुमदेहु॥ गनैोनपिय़देहीनिमैंपतिव्र
ताकोदेहु॥ १८॥ रावनमंदरा॥ हौसतु
छांडिमेमिलौमृगलोचनक्यौंछमि
होअपराधनए॥ नाहिरीसुतवांधेति
हारेमेकालिहींसोदरसंगहए॥ वांव़न
मांगिञपेडधरादक्षिनावलिचौदहलो
कदए॥ एंचककैञहतोहविंचकवाधि
पतालनऊपठए॥ १९॥ दोहा॥ देवरकु
भकरंनसोंहरिअरिसोसुतपाइ॥ राव
नसोंप्रभकोनुकेनकेमंदोदरियडरा
इ॥ २०॥ चांमर॥ कुंभकर्नरावनैप्रदछि
नासुदैचल्योहाइहाइहोरहीअकास
आसुहीहल्यौ॥ मध्यछुद्रघटिकाकि
रीटअंगसोभनो॥ लक्षपक्षसोंकलिं
दइंद्रपैचठोमनो॥ २१॥ नराज॥ उऐदि
सांदिसांकपीसकोरिकोरिस्वासहीं
चपेटपेटवाहुजंघजानुसौंतहातहीं॥

रा०
१११

लिये अहो श्रेचि श्रेचि वीर वाहु जा नही
भषे ति अंत रिक्ष रिक्ष लछ लक्षि वात
हीं॥२२॥कुंभकरन भुजंगप्रयात॥न
ह्वै तारिका ह्वै सुवा ह्वै न मांनै न हौं संभु
कौ दंड सां चो वषां नौ॥नहौं ताल मा
लीष न्वै जा ह मारौ॥नहौं दूषनै सिंध स
धौ निहारौ॥२३॥सुरी आसुरी सुंदरी भो
ग वन्वै॥महां काल कौ काल हौं कुंभकर्
न्वै॥सुनौ राम संग्राम कौ तौ हि वालौ॥
वठौ गर्भ लंका हि आये सु षालौ॥२४॥
उठै पेस री केसरी जोर छायौ॥वली वा
लि कौ पूत ले नील धायौ॥हनूमंत सु
ग्रीव सौ भे सभागे॥डसे डां स से मंत मा
तंग लागे॥२५॥दसग्रीउ के वंध सुग्रीव
पाए॥चल्यौ लंक मैले भले अंकलाए॥
हनूमंत ले ताहन्यौ देह भूलौ॥छुटौ
कर्न नासा हि ले इंद्र मूलौ॥२६॥समुहा

१११

सोमन्त्र्केघारिएकताले॥फिर्योराम
हींसामुहेंहोभोगदाले॥इतंमंतजूंपूंछ
सोलाइलीनो॥नजांनोकेवैसिंधमेडा
रदीनो॥२७॥जहींकालुकीकीकेतुसी
तालुलीनों॥कियोरांमहीहस्तपादा
द्विहीनों॥चल्योलोटत्वेपोटत्वेयोकु
चाली॥ठज्योमुंडलेवांनुज्योमुंडमाली
२८॥जहीस्वर्गकीदुंदभीदीहवाजे॥के
रिपुष्पकीव्रिष्टिदेवसराजे॥दसग्रीव
सोकग्रसोलोकहारी॥भयोलंककेम
धआतंकभारी॥२९॥दोहा॥तवही
गएनिकुंभलाहोमहेतइंद्रजीत॥त
वेकहेंारघुनाथसोमंतोविभीषनमी
त॥३०॥विभीषनचर्चरी॥जोरिअंजु
लकोविभीषनरांमसोविनतीकरी॥
इंद्रजीतनिकुंभलागएहोमकीरि
सजीधरी॥सिद्धहोइमुसिद्धजोलग

रा॰
११२

रीसतौलगिमारीये॥सिधिहोमुष्रसिद्धहेयहसर्वदांहमहारियै॥२५॥दोहा॥सोरीयाहिहितेवलीवांनरक्षिजुकोइ॥वारहवरषछुधात्रषानिद्राजीतीहोइ॥२६॥चवरी॥रांमचंद्रविदाकरीनवेगिलछमनवीरकी॥सोविभीषनजांमवंतहिसंगअंगदधीरकी॥नीलुलैनलकेसरीहनमंतअंतकज्योचले॥२७॥जांमवंतहिमारिहैमरतीनअंगदक्षेदियौ॥चारिमारिविभीषनेहनिमंतपंचमभेदियौ॥एकएकअनेकवांनरजाइलछमनसौजुरे॥अंधअंधकज्युंहुज्योबवैसोभिरोभवहीहरो॥२८॥गीतिका॥इंद्रजीतअजीतलछमनअस्त्रसस्त्रनसंघरौ॥सएकएकअनेकमारतवृंदज्योमंदरटरेतवकोपिरावबवसचकोसिरवांननतक्षनउधरो॥दस

॥दोहाअरुइनकोअर्थवरनालिरव्यो॥

केरसंध्याकार तु तौ सिर जाइ अंजल मै परौ ३५ ॥ सौमित्र लछमन इंद्रजीत हि स्वक्ष संष वजाइयौ ॥ कहि साधु साधु समेत इंद्र हि देवता सव आइयौ ॥ कछ मागजे वर वीर सत्व भक्ति श्री रघुनाथ की ॥ पहिराइ माल विसाल अर्चय केगए सव साथ की ॥ ३६ ॥ कलहंस ॥ हति इंद्रजीत कह लछिमन आए ॥ हसिरामचंद्र वहु धांउ रलाए सुनि पुत्र मित्र सुत सोदर मेरे ॥ कहि कौतुक तुम नवर नौ तेरे ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ छुदा पियासा नीद तुम जौ न साधते वीर ॥ इंद्रजीत को मारतौ सुनि लछिमन रन धीर ॥ ३८ ॥ इति श्री मत्सकल लोकलोचन चकोर चिंतामन श्री राम चंद्र चंद्रिकायां कुंभकर्ण इंद्रजीत वध वर्ननं नाम अष्टादस प्रकास ॥ १८ ॥ दोहा ॥ उनईसमे प्रकास मे एवन दृष्यनिधांन



जूझेगेमकरणसपुनिहूहे दूतविधांन॥१॥
एवनजेहेगूढथलएवरलुटैविसाल मं
दोदरीकेठारवो अरुएवनको काल॥२॥
मोटनक॥ देषोमुषअंजुलमेजवहीं॥
हाहाकरिभूमिगिरोतवहो॥ आएसुत
सोदरमिंत्रतवे॥ मंदोदरीस्योत्रियआरी
सवे॥३॥ कोलाहलमंदिरमाअभयो॥ मा
नोउठिकेप्रभुप्रानगयो॥ रोवेदसकंठ
विलापुकरै॥ कोऊनकहूंधरधीरधरै॥४॥
॥रावन॥दंडक॥ आजुआदित्पजलप
वनपावकप्रवलचंद्रआनंदमयत्रास
जगकोहरो॥ गांनकिंनरकरहुनत्प
गंधर्पकुलजक्षविधलक्षउरजक्षक
दमकरो॥ ब्रम्हरुद्रादिसवदेवत्रैलोक
केराजकोसाजुअभिषकइंद्रहिक
रे॥ आजुसियएमदेलंककुलदूषन
हिजगपकोंजाइसरवगपविप्रनिवरो॥

॥५॥मंदोदरी॥ प्रभुसोकत्तजोतनधीए घरोजू॥ सकसत्रवधोसुविचारकीजै कुल मेअवजीवनजोरहिहेजू॥ सकसोकस मुद्रहिसावसिहेजू॥६॥मंदोदरी॥ अन कूल॥ सोदराजूझोसुतहितकारी॥ कोग हिहैलंकाअधिकारी॥ सीतहिदेकेरि पुहिसिधारो॥ मोहतुहेवलविक्रमभा रो॥७॥रावनतारक॥ तुमअवसीतहिदे इनदेह विनसुतवंधकौनहिदेहू॥ यह तनुतजिजोलाजहिहै॥ वनवसिजाइ सवेदुषसैहे॥८॥मकराक्षभुजंगप्रयात॥ कहांकुंभकर्नकहांइंद्रजीते॥ करेसोइ वोवोकरेजुहहभीत॥ सुजोलौंजियोहोस दादासुतेरो॥ मिसेदेसकेकोसुनोमंत्र मेरो॥९॥ महाराजलंकासदाराजुकीजे करेराजुहहमेरीविदावेगिदीजेहेतोरां म स्योवंधसुग्रीउमारो॥ अजुधाहिलोरा

धांनीसिधारौ॥१०॥विभीषनवसंततिलक॥कोदंडरघुनाथहाथसम्हारिलीनौभागेसवैसमरजूथपतिकीजे॥वेटाबलिष्टषरकौमकराक्ष आयो॥संघारिकालजनुकालकरालुधायो॥११॥सुग्रीवअंगदवलीहनमंतरांको॥रांकोनरहोजहीरघुवीरविलोकौ॥मारेविभीषनगदाउरजोरठेली॥कालीसमानभुजलछिमनकंठमेली॥१२॥णाठेगहोप्रवलअंगनिअंगभारे॥कोटनकटैवहुभांतिनिकारहारे॥व्रंम्हादियोवतअश्त्रसंस्त्रनलागे॥लैहीचल्योसरसिंघहिजोरजागे॥१३॥महाअंधकारीदिविभूतललीलिलीनो॥ग्रास्तातुरांहजुतमानहुचंद्रकीनो॥हाहादसव्दजहीसवलोकपकारि॥वांठअसेषअंगराक्षसविदारे॥१४॥देवादिदेवमुनिसिधसवपु

ष्यवर्षे॥ श्रीरामचंद्रपगलागतहर्षे॥ दो
हा॥ जूअतहीमकराक्षकोरावनअतिदु
षपाइ॥ सत्वश्रीरघुनाथपेदियोवसी
ठ्ठपठाइ॥ ७५ तोटक॥ दूतहिदेषतहींजग
नाइक॥ नाकहवूझिउठसुषदाइक॥ राव
नकेकुसलीसुतसोदर॥ काजकोंनकेर
अपनेघर॥ ७६॥ दूतविजय॥ पूजउठेज
वहीसिवकोतवहीवुधसुक्रव्रहस्पति
आए॥ केविनतीमिसकूसिवकेतिनदे
वअदेवसवेविसराए॥ होंमकीरीतन
रीमिषईकछुमंत्रदियोव्रुतिलागि
मिषाए॥ होइतकोपरयोउनिकोउत
लेप्रभुमंदिरमोंअसिधाए॥ ७७ मंदेस
य॥ सूपनषाजुविरूपकरीहमनातेदि
योतुमकोदुषभारो॥ वाधिवंधनकी
नोहुतोअवमोसुतवंधनकीनोनि
हारो॥ होहिजुहोनीसुदैहीरहैनमि

टेजियकोरिविचारविचारो॥देभगुनंद
नकोफरासारघुनंदनलेसिरकोपगु
धारो॥१८॥दोहा॥प्रतिउत्तरदहतहिदि
योग्रहकहिश्रीरघुनाथ॥कहिजोएव
नहोहिजवमंदोदरकेसाथ॥१९॥राव
नगुसंज्जुत॥कहिधोविलंवुकहाभये
रघुनाथपेजवहीगयो॥किहिवेषतेग्र
वलोकियो॥कहितोहिउत्तरकहदियो॥
२०॥तदंडक॥भूतलकेइंद्रभूमपेठ
हेतेरामचंद्रसांनिककनकमृगछा
लहिविछायेजू॥कुंभहरनकुंभकरन
नासाहरगोदसीसचरनग्रकंपग्रक्ष
ग्ररिउरलाएजू॥देवांतकनारंतकग्रं
तकज्यौमुसक्यातविभीषनवेनत
दिकांनुमुषवायेजू॥मेघनादमकरा
क्षमहोदरप्रानहारवांनत्योविलोक
तपरमसुषपाएजू॥२१॥अन्तरंचमं

दिगभूमिटरीभुवदेवनकोम्प्रगनंदनभ
पनपेवरत्तेके॥वावनस्वर्गदियोसवरि
दूहिवांलिवलीहिपतालपठाके॥संधि
कीवातनकोप्रतिउत्तरआपनहूकहिजे
हितकेके॥दीनीहैलंकविभीषनकोअ
वदेहिकहातुमकोहमदेके॥२२॥मंदोद
री॥तवसवकहिकहिहारे॥रामकेदूतआ
ए॥अवसमअपरीपुत्रभैयाजुआए॥द
समुषसुषजीजेरामसोहोलेरीसो॥हरि
हरिहिपहारदेविदुर्गालरीजेसो॥२३॥आव
नछतुकरपटसोजोहोपावतोकुठार॥र
घुपतिवपुराकोधावतोसिंधपार॥हति
सुरपतिविस्नमायाविलासी॥सुनिसु
मुषितोकोल्पावतोलक्षिदासी॥२४॥चां
मर॥प्रोढम्रृठकोसमूठगूठग्रहमेगयो॥
सुक्रमंत्रसाधिसाधिहोमकोजहीभ
यो॥वाइपूतवालपूतजांमवंतधाटि

यो॥ लंकमैनिसंक अंकलंकनाथपाइयो
२५॥ मन्निदंतपंत्तवाजराजछोरिकेदये॥
भांतिभांतिपक्षिराजभाजिभाजिकेग
गए॥ आसनेविछावनेवितांनितांनि
फारियो॥ जत्रतत्रछत्रचौरचारुचूरि
रियो॥ २६॥ भुजंगप्रयात॥ भगीदेषिके
संकलंकेसवाला॥ दुरीदौरमंदोदरीचि
त्रसाला॥ तहांदौरिगोवालिकोपूतु।
फूल्यो॥ सवैचित्रकीपुत्रिकादेषिभू
ल्यो॥ २७॥ गहेदौरिताकोतजेनादिसा
को॥ तजेतादिसाकोभजेवांमताको॥ भ
लीकेनिहारीसवैत्रसारी॥ लहेसुंदरी
क्योंदरीकोविहारी॥ २८॥ तवेदृष्टिकी
अष्टकोचित्रधंन्या॥ हसीएकताको
तहादेवकंन्या॥ तहांहांसहीदेवकं
न्यादुषाई॥ तिहीसंककैलंकरांनी
वताई॥ २९॥ सुआनीगहेकेसलंके

चि

सरांनी॥तमश्रीमनोसहरसोभानिसानी
गहेवांहस्रेचेचहूंवोरताको॥मनोहंस
लीनेमृनालीलताको॥३०॥छुटीकंठमा
लासरेहारटूटे॥षसेफूलफूललसेके
सछूटे॥फटीकंचुकीकिंकिनीचारुछू
टी॥पुरीभोमकेसीमनोरुद्रलूटी॥३१॥वि
नाकंचुकीस्वछवक्षोजराजे॥मनोसांचि
हूधीफूलेसोभसाजे॥मनोसाचिहूश्री
फूलेसोभसाजे॥मनोस्वर्नकेकुंभलो
वनसूरे॥वसीकर्नकेमंत्रसंपूर्नपूरे॥
३२॥मनोरिषिदेवासदारक्षहीके॥कि
धोगुक्षहेकामसंजीवनीके॥मनोचि
त्तचोगांनकोमूलसोहे॥हियेहेमकेहा
लगोलानिमोहे॥३३॥सुनीलंकरांनी
निकीदीनवांनी॥तहीछांडदीनीमहा
मोनमांनी॥उठीलैगदाकोजदालंक
वासी॥गयेभाजिकेसर्वसाषाविला।

सी॥३४॥मंदोदरी॥दोहा॥सीतहिदीनै
दुषविथांसाचौदेषौआजु॥कैरेजुजेसी
सोलहेकहारेककहराजु॥३५॥रावन
विजय॥कोवपुराजुमिलोहेविभीषन
हेकुलदूषनजीवेगोकोलौ॥कुंभकरन
मरोमघवारिषतोरकह्यनउरोजम
सोलौ॥श्रीरघुनाथकेगातनिसुंदर
जानेननंकुसरातहेतोलौ॥सालुमवे
दगपालनकेकररावनकेकरवारहेजो
लौ॥३६॥चामर॥रावनेचलेसुनेसुधा
मधामतेसवे॥सूरसाजिसाजसाजु
गाजिगाजकेतवे॥दीहदुंदभीअपा
रभांतिभांतिवाजहीं॥जहंभूमिमधप
कुंधमचदंतिगाजही॥३७॥चचरी॥दें
दूश्रीरघुनाथकोरथुहीनभूतलदे
षिके॥वेगस्वारथसोकह्योरथुसाजि
लेसविसेषिके॥नूनअक्षयवांनस्व

क्षयभेदिलैतनज्ञानको॥ आईयोरनभूमि
मैकरअप्रमेयपनामको॥३८॥कोटिभांति
नियवनतैमनतैमह्मंलघुतालसै॥वैरि
केधुजअग्रश्रीहनमंतअंतकज्योहसै॥रा
मचंद्रप्रदक्षनाकरिदछैहै॥जवहीचरे॥
पुष्पवृष्टिवजाइदुंदभिदेवतावइधावरे॥
रामकोरथुमध्यदेषनकोपुरावनकेवढे॥
बीसवाहनिकीसरावलिव्योमभूतल
सोवढे॥सैलहैसिकतागएसववृष्टिके
वलसंघरे॥रिक्षवानरछेदितक्षनलक्षि
धांछतनाकरे॥४०॥सुंदरी॥वांननिसा
थउठेवहुवांनरजाइपरेमलयाचल
कीधर॥सूरजमंडलमैइकरावत॥एक
अकासनदीमुषधावत॥४१॥एकगए
जमलोकसहेदुष॥एककहेभवभूत
निसोरूष॥एकनिसागरमाझपरेमरि
एकगयेवडवानलमैजरि॥४२॥मोटक

रा०
११८

श्रीलक्ष्मनकोपकैराजवहीं ॥ छोडोसरपा
वककोतवही ॥ जोरोसरपंजरछारकैरो ॥ नैरि
तनिकोअतिचित्त उरो ॥ दौरैहनिमंतवली
वलिसो ॥ लैअंगदसंगसवैदलसो ॥ मानो
गिरिराजनजेउरको ॥ षैचेहुवोरपरंदको
५४ ॥ हीराछंद ॥ अंगदलैअंगनिसवअं
गनिमुरझाइकै ॥ रिक्षपतिहिअक्षरिप
हिलक्षिगतिरिझाइकै ॥ वांनरगनवांन
नसमकैसवजवहीमुम्यो ॥ रावनदुषदा
वनजगपावनसमुहोजुम्यो ॥ ५५ ॥ ब्रह्म
रूपक ॥ इंद्रजीतिजीतअांनिराकियोसु

स्तो

वांनतांनैं ॥ छोडुदीनवीरवांनकंठकैप्रमा
नआंनसो ॥ प्रतापकारचांपचर्ममर्मवेध
छेदि ॥ जातुभौरसातलेअसेषकंठमा
लभेदि ॥ ५६ ॥ दंडक ॥ सूरजमुसलनी
लपटिसपरिघनल ॥ जांमवंतअसिह
नूंतोमरप्रहारैहे ॥ फरसासुषेनकुंतकै

सुग्रीवप्रसलविभीषनगजागतभिंड
पालतोरहै॥ मौगराडुविंदतारकदराकु
मुदनेजाअंगदसिलागवाक्षविटपवि
दारहे॥ अंकुसमुरभिचक्रदधिमुष
सेषसन्निवानतीनरावनश्रीरामचंद्र
मारहे॥ ४७॥ दोहा॥ दुहूभुजश्रीरघु
नाथसोविरचेजुद्धविलास॥ हाथअठा
रहजथपनिमारतकेसवदास॥ ४८॥ गं
गोदक॥ जुद्धजोरीजहांजेसेकरताहि
तेहींदिसारोकिरायेतही॥ आपनेअ
वलेक्षत्रकाटेसवेताहिक्योंहूंकहघा
उलागेनहीं॥ दोरिसोंमित्रलेवानुको
दंडजेंगांडदपंडीधुजाधीरछत्रावली
सेलअंगावलीछोडिमानोउडीएक
हीवेरकेहंसवंसावली॥ ४९॥ त्रभंगी॥ ल
छिमनअतिनक्षनवुधिविजक्षनराव
नसोरिसछांडिदई॥ वहुवाननिछेडे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जोसिरषंडैसोफिरमंडैसोभजरी॥जद्द
पिनपंडितगुनगनमंडितरिपुवपुषं
डितभूलिरह्यौ॥तजिमनवचकाइक
सूरसहाइकरघुनाइकसौवचनकह्यौ
५०॥ठाठौरनगाजततनमनभ्राजतनै
कनलाजतसवलाइक॥सुनश्रीरघुनं
दनिमुनिजनवंदनदुष्टनिकंदनसुष
दाइक॥यहटेरैनटारौमरैनमाम्यौहौह
टिहारोघरिसाइक॥रावननहिमारत
देवपुकारतहेश्वतञ्चारतजगनाइक
५१॥छपय॥जिहिसरमधुमदमारि
महामुरदनकीनौ॥मारीचकर्कसुनकेस
बहतिसंषजलीनौ॥निहकंटकसुरकं
टककम्पौकैटभवपुषंड्यौ॥षरदूषनत्रि
सरासषंडनदुषंडविहंडौ॥कुंभकरन
जिहिसंघरह्यवलुनप्रनंगपानैटरह्यौ॥ति
हिवांणपांनदशकंठकेदस्यौकंठकुं

११९

ठितकरइ॥५२॥दोहा॥रघुपतिपठयौ
आसुहीं असुहरवुद्धिनिधांन॥दस
सिरदसहूंदिसनिकौवालिदेआयौवां
न॥५३॥मदनमनोहर॥भुवभारउता
रहिसंजुतराषसकौगनजाइरसातल
सौअनुराग्यो॥जगमेजयसद्दसमेतहू
केसवराजविभीषनकेसिरजाग्यो॥म
यदांनवनंदिनिकेसुषसौमिलकेसि
यकेहियकौदुषभाग्यो॥सुभदंदभिसौ
सगजासरांमकोरावनकेउरसाथहीं
लाग्यो॥५४॥मंदोदरीविजय॥जीत
लियेद्रगपालसचीकेउसासनदेव
नदीसवसकी॥वासहुंनिसिदवन
कीनदेवनिकीरहेसंपतिहूकी॥तीन
हूंलोकनिकीतरुनीनिकीवारीवं
धीहुतीदंउदहूंकी॥सेवतस्वांनभ्र
गालसुरावनसोवतसेजपरयोभव

भूकी॥ ५५॥ श्रीरामतोटक॥ अवजाहु
विभीषनरावनलैकै॥ तुमबंधकुटंबक्रि
यासवकैकै॥ जनुसेवकसंपतिकोजु
सम्हारो॥ भयनंदिनिकेउरकोदुषटा
रो ५६॥ इतिश्रीमत्सकललोकलो
चनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्र
कायांरावनवधवर्ननंनामउनईसम
प्रकास॥ १९॥ दोहा॥ वीसमाजसीता
मिलनइंद्रादिकसवआइ॥ भाद्वाजके
आश्रमहिजैहैश्रीरघुराइ॥ १॥ श्रीरा
मतोटक॥ जयजाइकहोहनमंतहमा
रो॥ सुषदेवहुदीरघदुष्पविदारो॥ सव
भूषनभूषितकैसुभगीता॥ हमकोतु
मवेगदिषावहुसीता॥ २॥ हनमंतग
येजवहीजहसीता॥ तवजाइकहीज
यकीसवगीता॥ पगलागिकहोजन
कीपगधारो॥ मगुचाहतहैरघुनाथ

तिहारो॥३॥मिगेरतनभूषनभूषितकी
नै॥धरिकैकुसमावलिअंगनवीनै॥दु
जदेवनिवेदपठीमुषगीता॥नवपाव
कअंककचलीचढिसीता॥४॥हनूमान
भुजगंप्रियातसवल्लासवेअंगअंगा
रसोहै॥विलोकैरमादेवदेवीविमोहै॥
पिताअंकजोकंन्यकासुभगीता॥ल
सेअग्निकेअंकतोसुद्धसीता॥५॥म
हादेवकेनेत्रकीपुत्रकासी॥किसग्रा
मकीभूमिमेचंडिकासी॥किधोरत्नसिं
घासनस्यांसचीहे॥किधोएगनीएग
पूरचीहै॥६॥गिरापूरमैहेपयादेवता
सी॥किधोकुंजुकीमंजुसोभाप्रकासी॥
किधोपद्महीमेसफाकंदसोहै॥कि
धोपद्मिनीमधयद्मयाविमोहै॥७॥
किसिंदूरसेलागमेसिद्धकंन्या॥कि
धोपद्मिनीसरसंजुक्तधन्या॥सरोज

सनोहैमनौचारुवांनी॥जपापुष्पकी
पीठवैठीभमांनी॥५मनौश्रौषदीवृंद
मेरोहिनीसी॥किदिग्दाहमेदेषिसेजो
गनीसी॥धरापुत्रज्योस्वनमालाप्रका
से॥मनिजोतिसीतक्षकाभोगभा
से॥६॥सुदृवज्र॥श्रासावरीमानिककुं
भहोभेश्रसोकलग्नावनदेवतासी॥
पालासमालाकुसमालिमध्येवसं
तलक्ष्मीसुभलछनासी॥श्रालक्तप
दसुभचित्रपुत्रीमनौविराजेश्रानि
चारुवेषा॥संपूर्णसिंदूरप्रभाप्रभा
सेगनेसभालस्थलीचंद्ररेषा॥११॥
॥विजय॥हैमनदर्पनमेप्रतविंबक
प्रीतहिपेश्रनुरागश्रभीता॥पुंजप्र
तापमेकीरतसीतपतेजनिमेकि
धौसिद्धविनीता॥ज्योरघुनाथप्रति
हारिपेभक्तिलसेउरकेसवकेसुभ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गीता॥ त्यौ अवलोकिये आनदकं
दुहूंतासन अंकसवासन सीता॥११॥
दोहा॥ इंद्र वरुन मुनि सिद्ध जमु धर्म
सहित धनपाल॥ ब्रम्ह रुद्र लैदस र
थहि आइगए तिहिकाल॥१२॥ अ
निवाच वसंततिलका॥ श्री एम चं
द्रसहसं तन सुद्द सीता॥ ब्रम्हादि दे
वसवगावत सुद्द गीत॥ द्वै जै कृपा
ल गृहि जे जनक आत्मजाया॥ जो
गीस ईसतनुमय पह जोग माया॥१३॥
श्री एम चंद्र हसि अंकलगाइ लीनी॥
सिंघासनासी सुभ पावक आनि दी
नी॥ देव निदुंदभी वजाइ सुभ गीत।
गाए॥ त्रैलोकलोचन चकोर निचि
त्त भाए॥१४॥ ब्रम्हांदोधक॥ एम सदा
तुम अंतरजामी॥ लोकचतुर्दस के
अभिरामी॥ निर्गुन एक तुम्हें जग जा

ए॰
१२२

नै एकसदां गुनवंतवषांनै ॥१५॥ जो
तजै गै जगमध्यतिहारी ॥ जाइकहीन
सुनीननिहारी ॥ कोऊकहेपरिमोन
नताकोरूपुनआदिनअंतनजाको
॥१६॥ ताके ॥ तुमहीं गुनरूपगुनी नु
मठाए ॥ तुमएकतेंरूपअनेगव ...
इकुहेर ॥ जोगुनरूपतिहांए ॥ तिहि
अष्टचीवहुतामेविहाए ॥ १७॥ गुन
सत्वधांतुमरक्षनजाको ॥ अवविष
सकेहेसिगौजगुताको ॥ तुमहीज
गहुसरूपसघाएं ॥ अवहेजगमध
तमोगुनभाए ॥१८॥ तुमहीजुगुहेन
गुहेतुमहीमे ॥ तुमहीविरचीमरजा
दइनीमे ॥ मरजादहिछांडतजांनत
जाली ॥ तबही अवतारधरेतुमता
कौ ॥१९॥ तुमहींधरिकुक्षपवषधेरी
जूपुनिमीनह्वैवदनकोउधरेजू ॥ १२२

तुमहीजगपवराहभयेजू॥धाछीन
लईहिरनाक्षहरेजू॥२०॥तुमहीना
सिंघसरूपसिधारोप्रहलादकोदी
रघदुष्पविदारो॥तुमहींवलवांव
नवेषछलेजू॥भगुनंदनह्वैछितस
हरेजू॥२१॥तुमहीसहरावनदुष्ट
सघारो॥धानीमहवूडतधर्मउवारो
तुमहीपुनिकलिहिरूपधरोगे॥ह
तिदुष्टनिकोभुवभारहरोगे॥२२॥तु
मिवौधसरूपगयाहिधरोगे॥तुमक
लिकिह्वैमलेछसमूहहरोगे॥इ
हिभांतअनेकसरूपतिहारे॥अप
नीमाजादकेकाजसम्हारे॥२३॥
महादेवपंकजवाटिका॥श्रीरघुवर
तुमहोजगनाइक॥देषहुदसरथ
कोसुषदाइक॥सोदासहितपि
तापदपावन॥वंदनकियनवही

मनभांवन॥२४॥ दसरथनिसिपानिका॥ एंमसुतधर्मजतसीयमनमानिये॥ बंधजनुमातगनप्रानसमजानिये॥ एंमकहलक्षमनविसेषप्रभलेषिये॥ ईसप्रुईसजगदीससमदेषिए॥२५॥ श्रीरामचंचल्ला॥ जूझिजझिकेगएजिवांनराजरिक्षराज॥ कुभकर्नलोकहनेराक्षिसोजिराजराजनूपोरषसोअसेषजोउदलराप्रुआजु॥ आइपाइलागियोतिन्हेंसमेतिदेवराजु॥२६॥ दोहा॥ वांनरारिक्षसरिक्षसवपत्रकलित्रसमेत॥ पुष्पकचढिप्रभुनाथजूचलेअवधिकेहेत॥२७॥ चांमर॥ सेतुसीतहिसोभनादरसाइपंचवटीगेप॥ पाइलागअगस्तकेअरुअत्रिपेत्तिविदाभए॥ चित्रकूटविलोकितवहीप्रागआंनिविलोकियो

भरद्वाजबसेजहांजिनतेंनपावनहै
वियो ॥ २८ ॥ श्रीरामप्रयासदरसन ॥
तारकु ॥ चिलकैदुतसूक्षमसोभति
वारु ॥ तनुहैजनुसेवतहैसुखवारु ॥ प्र
तिबिंबितदीपतिहैजलमांही ॥ जनु
ज्वालमुषीजलजालअन्हाई ॥ २९
जलकीदुतपीतिसितासितसोहे ॥ ब
हुपातकघातककेइककोहे ॥ मेरुस्रे
नमिलेघसिकुंकुमनीको ॥ नपभा
रयूषंडिदिसौजनटीको ॥ ३० ॥ दंडक
चतुर्वदनपंचवदनवदनषटसहस
वदनहसिहिसिगातिगाईहे ॥ सात
लोकसातदीपसातन्हासातलनि
गंगाजूकीसोभासवहीकोसुषदा
ईहे ॥ जमुनाकोजलुरहौफलके
प्रवाहपरकेसोदासवीचवीच
गिराकीगुराईहे ॥ सोभनसरीरपर

कुंकमुविलेपनिकीस्यामसतदु कू
लझीनग्रलकतग्रारीहै ॥२९॥ सु
षीमचंद्रकला ॥ भवसागरकीजतु
सेतउजागरसुंदरतासिगारीवसकै ॥
तिहुदेवनकीदुतिसौदासेगति
साधत्रिदेवनिकैरसकौ ॥ कहिकै
सवदेवत्रईमतिसौपरतापत्रईोत
लकैमसकौ ॥ सुवदेचकालत्रलो
कत्रिवनिहिकैतुत्रविक्रमकेजकौ
२२॥ भभीषनदंडक ॥ भूतलकीवे
नीसीत्रवैनीसुभसोभजतुएकैव
हैसुरपुरमारगविभातुहै ॥ एकैक
हैपूरनहेग्रादिनग्रनंतकोउताकै
यहकैसोदासतीनरूपगातुहै ॥ स
वदुपहरसवसुषकरमोरजोनकै
नेयहग्रदभुतसिंगारग्रवदातुहै
दासपासहीतैथिरचरजीवनकौ

म

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोटिकोटजन्मकोकुगंधमिटिजातु
है॥३३॥भुजंगप्रयात॥भरद्वाजकीवा
टिकारांमदेषी॥महादेवकेसीवनीनि
त्रलेषी॥सवैवृक्षमंदारहूंतेभलेहैं॥
चहूंकालकेफूलफूलेफलेहैं॥कहूं
हंमनीहंससोचित्तचोरै॥चुनैवोस
केवृंदमुक्तानमोरै॥सुकालीकहूं
मांकालीविराजे॥पटैमंत्रवेदावली
भेदभाजै॥कहूंवृछमूलस्थलीतो
यपीवै॥महामत्रमातंगसीबानछी
वै॥कहूंविप्रपूजाकहूंवेदचर्चा॥क
हूंजोगशिक्षाकहूंवेदचर्चाकहूंसा
धपुरांनकीगाथगावै॥कहूंजग्यकी
शुभसालावनावै॥कहूंअग्निहोत्रा
दिकेकर्मधारै॥कहूंवैठकेब्रह्मविद्या
विचारै॥३४॥सुकारीनहांदेषिए
वक्रागीचलैपिप्पलीतिक्षणधास

रा०
१२५

भागी॥ जैठ्योफूलैसक्रहै जत्रनीकेजु
रामानुरागी सेवै रामहीकै जहां वारि
दैवृंदवाजेनिसानै॥ मयूरीमहानन्नका
रीविराजै॥ तहांविप्रवैठेभरद्वाजमाहे
मनोएककीवक्रलोकेसमाहै॥ ३९॥ ल
क्ष्मन॥ दंडक॥ केसौदासमृगजवच्छ
पूचोषेवाघनीनिचाटतिसुरभि वा
घवालकवदनहै॥ सिंघनिकीसटाऐं
चेकलभकरीनिकरिहै घनकोऋास
नेपंदकोरहै॥ फनीकेफननिपरलो
चतमुदतमोरकोधुनविरोधजहांम
दुनमदनहै॥ वानरफिरतडोरेडोरेअंध
तपसीनिरिषिकोनिवासकिधोंम
दकोसदनहै॥ ४०॥ भुजंगप्रयात॥
तहांकामरीवल्कलेवाससोहैं॥ त्रि
हैअल्पधीकल्पसाक्षी विमोहै॥ धी
संषलादुषःदाहितुरंते॥ मनोसंभज

ग

संगलीनेस्यनंतो॥४१॥लक्षमन

मालनी॥कुसमितजराजेहरष

वरषासमेसा॥विरलजटानिसा

षीस्वर्नदीकूलकैसा॥जगमग

दूरसायेसूरकोअंसअंसो॥सुर

नरकहतश्रीरामकोनामजे

सो॥४२॥भुजंगप्रयात॥ग्रहेकस

पासेप्रियासीवषाने॥कपेश्या

पकेत्रासतेगातमाने॥मनोचंं

द्रमाचंद्रकासोभसाजै॥जरासे

मिल्लेयोभरह्योजराजे॥४३॥दो॰

भस्मत्रपुंडकसोभसुभवानेत

त्रुहृउदार॥मनहुत्रसोनासोन

डुलिवंदनलागीवीर॥४४॥भुज

गप्रयात॥मनोअंकशालीरत

सेसत्यकीसी॥किधोवेदविद्या

प्रभाकीभमीसी॥वसेगंगकी

सोभज्यौ जानुंकी ॥ विराजे सदा जो तदंतावलीकी ॥ ८५ ॥ गीतक ॥ भ्रकुटीविराजत सोभमांनहु मंत्र अद्भुत सामके ॥ जिनके विलोक नहीं विलात असेष कर्मकु कांम के ॥ मुषवास आस प्रकास के सब भौरभीर निसाजही ॥ जनु सामके सुभस्वस अष्टादश सपक्ष विराजही ॥ ८६ ॥ अतिकंबुकंठ त्ररेषराजनराजु सीउनमानिये ॥ अवीनीति इंद्रियनिग्रहीं तिनके निबंधनमानिये ॥ अवीन उजिलसौ भजे उर देषिये वाननसबै ॥ सुरआपगात पसिंधमे जनु सेतसी दासै अबै ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ फटिकसिला सुभसोभ जे उर रिषराज उदार ॥ अमलकमलछवितिं

वानमयमनोगिरिकेहार ॥४८॥ सुंदरी ॥ जरपिहरसनृपासोमन ॥ दंडहीसोअवलंवतुहैतनु ॥ धूंमसिषानिकेब्याजमनोगन ॥ देवपुरीकहुपंथरचेमुनि ॥४९॥ नृपधरैवउवानलकोजनुपोषतहेयपपांननिहींतनु ॥ मोहमहांतमकेरविमानहुक्रोधभुजंगमंत्रवषानहु ॥५०॥ ससषाअसषाकलिकोजनु ॥ पर्वतश्रोषदसिधनिकोमन ॥ पापकलापनिकेदिनदषन ॥ देषिप्रनामकियेजगभूषन ॥५१॥ पधिटक ॥ सीतासमेतसषावता ॥ दंडवतकरिषकोअपार ॥ अंगदादिअरुहनमंत ॥ सुग्रीवविभीषनजामवंत ॥५२॥ रिषराजकरीपूजाअपार ॥ पुनिसकलप्रश्नपूछीउदार ॥ सवघ्रंभ

ल्यकुसली निकेत॥ सब मित्र मातन समेत॥ ५३॥ भरद्वाज॥ कहकुसल कहै तुम आदिदेव सबज्ञांन तहो संसार भेव॥ विधिविसंभु विसस्तिउदार॥ सब पापकादि कादि अंसावतार॥ ५४॥ ब्रंम्हादिसकल परिमान अंन तुम हो प्रभु हेरंघपति अंनंत॥ अवसकल दांन दै पूजि विप्र पुनि करहु विजय बैकुंठ छिप्र ५५॥ इति श्री मत सकल लोकलोचन चकोर चिंतामनि श्री रांमचंद्र चंद्रिकायां भरद्वाज समागम वर्णानं नाम विसंति मोप्रकास॥ २०

दोहा॥ इकईसे में दांन कहि तिम महिमन ग्राति॥ भरघ्यादिक को मिलन अरु बांनर गन की

कृति॥१॥सोमराजी॥कहादांन
दीजे॥सुकेभांतिकीजे जहांहोइ
जैसो॥कहोविप्रतैसो॥२॥भरद्वा
ज॥दोहा॥सातुकराजसतांमसी
दांनतीनिंविधिजानु॥उत्तिमम
ह्निमअधमपुनिकेसवदासवषां
न॥३॥वच्चरी॥पूजजेदुजआप
नेकरनारसंजुतजांनिसे॥देवदे
वहिपाइकैपुरवेदमंत्रवषानि
ये॥हाथलेकुसगोतउच्चरिस्व नि
जुतनगमांनिये॥दांनदेकछुऔ
रदीजेदांनसातुकमांनिये॥४॥
दोधक॥देइनही अपनेकरदांने
औरकेहाथजुमंगलजांनेदांन
हिदेतजुआरसआवे॥सोवहरा
जसदांनकहावे॥५॥गोपाल॥वि
प्रनदीजनहींनविधांन॥जांनोति

ए॰
१२९

नकौतांमसदांन॥विप्रनिज्जांनज्ञ
जुगज्जुगनृप॥देषज्ञुसवहीविस्त
सनृप॥६॥श्लोक॥साचारेवानि
राचारेसार्धुवासाधुरेवच॥ऋषि
घोवासविघोवाव्रंभ्रनोनासकी
तनु॥७॥नारकु॥दुजधामदीज
तुधाइ॥वहुभांतपूजिसुराइ॥क
छुनाहिनेपरमानु॥कहिजेसु
तमदांनु॥८॥दुजकौजेदेनवुल
इ॥कहिजेसुमधमराइ॥गुनज्ञा
चनामिसदांनु॥अतिहीनताक
हिजांनु॥९॥श्लोक॥अभिगंम्मो
त्तमंदांनमहूतंचैवमध्यमं॥अधमं
जाच्यमांनस्तूसेवादांनंतुनिर्फलं
१०॥दोहा॥प्रतिदिनदीजतुनेमसों
तासहनिसवषान॥कालहिपाइ
जुदेतहैसोनैनिस्मकुदांन॥११॥

१३०

॥श्लोक॥ ज्ञातकंसाधुकर्मानंब्राह्मनंजोगतिक्रमेत॥ तस्यपुन्यचयो। प्याशुक्षयंजातिनसंसय॥१२॥ त्रोटक॥ पहिलेनिजवाचनिदेह्नअब वे पुनिपावहिनागरलोगसवै॥ पुनिदेह्नसबैनिजदेसनिकोंउबसाधनुदेह्नविदेसनिको॥१३॥ दोधक॥ दांनसकामअकामकहेहे॥ पूरिसबेजगमध्यरहेहे॥ इच्छतहीफलुहोतुसकामे॥ रामनिमित्तवषानियकामे॥१४॥ दांनतिदक्षिनवांमवषांनो॥ धर्मनिमित्तविदक्षिनजानो धर्मविनुहतिवामगनोज॥ दांनकुदानसवैसुनोज॥१५॥ देह्नसुदांनसुउत्तमलेषो॥ होहिकुदांनतिन्हेजिनलेषो॥ छोउसवैदिनदांनतिदीजैदांनहितेसवकेमत

रा॰
१२६

लीजै ॥ १६ ॥ दोहा ॥ केसवदांनअनं
तहैवनैनसवहीदेत ॥ मूहैजोंनभ
वभूपसवभूमिदांनकहदेत ॥ १७ ॥
श्लो ॥ यत्किंचित्कुरुतेपापमहां
नतज्ञांनतोपिवात्र्यपिगोचर्म
मात्रेणभूमिदांनेनशुधति ॥ १८ ॥
अस्माएनहूताभर्जेनएपहति
हारिता ॥ हातोहारएपतअहनम
स्तेसमंकुलं ॥ १९ ॥ श्री रामदोहा
कौनहिदीजदांनमुखुहेएषिरा
जअनेक ॥ भारद्वाज ॥ देहूसन्मा
नसानिरांमदेत्राएसहितविवे
क ॥ २० ॥ श्री रामचंद्रकला ॥ कहौ
भारद्वाजसनासानिकोहेभयोए
कहानेसवेमध्मसोहै ॥ हूतेस
वैविप्रभ्रभाउभीने ॥ तजजिकथे
पेअतिपूज्यकीने ॥ २१ ॥ भारद्वाज

८

१२८

गिरिसनारदइनपैसुनोज्यो॥गिरि
समोसोकहींहैकैहोज्यो॥सुनोमैं
तापतिसाधुचर्चा॥करीसुयातेतु
मवलअर्चा॥२२॥श्रीनारदमे
टक॥मोतेजलनामिसरोजवठो॥
ऊचोअतिअग्रअकासचठो॥ता
मैचतुराननिरूपलयो॥ब्रह्माइमि
नामप्रगटभयो॥२३॥ताकेमनते
सुतिचारभये॥सोहेअतिपावक
वदमये॥वोहूजनकेमनतेउपजे
भुवदेवसनासजिमाहिभजे॥२४
दीनोवनुजूतिनकोचितहे तुमब्र
ह्मसदाहोपरहितहे॥भरद्वाज
दोहा॥तातेरिषिराजसवेतुमछा
ड॥भुअदेवसनसनिकेपगमाड
दीनातिनकोतुमहीवनरोहेहे
जगचारितपोवलपूरए॥२५॥इंद्रव

रा॰
१२३॰

ज॥ सनाखपूजा अघ ओघहारी॥ अ
खंड आखंड त्रैलोकधारी॥ अमेय अ
भावधिमि भिचारी॥ समूलनासेन
पदोषकारी॥ २६॥ श्रीरामतोटक॥
हनमंतवलीतुमजाहुजहां॥ मुनि
वेषवसंतभरथ्यतहां॥ रिषिकेहम
भोजनआजुकरे॥ पुनिप्रातभरथ्य
हिअंकधरे॥ २७॥ चतुष्पदी॥ हन
मंतविलोकेभरथ्थससोकेअंगस
कलमलधारी॥ वकलापहिरेतन
सीसजटागनमनफलफूलअहा
री॥ वहुमंत्रीगनुमेराजकाजमेस
वहीसोहितुतारे रघुनाथपादक
नितनमनमभगनसेवतअंजुल
जोरे॥ २८॥ हनूमान॥ सकसोक
निछूंटेभूषनमंटेकीजेविविधि
वधाये॥ सुरकाजसवारेरावनमा

१२३॰

रघुनंदनघरआए॥सुग्रीउजसो
धनसहितविभीषनसुनइभरथ
सुभगीता॥जयकीरतिजोसगअ
मलसकलअं॥सोहतलछिमन
सीता॥२८॥पद्धतिका॥सुनपरम
भावतीरथवान॥भयेसुषसमुंद्रमे
मगनगात॥पहसत्तकिधोकछु
स्वप्नईस॥अवकह्योकहामोसो
कपीस॥२९॥जैसेचकोरलीलतअ
गार॥पुनिभूलिजातसिगरीसम्हा
र॥जीउरतउअतजेपोउदधिनंद
सोभरथभएसुनिरांमचंद्र॥३०॥
जोसाइरहसवसरहीन॥अति
ह्वैअचेतजदपिप्रवीन॥उअतउ
रतहसकरनभोग॥सोरांमचंद्रसु
निअवधिलोग॥३२॥मालनी॥
जहतहगाजेदुंदभीदीहवाजे॥

रा॰
१३१

वहुवरनपताकासिंधनस्यां विराजे
भरथसकलसेनामधयोवेषकौ।
नै॥सुरपतिजनुआयोमेघमालां
निलीनै॥३३॥सकलनगरवासीभि
नसेनानिसाजे॥भरथपताकासु
उमुंड्डानराजे॥जलथलप्रतिसोभे
सुभसोभांनिछाई॥रघुपतिसुनि
मानोअवधिआपुआई॥३४॥चां
मर॥जत्रतत्रदासईसखोमसो
विलोकहीं॥वांनराजरिक्षराजद्र
ष्टिभ्रष्टरोकही॥सोचकोरमेषवो
घमध्यचंद्रलेषही॥भांनकेसमां
नजांनसोविमांनदेषही॥३५॥
मदनमनोहर॥आवतविलोकि
रघुवीरलघुवीरतजिव्योमगति
भूतलविमांनतवआइयौ॥एंम
पदपत्मकहवंधजुगदोरितवषट

पदसमांनउनमानजगगाइयो॥चूं
मिमुषसिंधिसिरअंकरषुनाथधरि
अश्रुजुतलोचननिदेषिउरलाइ
यो॥देवमुनिव्रध्धपरसिद्दसववसि
धिजनहर्षितनपुष्पवरषानिवर
षाइयो॥३६॥दोहा॥मिलेभरथ
अरुसत्रुघनसुग्रीवहअकुलाइ॥व
हुरिविभीषनकोंमिलेअंगदकोंसु
षपाइ॥३७॥भरथचरनलछिमनप
रेलछमनकेसत्रुघंन॥सीतापद
लागतदयोआसिषसुभसत्रुघंन
३८॥अभीर॥जामवंतनलनील
मिलेभरथसुभसील॥गजगवाक्ष
सुगयंद॥कपिकुलसवसुषकंद ३९
रिषिवसिष्टकहदेषि॥जनमसुफ
लकरलेषि॥रामपरेउठपाइ॥लक्ष
मनसहितसभाइ॥४०॥दोहा॥लै

सुग्रीवविभीषनेकपिकेपविनयअनं
त॥पाइनिपरेवसिसकेकपिकुल
वलवुधिवंत॥४१॥श्रीरामपद्धि
टका॥सुनिजैवसिष्टकुलआदिदेव
इतिकपिनाइकेसकलभेव॥हमव
ठतेतेविपदासमुद्र॥इनराषिलिये
संग्रामतझ॥२॥सवआसमुद्रकीभूसु
धाइ॥नवदईजनकतनपावूनाइ
निजुभयेभरथजौदुष:हर्नं॥अ
तिसमरअमरहतिकुंभकर्न॥४३॥
इनिहैनेविभीषनसकलसूल
मनमानतुहैसत्रघंनतूल॥दस
कंधहनतसवदेवसाषि॥इहिएक
लियेहनिमंतराषि॥४४॥ताजिवि
यसुतसोदरवंधईस॥मिलेहमहि
मनवचरिषीस॥दईमोचुइंद्रजी
नकीवताइ॥अनुमंत्रजपतरावन

दियाइ ॥ ४५ ॥ तोटक ॥ इनिअंगदसव
अनेकहहैने ॥ हमहेतहिनीदनदुष्षद
ने ॥ वहुरावनकोसिषदेइषदे ॥ नव
आएभलौसिरभूषनलै ॥ ४६ दस
कंधकीजाइकै ॥ गृहथाली ॥ तिनकेत
नसोचहूवारदली ॥ महिमैमयकी
तनयाकरषी ॥ मतिमाश्रिकपन
कोहरषी ॥ ४७ दोहा ॥ मारेमेअपए
धिविनइनकोपितुगनगांम ॥ इनम
नसांवाचांकर्मनांकियेहमारेकां
म ॥ ४८ ॥ गीतका ॥ इनजांमवंतअने
कराक्षसलक्षलक्षनहींहने ॥ म
गराजसोवनराजमेगजराजमा
रतनागने ॥ वलभावनावलवांन
कोटिकरावनांदिकहारही ॥ वरिसो
मद्दीहदिमांनदेवदिमानआंननि
हारही ॥ ४९ दोहा ॥ करेनकरिहेक

ए.

१२३

रतन्नवकोउ अ्रेमेकर्म ॥ जेमैवाध्यो
नलउपलसागरसेतसधर्म ॥ ५० ॥ गी
तिका ॥ हनमंतयेजिनमित्रनारवि
पुत्रसोहमसौकरी ॥ जलजालका
लकरालमालउपालपरधाराध
री ॥ निरसंकलंकनिहारिरावनधा
मधामनधाइयो ॥ इकवाटकातर
मूलसीतहिदेषिकेसुषपाइयो ॥
५१ ॥ तनुटोरआरप्रहारिकिंकरमं
त्रपुत्रसघारिके ॥ रनमारिअक्षकु
मारवहुविधगर्भसोपुरजारिके ॥
पुनिसौपिसीतहिमुद्रकामनि
सीयकीजववपाइयो ॥ वलिवंतना
कअनंतसागरवैसहीतवआइ
यो ॥ ५२ ॥ दसकंठदेषिविभीषनै
रनत्रंम्हसक्तिचलाइयो ॥ कारिपी
हसोमरनागतेतवआपुउरहल

१२३

गाइयो॥ इकजांमजामिनिमेगयो हनिदुष्टपर्वतञ्रांनिकै॥ तिहिकालल्लछमनकौजिवायोञ्रोषधीपहिचानिकै॥५३॥ दोहा॥ ञ्रपनेप्रमकोञ्रापनोकौंहमारोकाज॥ रिषिराजकह्यौहमैंमतसोभक्तनकोसिरताज॥५४॥ चामर॥ धीरवीरसाहिसोंवलीजुविक्रमीछमी॥ साधुसर्वदासुधीतपीजसीजिसंजमी॥ भोगभागजोगजागवेगवंतहैजिते॥ वाइपुत्ररामकाजवारिडारियेइते॥५५॥ दोहा॥ सीतापाईरिपुहनैदेषेतुमञ्रस्प्रेह॥ रामाइनजयसिंध्धकोकपिसिरटीकादेहु॥५६॥ रहिविधकपिकुलगननिकोकहतहैतेश्रीरांम॥ देषोञ्राश्रमुभरथकोकेसवनंदीग्राम॥५७॥ सुंदरी॥ छप्प

न

रा०
१३६

कैतेउतरेरघुनाइक॥जक्षपुरीपठयोसु
षदाइक॥सोदरकौअवलोकितपाथी
ल॥भूलिरहौकपिराक्षसकौदल॥कंच
नकौअतिसुधिसिंगासन॥रामरचौ
तिहिऊपरआसन॥कोपरहीरनकौ
अतिकोमल॥तामहकुंकुंमवुंदनकौ
पर॥दोहा॥चरनकमलश्रीरामके
भरथपषारेआपु॥जातेगंगादिकनि
कोनासतुसववसंतापु॥६०॥पंकज
वाटिका॥सूरजचरनविभीषनके
अति॥आपुनभरथपषारेमहामति
दुंदुभिधुनकरिकरवहुभेवनि॥पुष्प
हरषिवरषेदिविदेवनि॥६१॥दोहा
पीछेतेसत्रुघ्नपैलछिमनध्यायेपा
इ॥चरनसुमत्रपषारियोअंगदादि
केजाइ॥६२॥तोमर॥सिरतेजटाछु
उतार॥अगअंगरागनिधार॥तनमू

क

रिभूषनवस्त्रकटिसोकसेनवअस्त्र
दोहा॥मिरतेपांवनपादुकालेकरभर
थविचित्र॥चरनकमलतरगहिध
रिहसिपहिरीजगमित्र॥६४॥इति
श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिं
तामनिश्रीरांमचंद्रचंद्रिकायांभरथ
समागमोनांमवर्ननंएकविंसति
प्रकास॥२१॥दोहा॥वाईसयेंप्रका
समेंअवधिपुरीकीरीति॥मिलवोस
वमातानिकोकहिकेसवकरप्रीति
१॥सुंदरी॥अवधपुरीकहरांमचले
जव॥ठौरहिठौरविराजतहेसव॥भ
रथभयेप्रभुस्वारथिसोभन॥चौरघ
रेसुग्रीउविभीषन॥२॥नागिनी॥ली
नीछुरीदुहुंवीर॥सत्रुघनलछिमन
धीर॥ठौरजहांभीर॥आनंदसहि
नमतिर॥३॥दोधक॥भूनलहींदिवि

तहां

भौंरविरजे॥री हचकूटि मिदुरुभाजै भा

बुवठौवै॥४॥हीननिमेषसवैअव
लोकैहोइपरीदुइषांडुइंलोकै
भूतलकौरजदेवनिसावत॥फू
लनिकीवरपावरषावन॥५॥नार
क॥सिंगारदलश्रोधपुरीजवदेषी
॥अमरावतिअतिसुंदरलेषी॥चहु
वोरविराजतदीरघषाई॥सुभद
वतरंगिनिसीफिरिआई॥६॥म
निलालकगूरनिकीछविराजै॥अ
तिदीरघकंचनकोटविराजै॥पुर
सुंदरमहलनसैंछविछायो॥परिवेष
मनोरविकोफिरिआयो॥७॥दोहा
वहुवरनपताकासोभिजैऊचीकै
सवदास॥दिविदेविनिकेसोभि
जैमानोविजनविलास॥८॥अति
ऊंचेमंदिरनपरिचिठीसुंदरीसाध
सुरिनारिनकौंकरतिहैमानोअ

मतिविलसितमतिमयसोरगंगाप्रतिमिषि

१२९

तिथअगाधु॥ ९ विजय॥ चढीप्रति

संदरसोभवढीनरूनीअवलोकन

कोरघुनंदनु॥ मानोगृहदीपतिदे

हधरैरसकिधोग्रहदेवियमोहति

हैमनु॥ किधोकुलदेविदिसैकेहि

केसवकेपरदेविनिकोइहलस्योम

नु॥ जहीसुतहीइहिभांतिलसेदि

विदेवनिकोमदुषालनतिहेंजन

१०॥ तोटक॥ नरनारिभलीसुरना

रिसवे॥ सुनकांहपरेपहिचानि

अवे॥ मिलिफूलतिकीवरषेवरषा

अनुगावतिहेजयकेकरषा॥ ११॥

पदमावती॥ रघुनंदनआएसु

निसवधाएपुरजनजेसतेस॥

दासनरसभूलेतनमनफूलेव

हुवातेजाहिनजेसे॥ पियकेस

गनारीसवसुषकारीचिनवहि

रामहि द्रिग जोरी ॥ जहतह चहूं वोर निमिली चकोर निज मोचा हत्त चंद्र चकोरी ॥ १२ ॥ तोटक ॥ इहि भांत राम लषिहार हार ॥ अति पूजत लोग सवै अपार ॥ इहि भांत गए नृप नाथ गेह ॥ जुति सुंदर सोदर सो सनेह ॥ १३ ॥ दोहा ॥ मिले जाइ जननीन को जेवही श्री रघुराइ ॥ कहत्तार स अद्भुत भयो मोपै कह्यो न जांइ ॥ १४ ॥ सोरठा ॥ पुर जन लोग अपार यहही सव मानत भये ॥ हमही मिले अगार ॥ आए प्रथम हमारही १५ ॥ दोहा ॥ सीता सीतानथ जू लछमन सहित उदार ॥ सव निमिले सव के किए भोजन एकही वार ॥ १६ ॥ मदनमनोहर ॥ संग सीता लछमन श्री रघुनंदन मात निकेसुष

पाइपरेसवदुषहरे॥ अघुनअन
वारेभागनिआएजीवनिपापअ
कमेरअरुसकधरे॥ अववदननि
हारेसवेसवारदेहिसवेसवहिंनि
घनो॥ अलेहिघनो॥ ननमननस
म्हारेयहघिचारभागवडेयहहै
अपनोसुकिधोहपनो॥ २॥ सो
गता॥ धामधामप्रतिहोतिबधा
ई॥ लोकलोकतिनधुनिकीधु
नधाई॥ देषिदेषिरूपअद्भुति
लेषो॥ जाहिजहांतहेराम हिदे
षो॥ ९॥ दौरिदौरिपरिवारआवे
वारवारप्रतधामनिधावे॥ देषदेष
तिनकोदेनारी॥ भांतभांतिनिविहि
सेसवनारी॥ १०॥ श्रीराम॥ दोहा॥
द्विनिसुग्रीवविभीषनेअंगदअरुह
नुमान॥ सदाभरथसत्रुघ्नसम

वि

माताजियमैंजांनु॥२९॥सोरठा॥
सुनिप्रांननाथरघुनाथ॥जियकी
जीवनमूरहो॥लछमनहेंतुवसा
थ॥छमिजौचूकपरीजकछु॥२०॥
श्रीरामचंद्रउवाच॥पौरियाकहौंकिप्र
तिहारकिधौप्रभुकहौपुत्रकहौंकि
धौमित्रमंत्रीसुषदानियै॥सुभट
कहौंकिधौसिष्यदासकहौंदंत
किधौकेसौदासहाथकौहथ्यार
उरआनियै॥नैनकहौंतनमनकि
धौतनत्रानप्रांनवुधिकहौंकिधौ
वलुविक्रमवषानियै॥देषिवेकौ
एकएअनेकभांतिकरीसवालछि
मनुकोमाताकौनुकौनगनगाइये
॥२२॥मोटनक॥सत्रघ्नहिवालि
कैनामकहै॥उगनिसजोजहसु
षलहै॥मेरेघरसंपतिजुकसव

सुग्रीवहि देहुनिवासऋवे ॥२३॥ सा
जेजिभराथुसवंधनको ॥ राषोतिन
धांमविभीषनको ॥ नेरिसनिकोक
पिलोगनिकोराषोतिनधांमनभो
गनिको ॥२४॥ श्रीरामदोहा ॥ एकए
कनेरिसकेजितनेवानरलोगऋागे
हीरहेरहेअमितइंद्रकेभोग ॥२५॥
इतिश्रीमतिसकललोकलोचनच
कोरचिंतामनश्रीरांमचंद्रचंद्रिका
यांविजयगमनोनामद्वविंसतप्र
कास ॥२७॥ दोहा ॥ तेहीसमेमंका
समैरिषिवहुविधसमझाइ ॥ राज
श्रीकेदूषनहिकरहेश्रीरघुराइ
॥१॥ मल्लिका ॥ एककालरांमदेव
साधुवंधकरतसेव ॥ सोभजेसभा
सुवेस ॥ देसदेसकेनरेस ॥ वानरे
सजूथनाथ ॥ लंकनाथवंधसाथ ॥

रा॰
१३८

सोभिजै सुवेस अोर ॥ मंत्र मित्र ठौर ठौ
र ॥ ३ ॥ दोहा ॥ नृप सनृप विलोकि उ
उपजी मदन हि लाज ॥ आइ गए
तैही समै के सवा रिषि रिषिराज ॥ ४ ॥

ग

अगस्त अत्रि भृग अंगिरा कस्यप गोत
म व्यास ॥ विस्वामित्र पवित्र मुनि
वालमीक दुर्वास ॥ ५ ॥ वामदेव मुनि
कंन्व जति भरद्वाज मनि ष्ट ॥ पर्वता
दि दै सकल मुनि आए सहित वसि
ष्ट ॥ ६ ॥ नगस्त नृपती ॥ सबै धराम चं
द्र जु उठे विलोकि के तबै ॥ सभास
मेत पांपरे विसेषि पूजियो सचै ॥
विवेक सौं अनेक धा दई अनेक प
आसनै ॥ अनर्घ अर्घ आदि दै वि
नै कियै घनै घनै ॥ ७ ॥ श्रीराम नृप
कमाल ॥ ताते मुष के विलोक
तही भए दुषद ॥ सुमलाप नि

१३८

हीरहेउरमांउग्रानंदपूरि॥देहरूपा
वनहेंगपौपदपद्मकेपयपाइ॥ज
न्मसुहमपोसवेकुलग्रासुहोमु
निराइ॥ चसंनिधानभरेतिपाध
नधांमधीधनधर्म॥ग्रघसघम
ऐसेवेनिरवद्यवासरकर्म॥ होसज
दपिहूरि हीभईभूरिनिर्मलझष्टि॥
पूछिवकहहोतहेजुनथ्यापिवा
कवसिष्टि॥२॥दोहा॥गंगासंगम
तेवड़ेसाधनिकोसतिसंग॥पाव
नकउपदेसग्रतिग्रद्भुतकरतु
ग्रभंग॥१०॥ग्रालनराज॥ किंप्र
विसेषसोग्रसेषकाजदेवराइके
सदांचलोकलोकनाथधर्मविप्र
गाइ॥ग्रनादिसिद्धराजसिद्धराज
ग्राजुलीजहीनदेवतानिदेवता
निदीहसुष्पदीजहीं॥११॥दोहा॥

फे

मोरुश्रीपालेहितूकोनहेतराषुनं
द॥निगनंदसदेषिएजरपिपरमा
नंद॥१२॥श्रीरामनतोमर॥मुनिगपा
नमानसहंस॥जगजागजागम्रस
स॥जगमाझ्रहेडषजाल॥मुष्हे
कहाइहकाल॥१३॥नहएज्जुहेड
षमूल॥सवपापकोश्रनकूल॥श्र
वनाहिलेरिषएइ॥काहिकोननं
कहिजाइ॥१४॥चौपही॥सोदर
मंत्रिनिकोजिचरित्र॥इनकेहमप
रमुनिजगमित्र॥इनहीलगपाए
जकोकाज इनहीतेसवहोतञ्र
काज॥१५॥राजभारनलभयनिद
यौ॥छलवलछीनेसवेउनलयो॥
जवलीनोसवराजविचार॥नल
दावंतीदियेनिकारि॥१६॥राजा
सुएराजकीगाथ॥सोपीसवमं

त्रिनिकेहाथ॥संततमगपालीन
विचार॥मंत्रिनिराजादपैनिकार
॥१७॥राजश्रीरीअतिचंचलतान॥
ताहीकीसुनलीजेवात॥जोवन
अरुअविवेकीराग॥विनसौकोन
राजश्रीसंग॥१८॥सास्त्रहजलहू
धोवततात॥मलिनहोतअतिता
केगात॥जदपिहेअतिउज्जलदृष्टि
तदपिअजतिरागनिकीश्रष्टि॥१९॥
महांपुरिषसोजाकीप्रीति॥हरतिसु
अंग्रामातुनतरीन॥विषयमरीचिकू
निकीजोति॥इंद्रियहरनिहारिनी
होति॥२०॥गाकेवचनअमलअन
कूल॥सुनतहोतश्रवननकेसूल॥
मैनवलिततनवसनसुदेस॥भिद
तनहीजलजोउपदेस॥२१॥मंत्रि
निहूकेमतनलेति॥प्रतिसब्दकजो

ए॰ १२८॰

उत्तर देति॥ पहिलौ सुनौ न फेरसुनं
त॥ माती करनी ज्यौं नगनंत॥ २२॥ दो
हा॥ धर्म धीरता विनयता सत्य सी
ल आचार॥ राजसिरी नगनै कछु
वेद पुरान विचार॥ २३॥ चौपही॥ सा
गर मै सव काल जु रही॥ सीतवक्रता
सासि तै लही॥ सुरतुरंग चरननि तै
तात॥ सीषी चंचलता की वात॥ २४॥
कालकूट तै मोह नरीति॥ मनिगननि
तै मन निसुरनीति॥ मद राते मादि
कता लही॥ मंदर उदर भरी भ्रमम
ही॥ २५॥ दोहा॥ से सदही वहु जिह्व
ता वहु लोचनता चाउ॥ असे परं
निते सीषियौ अपर परिषसंचाउ
२६॥ चौपही॥ दृढगुन वाधे हूं वहु
भांति॥ कोजानै कित है भजि जा
ति॥ गजघाट नि भटकोटनि अरै॥

षड्गलतासरपंजरपोरे॥ २७॥ अपना
इनकीनेवहुभांति॥ कौजानेकित
हुभजिजाति॥ धर्मकोसमंउतज
देस॥ तजतिभर्माज्योंकमलन
रेस॥ २८॥ जदपिहोहिसुहमति
सत्र॥ फिरेपिसांचीज्यौंउनमंत्र
गुनवंतनिआलिंगतिनहीं॥ अप
वित्रनिकोछांडतिनही॥ २९॥ सुएनि
नाकतिअहिज्योंदेषि॥ कंटकसेअ
तिसाधनिलेष॥ सुधासादए॥ जदपि
आप॥ सवहीकोंअतिकटकप्रता
प॥ ३०॥ जदपिपुरुषोतमकीनारितं
दपिसकलषलजनमनहार॥ हि
तकारिनकीअतिहेषिनी॥ अहि
तलोककीअन्वेषिनी॥ ३१॥ मन
मगकोजुवधिककीगीति॥ विष
यवेलिकीवादिदभीति॥ मदपि

रा. १३१ १५१

सांचिकाकेसीअली॥मोहनीदकी
सज्जाभली॥३२॥आसीविषदोष
दोषनिकीदरिगुनसनपुरिषनिका
रनिछ्री॥कलहंसनिकीमेघावली
कपटन्नित्यकालीकीयली॥३३॥
॥दोहा॥कांमवांमकारिकीकिधौ
कोमलकदलिसुवेष॥धीरधर्म
हूजराजकोमनोराहकीरेष॥३४॥
चौपही॥मुषरागीजेपामौनह्वैरहे
वातवमाईएकदोकहे॥वंधवर्गीप
हिचांननतहीं॥मानोसंग्रपातह्वै
गही॥३५॥महांमंत्रहीहोतुनवाधु
डसीभुजंगकलकारिक्रोध॥पांन
विलासनउदिनआनुरी॥पारापन
गनेचातुरी॥३६॥मगपायहिसता
वही॥वंदीमुषनिचाउसोपढी॥
जौकैसोहूंचितवैकरिदया॥वात

१३३

कहेतोवडिपेमस्या॥३७॥दासनदीने
हीअतिदानु॥हसिवोलेतोवडेसे
नमानु॥जाकाहहोअपनोकेहे स
पनेकेसीपदवीलहे॥३८॥दोहा॥
जोईअतिहितकीकेहसाईपाम
अमित्र॥सुषवक्काईजानंजेसंतत
मंत्रीमित्र॥३९॥चौपही॥कहोक
हालगताकेसाज॥तुमसवजानत
होमिषराज॥जेसीसिवमतिमानि:ये
यसीराजसिरीजानिये॥४०॥साव
धानद्धसेवपावहि॥सांचोदेहिपा
मपदताहि॥जितनेनपयाकेच
सिभये॥पेलिस्वर्गतेनर्कहिगये
॥४१॥इतिश्रीमन्सकललोकलो
चनचकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्र
चंद्रिकायांराजश्रीदूषनवर्ननंना
मत्रिविंसतिप्रकास॥२३॥दोहा॥

ए.
१३४२

चौवीसयेप्रकासमेकहिकेसव
अनुराग॥ग्यानध्यानमेलीनहैं॥
वरनतहैवैराग॥१॥रामअश्रमतग
न॥सुमतिमहांरिषमुनिये॥जग
मेसुष्पनगनिये॥मरनजीवनि
तजहीं॥मरिमरिजनमभरहीं॥उ
दरनमधारहततहैं॥वहुकष्ट॥नि
सौनिकसततहैं॥अनततहींपीरश्र
नतहीं॥तनउपचासमहततहीं॥३॥
दोधक॥पोचभलीनकछुजिय
जानै॥लेसववस्तनश्रांननश्रा
नै॥सवतननकछुहोतवउरी॥षल
तहैतिअयानचहरी॥४॥हेपित
मातनितदुषभारे॥ओगरतेश्र
तिहोतदुषारे॥भूषनप्यासन
नींदनजावै॥षेलनकोवहुभां
तिनिरावै॥५॥जारतिचित्तचिता

३

दुचिताई॥दीहतुचाअहिकोप
चवाई॥कामसमुद्रधकोगनि
मूलो॥जोवनजोरमहांभ्रमभू
लो॥६॥धूमसुनीलनिचोलनि
सोहै॥जाइजुईनविलोकनमो
है॥पावकपापसिषावडवारी
जारतिहैनरकोपानारी॥७॥वंकहि
येजपभासरसीसीकर्दमकामक
छुपरसीसी॥कामिनिकामनजोर
ग्रसीसी॥मीनमनुष्यनिकीवन
सीसी॥८॥विजय॥षेचतुलोभु
दसोहिसिकोमहिमोहमहारक
पासिकेडोर॥ऊंचेतेगर्भगिरावे
तक्रोधधुंधुजीहिजिलूहलावत
भोर॥असमकोडुकीषाजज्योक
सवमातकामकेवांननियार॥र
मातपाचकरैपचकूटहिकासों

ए. कैहेजगजीवविचारै॥५॥भूलत
१२५३ हैकुलधर्मसवैजवहीतवहीव
हआनिगसेज॥केसववेदपुराण
निकोनसुनेसमुझेनरहैसेनचसे
ज॥देवनितेनाहदेवनितेनतेद
रवानजयौविलसेज॥जंत्रमंत्र
नमएनेजगजोवनकामुपिसा
चवसेज॥१०॥पापनिनिकेतनत्रा
नतकेतहफूलकेवानविवध
तुजोतो॥वाइलगाइविवेकनि
कोवहुवाधककोकाहिसाधुकु
कोतो॥श्रोकोलूटतौकेसव
जन्मअनेकनिकेतपरानिके
पोतो॥तोममलोकसवैजगजा
तौजोकामुवडोवढपापनहोतो
॥११॥मकरंद॥कपैववरवांनीरगे
उगारीठितुचातुचकेसकुचेमत १३५

वेली॥ नदीनवगीवघकीगति
केसवदूषघटीसगजेोतनषेली॥
लियौसवव्याधिनिआधिनिघे
रिजिएजवआवेजुराकोसहेली॥
भगीसवदेहदसाजियसाथर
हेदुरद्दादिदुराहाअकेली॥१२॥
विलोकनिरहेसतसमेनन
त्तहकोविदियोगनगासो॥उद
किधौआइकेआपकेअंकुरस
लकिपुष्पसमलनसायो॥जर
किधौकसवव्याधिनकीकिधौ
आधिकेआषरअंनुनपायो॥ज
रासपंजरजीउजरयोकिजुराजा
कंमरेसोपहिरायो॥१३॥दिनही
दिनवाढतआधिहियेजराजा
इसमूलसुवाषदिषेहे॥किधौ
याहीकेसाथअनाथजौकेस

वस्त्रावतजातसदादुषसैहै॥जग
जाकीतृतिजगेजगजीवनपासे
तृंजीवतुजानननपैहै॥सुनिवाल
दृसागइहिज्यांनीगइतेसजेसैज
एउदृएसानजेहे॥१४॥दोहा॥ज
हांभांमिनीभोगतहविनिभांमि
निकहभोग॥भांमिनिछूटैजग
छुटैजगछूटैसुषजोग॥१५॥जोइ
जोइजिसोकौग्रहकाकेसाथ
ग्रस्तांनदानेहोमादिव्रतभस्म
होततेनाथ॥१६॥तोटक॥जि
पमाग्रिग्रहेपदज्योंदमिये॥जि
नहींजिनहीगुनग्रीरमिये॥ति
नहीतिनहीलगिलोभुदृसे॥प
पलतेननवादज्योंनत्रसे॥१७॥
॥दोहा॥ग्रांषिनिहीछितग्रां
घेजीवकौवहुभांति॥धीज

धीरनविनकातेक्रसाेत्रसाेताति
२५॥त्रसाेक्रसाेषटपदीदयोक
मलमैबासु॥मत्तदंतगजगंउज
गनर्केभ्रनर्कनिवासु॥२६॥विजप
दीनटपासुभसीलसषाविगुके
गुनभिछुककेविगुकाये॥केसव
साधुसुधीसुभीसवभाजिगईम
मभूभेजाये॥सज्जनसंगबछेर
उरैविउरैविउरैब्रषभादिप्रबेसुन
पावैवारवउअघवाघवघेउरमं
दिरवालमकुंदनश्रावै॥२७॥पात
पापपयोनिधिमैमनमूठमनो
जजिहाजवटेरी॥षलतहीनत
नैजगजीवनजउवउवानलज्वा
लजेरी॥मूदतरंगिनमेउरझेसु
हृतेपालाभप्रवाहवटेरी॥वूउत
नैतिहिनेउवेरतेवेकेसवकाहूंन

पाढपढेंही॥२१॥कौनगनेंग्रहिलो
कनीनिविलोकविलोकजिन्हा
जनकोवीरे॥लाजविसालललना
लपटीतनधीजेसत्पतमाललनि
तोरे॥वंचकताअपमानअपान
अमोघभुजंगमपातनकेस्लौ॥
पादुवरीकहूंघाटुनकेसवक्यौन
रजोडतरंगनिन्हलौ॥२२॥दोहा॥
जौक्यौंहूसुषभावनाकाहूंकैज
गहोतिकालुआषपलनंतनुज्यौ
जवहीकादतुजोन॥२३॥विजया
दानसपाननिकेकलपटुमरट
नज्यौनिरिसहिमागे॥संषत
सागसेदुषकेसवज्यौअघश्री
हीकेअनुरागे॥पापविलातप
हानेसेपलज्यौअघराघवके
निसिजागे॥ज्यौद्रुजदोषतेसप

तिभागतिन्योंगुनभागतिलीभके
भोग।। २४ ।। दोहा ।। ब्रम्हविस्नसि
वब्रादिदेजिततेनेदुहमरी।। नास
हिकोधावतसकलज्योंवरवान
लनीर।। २५ ।। सुंदरी ।। दोषमरीज
दमालगीअति।। देषतहीतिहि
तेजुजरीमति।। भोगकीआसनगू
ठजागरि।। ज्योंजसागरमेंमुन
नागर।। २६ ।। सवैया ।। माछीकेहै
अपनेघरमाछरमूसोकेहैअप
नोघरऐसे।। कोनेघुसीकोघुसि
घिरीविलाईज्योंव्यालविले
महपैसे।। कीटपखानपतंगसो
भिक्षुकजीवसवैभ्रमजासहजे
से।। हाहूकेहाकहिकेसवकोसि
हीनाघरसोंअपनोघरकैसे।। २७
।। सुंदरी ।। जेसईहीअवतेसहीहो

जग॥ आपदासंपदाकेनचलौमग॥
एकहीदेहवियोगुविनासुन॥ हैं
नकछुअभिलाषकरोंमुन॥ २८॥
जोकछुजीउउधारनिकोमति॥
जोंनतहींतकहोमुनिहोरतु॥ यो
कहिमोनगहीजगनाइक॥ कस
वदासमनोवचकारक॥ २९॥ चा
मर॥ साधुसाधुकहिसभाअसेष
मोदहर्षियो॥ दीहदेवलोकतेंप्र
सूनवृष्ठिवर्षियो॥ देषदेषिराज
लोकमोहियौमहांप्रभा॥ आई
यौतहांतुरंतदेवकीसवैसभा॥ ३०॥
॥ विश्वामित्र॥ मासपुत्रकेसमा
नसुद्धिबुद्धिजानिजे॥ रीसकोअ
सेषसत्वनत्वसोवषानिजे॥ दे
षिकेवसिष्टसिष्टनित्यवस्तुसो
धियो॥ देवदेवरामदेवकोप्रवो

धुवोधियो॥३२॥इतिश्रीमत्सकल
लोकलोचनचकोरचिंतामनिश्री
एमचंद्रचंद्रिकायांवेदानंदसाव
नेंएंनामचतुर्थीविंसत्तप्रकास॥२४॥

दोहा॥पचीसयेंप्रकाससेवरननु
केसवदास॥रिषिवसिस्टउपदेसु
अतिकाहैवहुतप्रकास॥१॥वसि
ष्टपद्धिटिका॥तुमआदमध्यअव
सानएक॥तुमजीवजन्मसमझो
अनेक॥तुमहींजुरचीरचनाविचा
र॥तिहिकौनभांतिसमझोमुए
॥२॥सवजानिवुझियतमोहिराम॥
सुनिजेसुकहोजगब्रह्मनाम॥ति
निकेअसेषप्रतिविंवजाल॥तेजी
वजानिजगमैंकृपाल॥३॥निसपा
लका॥लोभमदमोहवसकाम
जवहीभए॥भूलिगायन्तपुनिजु

बंधतिनिसीगारे॥ बाजियतनुबानपह
कौनविधिउध्धरे॥ वेदविधिसोधि
विधिजालबहुधांकरे॥८॥ श्रीराम
दोहा॥ जितलजैहैवासुनातिन
तितहूहैलीन॥ जतनकहोकैसेक
रैजीववापुरेदीन॥५॥ वसिष्टदोध
क॥ जीवनिकीजुगभांतिजुरासा॥ हो
तिसुभासुभबुद्धिप्रकासा॥ जतननिसो
सुभपंथलगावे॥ तौनवहीअपनौप
दपावे॥६॥ होमनतेविधिपरउपासो
जीवउधारनमंत्रसुनायो॥ हैपरिपू
रनजोतितिहारी॥ जाहिकहीनसु
नीननिहारी॥७॥ दोहा॥ ताकीइछा
तेभएन्यापनमतिसिद्ध॥ तिनतेच
तुराननिभयेतिनतेजगनप्रसिद्ध॥८॥
॥दोधक॥ जीवसवैअवलोकिउ
धारे॥ आपनेचित्तप्रयोगविचारे॥ सो

हिसुनापेतेतुम्हेसुनाऊ॥ जीउउधा
रनमंत्रुवताऊं॥ ९॥ दोहा॥ मुक्तिपुरी
दरवारकेचारचतुरप्रतहार॥ साध
निकेसनसंगअरुसमसंतोषवि
चार॥ १०॥ जगतचक्रवृतुमाखे
कज्जलकलितअगाधु॥ तामेपे
ठिसुनीकेंअकलंकितसोसाधु॥
११॥ दोहा॥ देषतहूइकिकाल
छिपेहू॥ जाहिनलागतकर्मकि
येहूं॥ सोवतजागतनेकुनछोभै॥
सोसमतासवहीमहसोभै॥ १२॥
जीअभिलाषुनकाहूकेआवै॥
पाअेगअेसुषदुष्पुनपावै॥ ले
परमानंदसोमनलावैसोसव
माहसंतोषकहावे॥ १३॥ आयो
कहाअवहोकहिकोहो॥ जेऔअ
पनोपदपाऊंसुटोहो॥ वंधुअव

वंधुअवधुहियेमहजांनो॥ताम
हलागुविचातुवषांनो॥१४॥चार
मेएकहजोअपनावे॥तौतुमेपम
पुआवनपावे॥राम॥जोतिनिरी
हनिरंजनमांनो॥तामहक्योरिषि
रिक्षवषानो॥१५॥वसिस॥दोहा
सकलसक्तिउनिमानियेअद्भुत
जोतिप्रकासु॥जातेजगकोहोतु
हैउत्पतिस्थितनासु॥१६॥श्रीरा
म॥जीववधेसवआपनीमाया
कीनेकुकर्ममनोवचकाया॥जी
वतुचित्तप्रवोधुनआनो॥जीव
नमुक्तिकेभेदवषांनो॥१७॥वसि
ष्ट॥[illegible]हिरहअलिप्तहहिये
जाहिनलागतकर्मकियेहवा
हिरभेदुसोअंतसयानो॥ताकह
जीवनमुक्तिवषांनो॥१८॥दोहा॥

आपुनसोंअवलोकियेसवहीजु
जंअजुक्त॥ अहंभावमिटिजाइतो
कोनवंधुकोमुक्ति॥ १९॥ श्रीराम
दोधक॥ येसिगरेगुनहोतिहैजां
नो॥ थावरजंगममुक्तिवषांनो॥ व
सिष्ट॥ जोंनिसवैगुनदोषनिछूा
जै॥ जीवनमुक्तिनिकेपदमाजै॥
२०॥ रांम॥ दोहा॥ साधुकहावत
कहावतकरतहैजगमेसवमो
हा॥ तिनकोमीचुनल्योसकैक
हिप्रभुकोंनविचार॥ २१॥ वसिष्ट
॥ पद्धटिका॥ जगजिनकोमनुत
वचानलीन॥ ननुतिनकोमतन
कातिछीन॥ जिहिछनहूंअदु
षछीनहोनजकरतअमितआ
नंदउदोत॥ २२॥ जोचाहैजीवनु
अतिअनंनु॥ तोसाधहिमानायां

रा॰
१४१

मवंतु॥सुभरेचककपरकनासुजांनि॥अ
नुकुंभकादिसुषदांनिमानि॥२३॥
जोहममहमसाधहिसाधुधीर॥ते
तुमहिमिलेपहीसरीर॥श्रीराम
जगतुमतेनाहींसर्वग्यांन॥श्रवक
होदेवपूजाविधांन॥२४॥वसिष्ठता
रक॥हमएकसमैनिकसेनपसाके॥
तवजाइभेजेहिमवंतरसाको॥वहु
भांतिकस्यानपुछ्योंकहिआवे॥सि
तकंठप्रसंनभएजगगावे॥२५॥स
वैया॥ऊजरउदारउवासुकिविरा
जमानहारकेसमांनग्यांनउपमांन
टोहिये॥साभिजेजटानिविचगंगा
जूकेजलवुंदकुंदकेसीकलीवेसो
राइमनमोहिये॥नषकेसीरषांचं
दचंदनसीचारजेअंजनसीगोरे
हंगालनुचिरोहिये॥सुषकेसीसि

१४१

हुसिवासोहैसिवजूकेसाध्यजावक
सौपावकलिलालेगोसोहियं २
हैं॥श्री सिव॥ वहुमागिकछुरिषि
राजसयानै॥ वहुभातिचलैतप
पंथपयानै॥ वसिष्ट॥ पुजवोपर
मेस्वरमोमनइछा॥ सिषवोप्रभदे
वप्रजापतिसिछा॥ २७॥ श्रीसि
व॥ दोहा॥ एमोउमापतिदेवनहि
एगुनरूपुनभेव॥ देवकहतरिषिको
नसोसिषउंताकोसेव॥ २८॥ वसि
ष्ट॥ तोमर॥ हमकहाजानैश्रगप॥
तुमसर्वदासवगपश्रवदेवदेवव
ताइ॥ पूजाकहोसमुझाइ॥ २९॥ श्री
सिव॥ सुचित्तप्रकासश्रमेव॥ श्रव
देवमानतदेव॥ रिषिताहिपूजि
हविमंडि॥ सवप्राकृतनकोछंडु॥ ३०॥
पूजासहेउरश्रांन॥ निर्म्माजकीजे

ध्यान॥यौपूजिघटिकाएक॥जनु
किपैजगपञ्चनेक॥३१॥जिमजंति
महइंजेगु॥सवधर्मकर्मप्रयोग
समन्नप्पूजिप्रकास॥नवभएहम
सदास॥३२॥यहवचनकरपरवान
सुभभएअंतरध्यान॥दोहा॥यह
पूजाअद्भुतअगिनिकासुनिपु
रननाथ॥सवेसुभासुभवासुनामे
जारिअपनेहाथ॥३३॥झूलना॥
इहिभांतिपूजापूजिजीवनपर
मभक्तिकहाइ॥भवभग्तरसभा
गीथीमहिदेहिममनिवहाहि
पुनिमहाकर्तामहात्यागीमहा
भागीहोइ॥सुहभावामेमाप
तिपूजिजैसवकोइ॥३४॥दोहा
रागद्वेषविनकैसिहूंधर्माधर्मज
होइहरषसोषउपजैनमनक

तोमहांसुलोइ॥३५॥भोजअभो
जनवितरतनीरसविसमान॥
भोगहैंहिअभिलाषबिनमहांभो
गताजांन॥३६॥जोकछुआपिनि
देषिजेसोइवानीजांहि॥महां
निभोगीजांनिजेअठजांनेताहि
॥३७॥तोमर॥जिपगपानप्रभभो
हार॥अरुजोगभोगविचार॥इ
हभांतिहोइजुएम॥मिलिहैन
म्हारधांम॥३८॥चंद्रकला॥नि
सिवासरवस्तुविचारकरैमुषुसाच
हिपेकरुनाधनहै॥अषनिग्रह
सग्रहधर्मकथानिपरिग्रहसा
धुनिकौगनुहै॥काहिकेसवभी
ताजोगुजगेअतिवाहिरभोग
वैसोतनुहै॥मनुहाथसदाजिनि
कैतिनकैघरहीवनहैवनहींघ

स

तुहे ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ लेइ जु कहहि जे समा
धुअस्म अनुलीन के हि जे वां म
सव के साधन एक जगु राम ति
हारो नाम ॥ ४० ॥ श्रीराम ॥ मोहि
हूं तौ जग नाइ के सबही जानमें
श्राजु ॥ अब जो कहो दिये सवने क
रो तुम्हारे काज ॥ ४१ ॥ इति श्रीमत्स
कल लोक लोचन चकोर चिंताम
न श्रीराम चंद्र चंद्रिकायां जगद्वा
रवर्ननं नाम पंचविंसतप्रकाश ॥
२५ ॥ दोहा ॥ छवीसये प्रकास मे
लोक लोक सुष साज ॥ देव देव सु
ष पाइ के राम चंद्र के राज ॥ १ ॥ दोट
क ॥ वोले रिषराज भरथ्थ तवै की
जे अभिषेक प्रयोग सवै ॥ सतुघ
न कह्यो उपदेस नर हौ ॥ श्रीराम के
नाम कीतत्व गहो ॥ २ ॥ अधावह

धाउर आरगही॥ ब्रंम्हांसुनसोवि
नतीविनई॥ श्रीरांमकोनामरू
होरुचिकेमतिहोइमहांमनको
रुचिके॥ ३॥ वसिसस्वागता॥॥
पितमजवआंनिअरूझी॥ वात
तातकोमजववूझी॥ जोगुजागु
करजाहिनआविसतांनदांनवि
धकर्मुनपावे॥ ४॥ हेअसक्तिसव
भांतिविचारो॥ कोनभांतिप्रभता
हिउधारो॥ ५॥ वसिष्टभुजंगप्रया
त॥ जहींचिदघ्रानंदरूपेधरोग॥ सु
भेतापकेतापतीनोहरोगोकेहेगा
सवेनामश्रीरामताको॥ सदासि
हिछेसुद्धभ्रारजाको॥ ६॥ कहो
नामआधोसुआधोनसावे॥ स
रैनामपूरोसुवेकुंठपावेसुधारे
दुहूंलोककेवनदोउ॥ हियेसप

छांडेकहेवनकोउ॥ ७॥ सुनावेसु
नेसाधुसंगीकहावे॥ कहावेक
हेपापपूरेनसावे॥ स्मरविस्मरे
वासुनाजारिडारे॥ तजैछघनको
देवलोकेसिधारे॥ ८॥ नामस्तो॥
जवसववेदपुराननिसेहे॥ जप
तपतीरथेउअमितिजेहे॥ दुजसु
रभीनहिकोउविचारे॥ नवज
गुकेवलनामउधारे॥ ९॥ दोहा
मरनकालकासीविषेमहादेव
केधाम॥ जीवनकोउपदेसहेरा
मतुम्हारेनाम॥ १०॥ मरनकाल
कोउकहेपापीहोइपुनीत॥ सु
षहीहरपुरजाइगोगावेसवज
गगीत॥ ११॥ रामनामकेतत्वको
जानेभेदविचार॥ गंगाधरिके
धरनिधवालमीकश्रुतिसार॥

॥१२॥ दोधक ॥ सातहुं सिंधुनिके
जलपूरे ॥ तीरथजालनिकेपयपूरे
कंचनकेघटवांनरलीने ॥ आइग
येहरिआंनदभीने ॥ १३ ॥ दोहा ॥ स
कलरत्नसबमृत्तिकासुभओषधी
असेष ॥ सातदीपकेपुष्पफलप
ल्लववस्तुसमेत ॥ १४ ॥ दोधक ॥
आगनुहीननकोअतिसोहै ॥ कुंकु
मचंदनचर्चितजोहै ॥ हैसरसीस
मसोभप्रकासी ॥ लोचनमीनसरो
जविलासी ॥ १५ ॥ दोहा ॥ गजमो
तिनजुतसोभिजेमारकतमनिके
प्याल ॥ उदककुंदजुतजनुलसत
पुरइनिपत्रअपार ॥ १६ ॥ विसेष
क ॥ भांतिनिभांतिनिभाजनराज
नकोनुगनै ॥ ठौरहिठौरएहैजनुफू
लिसरजघनै ॥ भूपनकेप्रतिवि

ववलोकितनृपसैनै ॥ षेलननैहेज
लमाझमनौजलदेवैनै ॥ १७ ॥ पद्धि
टिका ॥ मृगमदमिलिकुंकुमसुनी
र ॥ घनसारसहितश्रंवरउसीर ॥ घ
सिकेसरसौवहुविधिसरीर ॥ छीति
छिकेचारुवासरीर ॥ १८ ॥ वहुव
नेफूलफलदलउदार ॥ तहरेषभ
भोजनअपार ॥ तहपुष्पव्रछसा
मैअनेक ॥ मनिव्रछस्वर्गकेवसे
एक ॥ १९ ॥ तिहिउपरेवरेकेविता
न ॥ दिविदेषतदेविनिकेविमान
नृत्यगीतवाजतनिसान ॥ दुहूंवो
रहोतिमंगलविधांन ॥ २० ॥ ततुउ
मरिकोआसनअनूप ॥ रचितहेम
मयविस्वरूप ॥ तहेवैठश्रापुनश्रा
इराम ॥ सियसहितममनोरतिस्
चिरकांम ॥ २१ ॥ जनुघनदामिनि

आनंदु देत ॥ ननु कल्पकल्पवल्ली
समेत ॥ किधौं सु विद्या सहित गया
न ॥ किधौं तप संजुत सिद्धि जां न ॥
२२ ॥ किधौं विक्रम ज्युत कीरति प्रवीं
न ॥ किधौं श्री नारा इन सौं भलीन
केश्रुति सौं हति स्वाहा सनाथ ॥
किधौं सुंदरा ता श्री गा रसो थ ॥ २३ ॥
सुंदरी ॥ केसव सोभन छ तु विराज
तु ॥ जा कहं देखि सुधा घतु लाजतु
सोभित सौ तिन के मन के गन लो
कन के अनुएण रहे मन ॥ २४ ॥ दो
हा ॥ सीतल ता सुभ ता सवे सुंदरता
के साथ ॥ अपनी रविकी अंसु लै
सेवत जनु निसिनाथ ॥ २५ ॥ सुंद
री ॥ ता हि लिये रवि पुत्र सदा रते
चौं रवि भीषन अंगद ठारते ॥ चंद
न चंद्रक चंद्र सुधारत ॥ कीरत लै

जानकीजनुवारत॥२६॥लक्ष्मनदर्प
नकोदासोवत॥पौनसत्रुघनवंधु
षवावत॥भाएलेलेनरदेवसदा
रत॥देवअदेवनिपाइनिपारत॥२
७॥दोहा॥जांमवंतहेनमंतनल
नीलमएतनवसाथ॥लीएंछवीली
सोभिजेदिगपालनिकेहाथ॥२
८॥नृपवहिक्रमसुरभिसमवच
नाचनवहुभेव॥सभामधपाहि
चांनिसेभनरदेवअदेव॥२९॥श्री
ईजवअभिषेककीघटिकाके
सदास॥वाजेएकहीभेअदंद
भिदीहअकास॥३०॥झूलना॥
नवलोकनाथविलोकियोघ
नाथकोनिजुहाथ॥सवसेषमो
अभिषेककीमिलिउचरीसुभ
गाथ॥रिषिराजईष्टवसिष्टसो

मिलगाधिनंदनआइ॥ मुनिवाल्मीकअगस्तकेसवअंगएगनिमाइ॥२४॥ रघुनाथसंभुस्वयंभकोनिजभक्तिदीसुषपाइ॥ सुर्लोककोसुराजकीनोदीहनिर्भयराइ॥ विधहोंषिषीसनसौविनोकरपूजिअरूपसीपाइ॥ बहुधादईनतपचहुकीसवसिद्धसुहसुभाइ॥२५॥ दोहा॥ दीनोमुकटविभीषनैअपनोअपनेहाथ॥ कंठमालसुग्रीवकोदीनोश्रीरघुनाथ॥२६॥ चच्चरी॥ मालश्रीरघुनाथकेउरसुभसीतहिसोदई॥ आपियोहनिमंतकोतिनदृष्टकेकरनामई॥ औरदेवनदेववानराजाचिकादिकपाइयो॥ एकअंगदछोडिकेजोजासुकेमन

नभाइयौ ॥ ३४ ॥ अंगद ॥ देवहौनर
देववांनरनैरिसादिकधीरहौ ॥ भ
रयलछमनआदिदैरघुवंसकेतुम
वीरहौ ॥ आजुमोसहजुहमाजेसु
कएकअनेकके ॥ बापकोअवहौति
लोदकुदेहुदीहविवेकके ॥ ३५ ॥ रा
म ॥ दोहा ॥ कोउमोरवंसकोकरिहै
तुमसोजुद्ध ॥ तवतेरामनहोइगोअ
गहहमसोसुद्ध ॥ ३६ ॥ विधिसोपुरि
पवारकैरामजगतकेनाह ॥ दीनै
गांउसनोहियानिमंथुरामउछाह
॥ ३७ ॥ इतिश्रीमत्सकललोक
लोचनचकोरचिंतामनिश्रीराम
चंद्रिचंद्रिकायांश्रीरामअभषे
कवर्ननंनामछवीसमोप्रकास
॥ २६ ॥ दोहा ॥ सताईसवरनिवौ
केसवदासवनाइ ॥ अमरजालअ

स्तुतिकरहिंमचंद्रकीआरा१॥आ
लना॥तुमहोअनंतअनादिसर्व
गसर्वदासरवग्य॥अवएकहौकि
अनकहौमहिमांनमानतअग्य॥
भमवौकरौजगलोकचौदहलो
भमोहसमुद्र॥रचनारचीतुमता
हिजानतहैनवेदनतुद्र॥२॥श्रीम
होदेव॥अमलचरितनतुमवेरिन
मलिनकरहुसाधुकेह॥साधुपरद
रप्रियाअतिहौ॥एकथलथितिपै
वसतजियजननकेसौदासदुप
दपैवहुपदमतिहौ॥भूषनसकल
जुतभूमिधरैसीसभारभूपारफिर
नतुअभूतभवपतिहौ॥राजाश्री
रामरतसदाही विलोकिजनमन
क्रमवचनकिपरमविरतहौ॥३॥रं
द्रवाच॥वैरीगाहवांसनकेग्रंथ

निमिसुनिजतुलोचननिहीकोसुव
रनहरकाजुहै॥ तरसेजगामीएक
वालकैविलोकिजतुमातंगनिही
केमतवारकेसोजातुहै॥ अलिग
ीनप्रतकरतेअंगम्यागोनदुर्गनि
हीकेसोदासदुर्गतसीआजुहै॥ दे
वताईदेषजतुगरुनिगरुाइगति
चित्तजितोएमचंद्रजाकोअसो
एजुहै॥ २॥ पितर॥ बैठेएकछत्रत
रछांहसबछिनिपत्राजकुल
कसकलएहहितमतिहै॥ हीन
वामलोचनकहतसबकेसोदा
सविधमानलोचनहेदेषजत
अतिहै॥ चकरवाहावतधनुष
धरेदेषिजतुपरमकपालपद्म
पानकरपतिहै॥ चिरचिनुएजु
कोएराजाएमचंद्रतुमसबलो

गकेहेनरदेवदेवगतिहै ॥५॥ अग्नि
चित्रहीमेंआजुवर्नसंकरविलोकि
जतुसाहहीमेंनारिनिकेगारिन।
सोकोमुहै॥धुजाकपुजोगिनिसी
चक्रेहेवियोगीदुजराजुमित्रदे
षीजगजलजसमाजुहे॥मेघतो
गगनपरागजतनगरघेरिअपज
सरजजससहीकोलोभआजुहे॥
दुषहीकोषंडनहेमंडनसकलज
गचितुनियोएमचंद्रजाकेअैसो
राजहै॥६॥वायु॥राजाएमचंद्रतु
मराजनसराजजाकोभूतलकेआ
सपाससागरकोवासुसो॥सागर
मेंवडभागवेषसेषनागकेसोसे
षजूमेंसुषदानिविस्नकोनिवा
सुसो॥विस्नजूमेंभूरिभावभवको
प्रभाउजेसोभवजूकेभालमेंवि

रा॰
१५९

तुम ४

भूतकौविलासुसो॥भूतिमाग्रचं
द्रमासोचंद्रमसुधाकोग्रसुग्रंसु
निमकसोदासचंद्रिकाप्रकासु
सो॥७॥देवगन॥राजारामचंद्ररा
जुकैरासवकालदोरघुडमदडुष
दोनकेविदारिये॥कैसोदासमित्र
दोषव्रलदोषमंत्रदोषदेवदोषरा
जदोषदसतेनिकारिये॥कलदंत
घमहिंमडिमंडलकेवलिवंउष
उत्तग्रषंडषंडकरिडारिये॥वंचक
कठोरठेलिकीजेवारग्रारग्रारठ
ग्रूढपाठपाठकारीकदमारिये
॥८॥रिषिय॥भोगभारभयभारके
सवविभूतिभारभूमिभारभूरिग्र
भिषकनकेजलसे॥दानभारमान
भारसकलसयानभारधनभार
धर्मभारग्रस्तग्रमलसे॥ज

१५९

पभाराजसभाराराजभाराजतुहेरं
मसिंआसिषअसेषमंत्रवलेस॥
देसदेसजंत्रतंत्रदेषिदेषितिहि
दुषफाटततहेसत्रनिकेसीसदासा
फलसे॥८॥कविकेसवदास॥जा
इनहीकाततकहीसवसीसवि
ताकविताकारहोत॥याहीतेके
सवदासअसीसपठेअपनाकू
निकुनिहारी॥कीरतिदेवनकी
दुलहीजसदलहसौरघुनाथ
तिहोत॥सातहूलोकनिसातहूं
दीपनिसातहूसागरपारविहा
रे॥१०॥अमरअनंतश्रीरंमली
ला॥अमरअजरअनंतजपज
पचीतश्रीरघुराइ॥करतसुर
नरनिरषिअचिरजसवनसु
निसुनिगाइ॥मनोवचक्रमेन

मनिरषतसिलासमपरिनारि॥सि
लातेअतिपरमसुंदरकरीनैकुनि
हारि॥१९॥चौरठारतमातऊपरपा
नेपीउहाहू॥विदंडज्योकोटंउह
रकोटूककीनोटूउ॥साधुहोइअ
साधुरोषतदुज्जनिहौंकोमानुस
कलमुनिगनमुकटमनिकेमर
दियोअमिमानु॥२०॥सरसुंदरास
रसारचिरतिकरनरतकहलाल॥
एकपतिनीव्रतनिवाहनमदन
कोमदुघाल॥सुषदसुकृतपूत
सोदाहननतनपयाकाज॥पल
कमैसाईराजछांडेमातुपितु
कीलाज॥२१॥मंथराअसोमोदुमा
नत्तविपनपठएहल॥सुपनषा
कीनाककाटीकानआईकेल॥
चिवुचांपतअंगुलीसुकेपेचि

स

लेतउराइ। बंधसहितकमंध्यके
उरमधमेपैठजाइ॥ ४ ॥सर्वदासव
इसर्वगसर्वदासएक॥ अपसो
ताविलोकीविगपभमतअनेक॥
लक्षिचूकनसासकौंकोगनेके
तिकवार॥ तालसातउभेदियोसा
एकएककहिवार॥ २५ ॥साधुपरमे
असाधुअरुउपगीतकीनौमित्र॥
अपराधविनअतसाधुवालो
हम्योजांनिअमित्र॥ चलतजब
चौगांनकौलेचलनदलचतुरं
ग॥ देवसबहिचलेजीतनछिके
वांनरसंग॥ २६ ॥भूलिहूंजातन
निहारतहोतुगिरिनिसमान॥
निगरदेषेभयगिरगनजलध
मेज्योपांन॥ जतनजतननतर
नसजेनीढिजोलतईरा॥ गए

श्रौ ३

सागरपारदैपगप्रगटिपाहनपीठ ॥१७॥ बाजगजरथवांहनीचढिचल तप्रमतिसुभाइ॥ लंककौंनिरसं कनीकैगएअपनेपाइ॥ जगपकौ फलग्रहतजतननिजज्ञपुरिष कहाइ॥ बाजऊठेदएसवरीभाषिपा सुषपाइ॥१८॥ कुसमकेंदुकल गनकांपतमूंदिलोचनमूल॥ स मरसन्मुषसहेहसिहसिसन्ह अससबरसूल॥ दूरकरतनदयाद रसतदेहदंसतुदंस॥ भरीवाल कातरावनवंसकौंनिरवंस॥१९॥ वांनुझेलहिआनकौंलगिना उआपनेंलेत॥ कालकौंरिपु आपुहतिजयपत्रऔरहिदे तपुंन्यकालहिदेतविप्रनितोलि तोलिकनककैसत्रसादरकोदईस

वसर्नहीकीलंक॥२८॥होइमुक्तसु
जाहिआवैमानेइनिकोनामसु
क्तएकेनभएवांनरमोकोसंग्रा
म॥एकपुत्लविनप्रांनषायोवार
वाजम्हात॥वरषचौदहनीदभू
षपिपाससाधीगात॥२९॥छैम
वरअपराधअपनेकोरिकोटि
कराल॥अपराधुआधुनछमि
गयोदुजदीनकौतिहिकाल॥जद
पिलछमनकरीसेवासर्वभावस
मेत॥तदपिमाननसर्वदांकभि
रयहीसोहत॥३०॥कहतरिनि
सौपरमसांचेसकलएनाए
न॥तनकसेवादासकीकहिको
टगुननिवनाइ॥उतएकअलो
ककेपजीतिचौदहलोक॥ठो
रजाकोकहुनताकोदेनअप

तैलोक॥२३॥छाईरिषिदुजदेवरि
रिषिरिषिराजसववसुषपाइ॥प्रथ
मसकलसनोदियनिकमगट
पूजेपाइ॥छोउँपितरुत्रसंकुहे
विपरीतिजदापिदेह॥अवधिके
सवजातसकरहयांनस्वर्गसदेह
॥२४॥एकपलउरमाअस्रोपाह
रतसवसंसाह॥आईकेसंसार
मैइनिहद्योभूतलभाह॥सेषु
संभुस्वयंभुगावतनिगमनेति
दुजास॥ताहिलघुमतिवरनि
कैसवकहेकेसवदास॥२५॥दो
हा॥इहिविधिचौदहभुवनके
गावतजनजसमाथ॥प्रेमस
हितपहिराइकैविदाकीएघु
नाथ॥२६॥झूलना॥अभिषे
ककीएहगाथश्रीरघुनायकौ

नरकोइ॥ पलुएकुगाइसुपाइहैव
हुपुत्रसंपतिसोइ॥ जजिजोइगीस
ववासुनामवविस्लभगतकहाइ॥
जमएपकेसिरपाइदेसुषलोक
लोकनिजाइ॥२७॥ इतिश्रीमत्स
कललोकलोचनचकोरचिंतामनि
श्रीरामचंद्रचंद्रिकायांश्रीरा
मराजवर्ननंनामसताईसमो
प्रकास॥२७॥ दोहा॥ अठाईसवे
रनिवोसुरपुरसमसुषसाज॥ अ
हसिद्धिनवनिद्धिपुरएमचंद्रके
राज॥१॥ भुजंगप्रयात॥ अनेना
सवेसर्वदासस्पजुक्ता॥ समुद्रा
वधिसप्तईतिविमुक्ता॥ सदाव्र
क्षफूलफलजत्रसोहे॥ छेहके
लकेफूलफूलफलहे॥२॥ सवै
निमृगाछीकेपएपूरी॥ भरीका

मंगोसीसवे धेनचूरी॥ सवेवाजस्व
वीजितनेसपूरे॥ सवेदंतिसर्वदेतिने
दर्पपूरे॥ ३॥ सवेजीवतेसर्वदानं
दपूरे॥ छमीसंजमीविक्रमीसा
धुसरेजुवासर्वदासर्वविद्याबि
लासी॥ सदासर्वसंपत्तिसोभा
प्रकासी॥ ४॥ चिरंजीवसंजोग
जोगीअरोगी॥ सदाएकपत्नी
ब्रतीभोगभोगी॥ सवेसीलसौं
गंधसुंदर्जधारीसवेब्रह्मग्यानी
मुनीधर्मचारी॥ ५॥ सवेदानच्छ
स्नानकर्माधिकारी॥ सवेचित्त
चातुर्जचिंताप्रहारी॥ सवेपुत्र
पौत्रादिकेसुष्पसाजेसवेभक्ति
मातापिताकविराजे॥ ६॥ सवे
सुंदरीसुंदरीसाधुसोहे॥ सची॥
सीमतीसीजिन्हेदेषिमोहे॥ स

वैग्रमकीपुन्यकीपग्निनीमी॥स
वैचित्रनीपुत्रिनीपझिनीमी
७॥भेमे।संभ्रमीजन्नसोकेसमा
की॥अधर्मेअधर्मीअलोकेदु
षैतोदुषीतापतापाधिकारी॥द
लिद्रेदलिद्रीविकारैविकारी॥८
॥चौपही॥होमधूममलिनाई
जाहां॥अतिचंचलदूलैहेतहां
वालनासहेचूडाकर्म॥नीछ
नताआयुधकेधर्म॥घदेतज
नेउभिछादान॥कुटिलचाल
मीतांनिवषांन॥आकैनेदुज
व्रन्तनिधरे॥कोकिलकुलपत्र
निपरिहरे॥१०॥फागुहोलीमा
निल्लजदेषिये॥जुवादिवारी
कोपषिपेदिनउठबेओईमा
ग्रे॥षेलनमेकयोहूहायिये॥११

दंडक॥ भावै जहां विभचारी पर ना
रि विहार में दूजै गज दंड धारी चोरि
पर पीर की॥ मानिनी निही के म
न मानि जतु मान भंग सिंधुहि
उलंघै जान जीतिहै सरीर को॥ मू
ल तो अधोगति निपावत है केसौ
दास मीचु ही सों है वियोग इक्षा
गंगा नीर की॥ वांधो वासना नि
जांनि विधवा है वा टिका ही औ
सी रीति राजनीति राजै रघुवीर को
॥२२॥ दोहा॥ कविकुल ही को जां
निजै उर अभिलाष समांनत्ति
षिही को छय है नु है रामचंद्र
के राज॥२३॥ दंडक॥ लूटिवे
के नाते आपि हैन तो लूटि जतु
तो रवि को मोहन तु तोरि जातियै
तु है॥ घालिवे के नाते गर्भ घालि

जतुदेवनिकेजाविकेनातेअ
घवाषजायितुहै॥ वांधि
वेकेनातेतालवांधिजनकेसो
दासमाविकेनानैतोदलिद्र
मायितुहै॥ राजारामचंद्रजू
केनांमसबुजगजीतिजतुहारि
वेकेनातेआंनजन्महायितुहै
॥१४॥ चंद्रकला॥ सबकेकलपद्रु
मकेवनुहैसबकेदावानगाज
तहै॥ सबसिद्धुविसेषअसेष
निसोसबलोगसबैसुषसाज
तहै॥ सबकेघासोभितदेवस
भासबकेजयदुंदभीवाजतहै॥
कहिकेसबश्रीरघुराजकेराजे
सबैसुरराजसेराजतहै॥१५॥चं
द्रकु॥ जनुअहीमकलहुकलहु
प्रियनाहिहेकुबेरहेकुनूपलो

रा॰
१५५

भुसवकेवयनको ॥ पापनिकीहानि
उगुगनिकोवेरीकामुआगेसर्व
भक्षीवृपदाइकुवयनको ॥ विद्या
हीमवादवड़नाइकवारिधुरेकु
जाइवहेहनमंतुमीतुउदयनको ॥
आंषिनिअक्षितुअंधुनालकेरक
सकटिअसोराजराजेरामराजीव
नयनको ॥ १६ ॥ दोहा ॥ कुटिलक
टाक्षकठोरकुचयेहैदुषःघदेव ॥
दुस्वभावस्लषमेवांम्हनजातिअ
जेव ॥ १७ ॥ तोमर ॥ वहुसव्दवचक
मानि ॥ अलिपस्पतोहरजानि न
रछांहहीअपवित्र ॥ सरषड़निर्द
यमित्र ॥ १८ ॥ सोरठा ॥ गुननतजिअ
विगुनजाल ॥ ग्रहतिनित्रपतिचा
लिनी ॥ परचलोतिहकाल ॥ ऐकै
कीरतिजांनिये ॥ १९ ॥ दोहा ॥ ध

नदलोकसुरलोकमयसमलोक
केराज॥सप्तदिपा वतमहिवसी
रामकेराज॥२०॥दसहजारदसेस
वारसावसीइहिराज॥स्वर्गन
र्केकेमगराम्यकेरामचंद्रकेराज॥२१॥
॥इतिश्रीमत्सकललोकलोचन
चकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रचंद्रि
कायांरामराजीवर्नननाम-अष्टाई
समोप्रकास॥२८॥दोहा॥नवविं
नवविंसतेप्रकासमेग्रष्यमकहौ
चौगान॥धांमुधांमुवरननिसवै
केसवदाससुजान॥१॥चौपई
एककालअतिरूपनिधांन॥षे
लनकोनिकसेचौगांन॥हाथध
नुषसरमन्मथरूप॥संगसषादे
सोदाभूप॥२॥जाकेहजवहीश्रा

वेद्र

इसुहोइ॥जाइचढेगजबाजनि
सोई॥पसुपतिसरघुपतिदेषि
ये॥अनुगतिसेनुमहाललषिये॥३॥
वीथीसवअस्रुवानिभई॥हय
हाथिनसोसोभतिषई॥तउपुं
जनिसोसरितोभली॥मानहुमि
लनसमुद्रहिचली॥४॥रहिवि
धरांमगएचौगांन॥साबकास
सवभूमिसमान॥सोभनएक
कोसपरिमान॥रचीनचित्रताप
रचौगान॥५॥एककोधरघना
थउदार॥अरथुदूसरीकोधवि
दार॥साहजतलीनेहाथनछरी॥क
रिपीरीरातीहरी॥६॥देषनलागो
सवजगजाल॥उदियोभुअगो
लालाल॥गोलाजाइजहीजह

जेवे॥ होत तिते तितही तिन सेवे॥७॥
मनहुं रसिक लोचन रुचि रचै॥ रूप
संग वहु नाचनि नचै॥ लोक लाज
छाडे अग अंग॥ डोलत जन जयस
वकु संग॥ ॥ गोला जाके आगे जा
इ॥ सोई ताहि चलै अपनाइ॥ जे
से त्रियगन को पति ऐसो॥ जिहि
पायो ताही को भयो॥ ८॥ नैकुहु
टालि न पावै सोइ॥ इतते उत उत
तें इत होइ॥ कांम क्रोध मद वधो त्र
पार॥ मानो जीव भ्रमत संसार॥ १०॥
जहां तहां मो सेवक होइ जो न प्रप
च विरोधी होइ॥ बीघरी भ्रत टाकु
र सेवे॥ वदलै वाहन वासन तैसे॥
११॥ दोहा॥ जब जो जीतो हाल
होति तव तव जतननि सांन॥ हय ग

यभूषनभूरिपरदीजतुविप्रनिदांन ॥९२॥ चौपही ॥ नवतिहसमैएकेव ताल ॥ पठैगीतुसुभवुधिरसालंगो लनकीविनतीसुषपाइ ॥ रांमचंद्र सौकीनीआइ ॥९३॥ दंडक ॥ पाप कीपूरवकीपुरीपूरीपापरीपुरीस तनवापुरीवदूरहूहैतेआरतिकात है ॥ दक्षिनकीजक्षनीसीगाक्षत्र नरिक्षमगपश्चिमकीपक्षाहीन पक्षीज्योंउरानहैहे ॥ उतरकीदति हैउताशिरनागतनिवातनिउ ताइलीउताररनिकहतहैहे ॥ गो लनकीमूरतिनिदीजेजूअभ यदांनरांमवैरकहांजाइपाइन पातहै ॥९४॥ चौपही ॥ गोलनि कीविनतीसुनिईस ॥ घरकोग

मनकैराजगदीस॥पुरपैठतसोभा
अतिभई॥वीथीअसवारनभरिग
ई॥१५॥मनहुसेतमिलिसहितउ
छाह॥सरितनिकेफिरचलपवा
ह॥तेहींसमैसुरनसिगरो॥दीप
उदोतनरमैभयो॥१६॥नषतनिके
सीनगरीलसी॥मानोअौधिदिवा
रिवसी॥नगरअसोकुवृक्षउचि
ऐसो॥मधुप्रभुदेषिप्रफुलितभ
यो॥१७॥अधअधफरउपरअा
कास॥चलतदीपदेषिजनुप्रका
स॥चौकीदेजनुअपनेभेव॥दे
वलोककौवडदेव॥१८॥वीथी
विमलसुगंधसमान॥ताहिवर
नकौसकैप्रमान॥महाराजकौं
सहितसनेह॥निजुनैननिजनु

देषतगृह॥१९॥बहुविधिदेषतपुर
केभाईसहजसभामैंबैठेजाइ॥पह
रएकनिसबीतीजहीं॥विनती
कीसुकआएनहीं॥२०॥श्रीशुक
उवाचहरिप्रियाछंद॥पोठिएकृ
पानिधाननदेवदेवबामदेवचंद्रचं
द्रिकामैंनिरैनचित्तमोह॥म
नौसुमतिसुमनसंगएचतुचिर
सुषतरंगआनंदमयअंगअंग
सकलसुषनिसोहै॥ललितल
ननिकेविलासभरभमतहै
उदासअमलकमलकोसवा
सआसपासकीनै॥नजितजि
मायाडुरंगभगतएवअनंतन
वकपदनयनवयनमानहुम
नदीनै॥२१॥घरबारसंगीतगी

तवाजतवाजे अजीतकामभ
प आगमजनुहोतहै वधाए॥ ए
जभवन आसपासदीपवृक्ष के
विलासजगतजोतजोवनजनु
जोतिवंत आए॥ मोतिनिमय
भित्तिनरीचंद्र चंद्रिकासमरी
पंकअंक अंकिनभवभूएभेद
सोकरी॥ मानोसासिपंउतिक
एजोन्हजोतिमेंउतिश्रीखंड
सैलकीअखंउसुंदरीदरी॥ २२॥
ऐकदीपडुति विभातिदीपति
मेंनिदीपपातिमानोभवभूप
तेजमंत्रिनिमेएजे॥ औरेम
निखचितखेभाजनवङ्भा
तिभेएखतग्रहग्रहअनेकम
नोमोनसाजे॥ अमलकमल
जलनिधांनमोतिनकेसुभ

वितांनतानपलिकाजगाइ
जटितजीवहरषै॥कोमलन
नतगसालतनसुषकीसज
लालमनहुसोमराजपर
सुधाविंदुवरषै॥२३॥फूलन
केविविधहाघुरलनडेरम
नसुठाविचविचमनिस्याम
हारुपमानकभाषी॥जीनो
सवजगतुजनितुमसोहिपहा
रमानमनहुमदनधनपतते
गुनउनाराषी॥जलथलफ
लफूलभूरिअंवरपटवासध
रिवक्षजक्षकर्दमजियदेव
निअभिलाषै॥केसरिकुमकु
मजिवादिमगमदकापूरअ
दिवीरावनितनिवनाइभाज
नभरिराषै॥२४॥पंनगीनगी

कुमारिअग्रासुरीसुरीजिहारिवि
विधिवीनकिन्नरीसुकिंनरीव
जावे॥मानोनिहिकामभक्तिस
क्तिआपआपनीनिदेहनिधरि
प्रेमनिभरिभजनभेदगावे॥सो
दासांवधूसुरसेनापतिदासदू
नदेसदेसकेनरेसमंत्रिमित्रले
षिये॥वहुरोसुअंसुरसिद्धप
डिनमुनिकविप्रसिद्धकेसवव
हुरिराजलोकदेषिये॥२५॥ राज
दोहा॥कहकेसवसुषकेवचन
सुनसुनिपामविचित्र॥राजलो
कदेषनचलेरामचंद्रजगमि
त्र॥२६॥नाराच॥सुदेसराजलो
कआसपासकोटदेषियै॥
चौविचारिचारिपौरपूरवादि
लेषियो॥सुवेसएकएकसिं

धुएकुदंतिराजेहे॥सुपेकुवाजि
राजएकनंदिवेषसाजेहे॥२७॥
दोहा॥पांचचौकमधिहैरचेसा
तचौकतलहारि॥षटऊपरानि
नकौतहांचित्रचित्रविचारि॥२८
चामर॥भोजएकचौकमधिद
सौरचीसभातीसरेविचारमंत्रि
औरनत्सकीप्रभा॥मध्यचौकमे
तहांविदेहकंन्यकाबसे॥रांम
चंद्रसवैभाइलीनसर्वदालसे
॥२९॥दोहा॥मंदिरकंचनकौअ
तसोहे॥स्वेततहांछितुरीमन
मोहे॥सोहनसीरषमेरहमानो॥
सुंदरदेवद्दिवस्तनवषानो॥३०॥
मंदिरलालनिकौमनुमोहे॥सां
मतहांछित्रुरीइकसोहे॥ताहि
पहैउपमासवसाजे॥सूरजज्ञ

कमनोमनिराजे ॥ ३१ ॥ मंदिरनीलु
वनोमनुमोहै ॥ चित्ततहांछतुरी
अतिसोहै ॥ मांनहुहंसनिकीअ
वलीसी ॥ प्राततहिकालउआरच
लीसी ॥ ३२ ॥ मंदिरसेतुलसेअत
भारी ॥ सोहतिहैछतुरीशुषका
री ॥ मानहुईसुरीसुरकेसिरसो
है ॥ मूरतिराघवकीमनुमोहै ॥ ३३ ॥
तोटक ॥ सबधांमनिमैंकुधांम
बनो ॥ अतिसुंदरचिंतनरूपसु
नो ॥ सनिसंवहसतिमंदिर
मै ॥ परिपूरनचंदमनोबिलसै ॥
३४ ॥ दो पद्धी ॥ वहुधांमंदिरदेष
भले ॥ देषनसुभसालिकाचले ॥
सीतभीतजेमा[illegible]रनमेवसै ॥
पलकुवसनमालामेलसै ॥ ३५ ॥

रा॰
१६९

जलसालांचात्रकज्यौएं॥ अलि
ज्यौंगंधसालिकांगये॥ निपटरं
कज्यौंसोभतिभये॥ मेवाकीसा
लामेंगए॥३६॥ मानिनीनिकै
सेमनभेव॥ गएमानसालामेंद
व॥ सुभसिंगारसालाकोदेषि॥
उलटेललितनयनसलेषि॥३७॥
मंत्रिनसोंवैठेसुषपाइ॥ पलकु
मंत्रिसालामेंजाइ॥ चतुरचोर
ज्यौंसोभतभये॥ धांनीधधेन
सालहिंगये॥३८॥ तोटका॥ ज
वएउमेंषुनाथगये॥ वहुधां
अवलोकितसोभभये॥ चंदन
कीसवसुधिकी॥ मनिलाल
सिंनिसुधाधरी॥३९॥ वएा
अतिलालसुचंदनके॥ उपजे

वनसुंदरनिंदनके॥गजदंतनिकी
सुभसीकनई॥तिनिबीचनिबी
चनिस्वर्नमई॥४०॥तिनकेसुभ
छुपाराजतहे॥कलिसामनि
नीलविराजतहे॥अतिअद्भुतपं
म्हनिकीदुगई॥गजदंतिसुकंच
नचित्रमई॥तिनिमाअलसेव
हुभाइनके॥सुभकंचनफूलज
राइनके॥४१॥रूपमाला॥वर्नव
र्नजहांतहांवहुधांवनेतिवितां
न॥आलेमुकतानिकीअरुग्र
मकाविनमान॥चौषटेमनिनी
लकीफटिकांनिकेतिकपाट॥द
षिदेषिजुहोतहेसवदेवताजनु
भाट॥४२॥स्वेतपीतमनीनिकी
पादांचीउचनील॥देषिकेजनु

देषिजै सुभ लोल लोचनि मीन सु
भहीरनि के तिअंगनि द्वाहि जे र
लाल ॥ सुंदरी तिनि भूलहीं प्रतवि
वके सुष जाल ॥ ४३ ॥ स्वागता ॥ धं
मनि धांम निआ रन सो है देषि
देष राघुनाथ विमोहैं ॥ वारनि सो
भ सुभ कौन कहै जू जत्र तत्र मन
भूलि रहै ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ जो कैरू
पुनरेष रेजा नंनत वेदन गायथा रं
गिमहल मैं रंम गय राज श्री के
साय ॥ ४५ ॥ इतिश्री मनसकल लो
कलोचन चकोर चिंतामनि श्री रा
म चंद्र चंद्रिकायां श्री राम मंदिर
वर्ननं नां मउनतीस मो प्रकास २९
दोहा ॥ यह तीसयें प्रकास मैं म्रथ
मकहो संगीत ॥ भोजन विधि सव

वानिकैवहुवसंतकीरीत॥१॥चतु
पदी॥दुतंरागसदनकीसहसवद
नकीवरनैमतिनविचारी॥अध
रैधरातीरागसधातीरचिवहुधां
सुषकारी॥चित्रीवहुचित्रनिप
रमविचित्रनरुकुलचारुसु।
हाये॥सवदेवअदेवनिअरुनर
देवनिनिरषेनिरषिसिरनाये॥२॥
तहआईवनितालागलागन
गनसालावुधिवलनूपनिवा
री॥सुभजातिचित्रनीचित्रये
हैतेनिकसभरीजनुठाठी॥मा
नौगुनसंगनिपैप्रतिअंगनि
नूपकनूपविराजै॥वीनानिवजा
वैअद्भुतगावैगिरागिनीला
जै॥३॥दंडक॥अपघनघाइनवि

लोजनुघाइलनषनोसुषकेसो
एइभगटषमानहै॥ सोहैमनुलो
भैतनुनिननितुदनुहोतुसषोसो
चमोचढुपमारनविधानहै॥ आ
गमनिगमतंत्रसाधुसवमंत्रज
त्रगिगनिकावेकोकेवलआप
नहै॥ वालनिकीतननतांनआमि
तप्रकासवरीआिमदेवकोम
देवकेसेवानहै॥ ४॥ पद्धटिका॥
सुनादग्रामनंतनसलाल॥ सुव
गविविधूलपअलतिकाल॥ व
हुकलाजातिमूर्छ्छौजाति॥ वउ
लागगमकगननचतजाति॥ प
वहुविविधिवचनआकासचा
ल॥ मषचालिचारुअहसवहुवा
लि॥ वहुउरफतिरफपनीअउ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ल॥ अतुलागराटरागजाल॥ हि
लथ्यांहैकी आमसदिङ॥ पदपल
टीहरमहीनिसंकाउ॥ सुनिनकी
भमीदेषिमतिधीतु॥ भमुसीष
तहेसतधासहीतु॥ ७॥ मोटनक॥
नाचेनरवेषअसपतवे॥ वीषेवि
रसैवहुभांतसवे॥ नौऊरसमिश्र
तभाउनचे॥ कौन्वेनहिहसलवले
दवचे॥ ८॥ दोहा॥ पाइपषावप्र
तालसोघतिधुनिसुनिपहगी
तु॥ मानोचित्रविचित्रमतिपर
तुसकलसगीतु॥ ९॥ अमलक
मलकर अंगुलीसकलगुननि
कीमूए॥ लागतमूढमृदंगमुष
सब्दहहनभएपूए॥ १०॥ कोटभां
तसंगीतसुनकेसवश्रीरघुना
थ॥ सीताजूकेग्रहगएगेहेप्री

तिकोहाथ॥१९॥सुंदरी॥सुंदरमंदि
रमैंमनुमोहति॥स्वर्नसिंघासनऊ
परसोहति॥पंकजमेकरहाटक
मानो॥हैकमलाकमलापतिज्ञा
नो॥१२॥फूलनकोसुवितांनत
नोवा॥कंचनकोपलिकाइकता
नर॥जोतिजराइजरीअतिसोभ
नु॥सुजमंडिलनैनिकसोजनु
॥१३॥कुसमविचित्र॥दरसननहीने
ननिरुचिवने॥वसनविछाएस
वसुषसने॥अतिसुचिसोहैक
वहुनसुने॥जनुतनुलैकेसमसि
कावने॥१४॥चोपही॥चंपकद
लदतिकेगेउवे॥मनहुरूपके
रूपकउवे॥कुसमगलावनिकी
गलसुरी॥वनीजाइनानेननि
धुरी॥१५॥दोहा॥रामचंद्ररमनी

प्रभुतापपैठेजाइ॥पदपंकजनि
पंकजनिपषारिकैकाहिकेसवसुष
पाइ॥१६॥तोमर॥जिनकेनपनर
ष॥तेपोढियोनरवेष॥निसनानि
योइहिवार॥बहुवंदिवोलतद्वार
॥१७॥दोहा॥राजलोगजागेसवेव
दीजनकेसोर॥गएजगावनरांम
कौंमा(किादितउठिभोर॥१८॥चच्च
री॥जागिजेत्रलोकदेवदेवरामदे
वभोरभयोभूमिदेवभगतदरसपा
वे॥ब्रह्मामनमंत्रवरनविस्तचि
त्तचात्रकषनउद्दहृदयकमलमि
त्तजगतगीतगावे॥गगनउदितर
वअनंतसुकादिकजातिवंतछे
नछनछविछीनहोतिपीनभए
तारे॥मांनहुपरदेसदेसब्रह्मदो
षकेप्रवेसठौरठौरतैविलासजा

तभूपभारे॥१९॥अमलकमलत
जिअमोलमधुपलोलटोलडोल
वैठतउरिकरिकपोलदांनमांन
कारी॥मानहुमुनिज्ञांनवहुछोउ
छोउग्रहसमहुसेवतगिरगनअने
कसिहुसिद्धधारी॥तरकिनउदि
तभएदीपदेहमलिनभएसदन
हुदपवोधउदपज्योंकुवुद्धनासे॥
चक्रवाकनिकटगई चकरीमन
मुदितभईजैसेनिजुजोतपाई।
जीवजानभासे॥२०॥अरुनतरुन
केविलाससहससकिरनकेप्रका
ससातदीपआसपासदीपतदि
सनाधेदीसतआनंदकंदनिस
विनडतिमंदचंदज्योंप्रवीनपुर
षजुवतिहीनदीनभाषे॥निस
वरचंपकेविलासदासहोतहैउ

दासमूरकेप्रकासत्रासभागततम
भार॥ फूल्लतसुभसकलगातअंसु
भसलसविलातआवतज्यौसुघट
एमसुषतिहार॥२७॥सारसकपि
कमरालकेकींकोकिलरसालबा
लतकलवारपारभूरिभेटगनिये॥
कीजेअस्नानदानसकलजानिजे
विधानवचनमानिजेप्रमानकरना
मयसुनिये॥ सोदासुनमंत्रिमित्र
द्विसद्विसकनपविचित्रसेवतमुनि
कविप्रसिद्धसिद्धहारेठ॥एमचंद्र
चंद्रवारमानकुचितवतचकोरकु
वलयजल्लिजलधिज्योरचौपचि
त्रवारे॥२८॥नाचतरचित्रचिरएक
जाचकगनगनअनेकचारनमा
गधअगाधविरदबंदहेर॥मानकु
मंडुकमोरचात्रकचपकरतसोर

तडितवसनसंजुतघनस्यामहेत
तैरे॥केसवसुनिवचनचारुजागे
दसरकुमारनपुष्पाइत्पाइलीन
जनजलथलवारके॥वोलिहसि
विलोकिवीरपांनदांनहरीधीरधु
रेअभिलाषलाषभांतिभांतिलो
कलोकके॥२३॥दोहा॥जागतश्रीर
घुनाथकेवाजेएकहिवार॥निकर
नगारेमगरकेकेसवश्रावहहूहार
॥२४मरहटा॥दिनदुष्टनिकंदनश्री
रघुनंदनअंगनआएजांनि॥श्रो
रीनवनारीसुवनसिंगारीश्रारी।
लीनेपानि॥दांतोनकरतहेमन
हिहारतहेवारवारघनसार॥सजि
सजिविधमृकनिप्रतिकंडुकनि
डारतहेग्रेतअपार॥२५॥दोहा॥सं
ध्याकरिरविपाइपरिवाहिरआए

रांम॥ गनकचिकित्सनिश्चासिषा
वंधुनिकेरमनाम॥२६॥ मरहठा सु
निसत्रुमित्रकीनपचरित्रकीरेय
तरावतवात॥ सुनिज्ञाचकजनके
पसुपंछिनकेयुनगनतरुश्रवदात
सुभतनमंजनकरिश्रस्नानदांन
विधिपूजेपरनदेव॥ मिलिमित्र
सुमोदरवंधुसहोदरकीनेभोज
नभेव॥२७॥ दरवा॥ निपूरनवीन
रागहीनहूछोरलीनपीनपान
तनेमनतनयहरतेहे॥ तामेमरी
पीछिलागेनूपकेषु निडीढडी
ढिस्वनेश्रंगमडी श्रानदभरतेहे॥
कासकीदोहिनोसामपाटकी
ललितलोंईघंटनिसोपजि
पूजिपाइनपरतिहे॥ सोभनस
नोढियनरांमदेवदिनप्रतिगोस

तसहसदैदैभोजनकरतैहैं॥२५॥तो
टक॥नवभोजनश्रीरघुनाथकरैं
षटरीतिमिठाइनचित्तहरें॥पुनि
षीरसुचोविधिभातुवस्यो॥तक्रती
निप्रकारनिसोभसनो॥२६॥षट
भांतिपिहतिवनाइरची॥पुनिपां
चसुविंजनिरीतिरची॥विधिपा
चसुएटिनिमागतहे॥विधिपां
चवराअनुएगतहे॥२७॥विधि
पांचअथांनेवनाइकिये॥पुनि
छीरसुहेविधिमागिलिये॥वि
धिदोइपक्ष्यावरीसातपने॥पु
निआसहेविधिस्वादघने॥२८॥
॥दोहा॥पांचभांतिज्यौनारसे
षटरसरुचिप्रकास॥भोजनके
रघुनाथजूवालकेसवदास॥२९॥
हरलीला॥वैठेविसुध्यग्रहअ

गजअगजाइ॥ देषीवसंतनितिसुं
दरमोददाइ॥ मौरसालकुलकी
मकमलकाल॥ मानोअनंगधु
जराजतिश्रीविसाल॥२३॥ फूली
लवंगलवलीलतिकाविलोल॥
झूलेतहांभमरआनदकलोल॥
वोलेसुहंससुककोमलकिरा
ज॥ मानोवसंतभटवोलजुहका
ज॥ सोहेपरागचहुभागउडेसुग
ध॥ जातेविदेसविरहीजनहोत
अंध॥ पालसमालविनपत्रविरा
जमान॥ मानोवसंतदियकामहि
अग्निवांन॥२५॥ विज्जय॥ फूलेप
लासविलासथलीवहुकेसव
दासप्रकासनथोरे॥ सेषअसेष
मुषानलकीजनुज्वालविसाल
चलीदिविवौरे॥ किंसुकश्रीसुक

तुरनकीरुचिराजेरसातललमेचित
चौरे॥ चिंचुनिचापचहूंदिसिजे
लतचारुचकोरअगारनिभोरे
॥३६॥ मौंतीदाम॥ जेरविरहीज
नजोवतगात॥ धरैउरसीतलसो
जलजात॥ मनोमननमीननिकोर
तिनाथ॥ पसारिदयोजनुमनमथ
हाथ॥३७॥ जितेनरनागरलोगअ
पार॥ सबैबरनैरघुनाथनिहार॥
किधोपरमानंदकोयहफूल॥ बेलो
कतिहीसुहरैसबसूल॥३८॥ किधो
वनजीवनिकोमधुमास॥ रचौजग
लोचनभोरबिलास॥ किधोमधु
कोसुषदेतअनंग॥ धरेमनमी
ननकाजअंग॥३९॥ किधोरति
कीरतिवेलिनिकुंज॥ सबैगनपं
छिनकेजहपुंज॥ किधोउदया

चलकेसिंहसु॥ किधोमसीरह ऊपरअंस्रु॥५०॥ दोहा॥ प्राचीदिस तेहीसमेप्रगटभयोनिसिनाथ व रनततातहिविलोककेसीतासीता नाथ॥५१॥ हरनी॥ मूंषिसचीज नुडादेइी॥ फूलनिकोसुभगेट नइी॥ दर्पनसोससिश्रीककेको॥ किधोश्रासनकामममहीपतिको॥ ५२॥ मोतिनिकोश्रुतिभूषनभ नो॥ भूलगइीरविकीत्रियमनो॥ अंगदकोपितुसोसुनिये॥ सोह ततारहिसगहिलिये॥५३॥ नृप मनोभवछत्रधरो॥ लोकवियो गिनिकोविडरोदेवनिदीजलाए मकह्यो॥ मानहुफूलसएजाल्यो फेनुकिधोनमसिंधलसे॥ देवा

नदीजलतुहंसवसे॥८४॥दोहा॥॥
चातुचंद्रकासिंधमेसीतलस्वस
सतेज॥मनौसेषमयसोभिजेहरि
नाघिष्टितसेज॥८५॥श्रीराम॥दउ
क॥केसोटासहेतुदासकमलाक
रसौंकोसोषकप्रदोषतापतमोग
नतारिये॥अमतअसेषकेविसेष
भाववरषतकोकनदमोदचंदरषं
डनविचारिये॥परमपाषपदवि
मुषपत्रषत्रषसंमुषसुषदविव
धनिउरधारिये॥हरिहरिहियमें
नहरिनहरिनैननचंद्रमानचं
दमुषीनारदनिहारिये॥८६॥हन
मान॥अंकनसंसकतपयोधि
रकीपंकनसुअंजननरंजितर
जनिनिजनारीको॥नाहिनैअ

लवकज्मलकातितमपुंजनिकीछि
तिछांहछइीछलुनांहीमुषकारी
कौ॥ केसवकृपानिधांनदेषिये़वि
राजमांनमानिये़प्रमानएमवेन
बनचारीकौ॥ लागतहैजाइकेउ
नागदिगपालनिकेमेरजानसो
हीकतिकीरातितिहारीकौ॥ ४७

॥दोहा॥ आईजानिवसतरितु
बननिविलोकेरामुधरनिधसो
सीतसहितरतिसमतजनकाम
॥४८॥ इतिश्रीमत्सकललोकलो
चनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्र
कायांवसंतालोकवर्ननं॥ नाम
त्रिविसतप्रकास॥ ३०॥ दोहा॥
इकतीसऐंप्रकासमेउपबनकौ
अनुराग॥ सीताकोवरनतकरैस

षसौंसुषकैभाग॥१॥ त्रोम्हरूपक॥
भोरहोनहींगयौंसुराजलोकमध्य
वाग॥वाजराजञ्चानिभ्रोसुरंगित
रूपसानुराग॥सुभसंभचारिहोतिश्रं
सुरैनिकेउदार॥सीषिसीषलेति
होतिचित्रचंचलाप्रकार॥२॥तोमर
॥चढिवाजऊपरराम॥वनकोंचलेत
जिधाम॥चढिचित्रऊपरकामज
नमित्रकोंसुनिराम॥३॥मगमेंवि
लंवुनाकीन॥वनराजमध्यप्रवीन
सवरूपभूपदुराइ॥जुवतीविलो
कितजाइ॥४॥स्वागत॥रामसाथ
सुकएकप्रवीनो॥सीपदेषिगनव
नैनलीनो॥केसपासञ्चतिस्यांम
सनेही॥दासहोतिप्रभजीवविदे
ही॥५॥भांतिभांतिकवरीसुभदेषी॥ १७०

नृपभूपतरवाविसेषी॥प्रियाप्रेमअ
मराषनहारी॥दीहदुषःषलषेउन
हारी॥६॥चौपही॥किधोसिंगारि
सतिसुषकारी॥वंचकतानिवहाउ
नहारी॥कंचनपत्रपानिसोपांन
मनहुसिगारलोककेजांन॥भसी
सफूलसिरवेदालसे॥मांगसुहा
गमनोसिरवसे॥पाटिनिचमक
चित्रचोधिनी॥मानोदमकतिहै
दामिनी॥सेदुरमागभरीअत
भली॥मोतिनिंकीतिनपेअवु
ली॥गंगगिरातनसोतनजोर॥नि
कसीजनुजमनाजलफोर॥सी
सफूलसिरजसोजराइ॥मांगफू
लसोहेतिहिठाइ॥वैनीफूलनि
कीवनिमाल॥भालभलोवेरा
जुतलाल॥१०॥नमनगरीपरेने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जनिधांनमानौचवठेवारह्नभांनम
कुटिकुटिलवङ्कभाइनिभरी॥ला
लल्लालदुतद्वीसनिषरी॥२१॥म
गमदतिलकुरेषजुगवनी॥तिन
कीसोभासोभनिषनी॥जनुजम
नाषेलतिसुभगाथ॥पासपितह
पसारेहाथ॥२२॥पंकजवाटिका॥
लोचनमनहुमनोभवजंत्रनि॥भं
जुमऊपरहैंहरमंत्रनि॥सुंदरसुष
दसुअंजनिअंजित॥वांनमदन
विषसोजनुरंजिति॥२३॥चौप
ही॥सुषदनासिकाजगुमाहिं॥या
मुकुताफलनिजुक्रसोहिंपों॥आ
नदलनिकामनहुसफूल॥सुहि
जातससिमनहुसफूल॥२४॥पं
कजवाटिका॥जनुभालतिलकु
रविव्रनहिलीन॥नपभूपञ्चका

सहदीपदीन॥ताटंकजटितमनि
श्रुतिवसंति॥रविचक्रएकाएथसे
लसंत॥२५॥अतिअुलमलीनसह
अलकलीन॥फहराति पताकाज
नुनचीन॥अतिअतनदसनद्युति
योलसंति॥जनुदाडिमबीजनिको
हसंति॥२६॥संध्याहितउपासतभू
मिदेव॥केवांमदेवकीकरतसेव सु
भतिनिकेसुषमुषकेसुवासु भष
उपवनमलयाचलनिवासु॥२७॥
चौपही॥मदमुसक्यानिलताम
नुहरे॥बोलतबोलफूलसेझरे॥
तिनकीबांनीसुनमनहारे॥बांनी
वीनाधरेउताए॥२८॥लटकेअधि
कअलकचीकनी॥सूक्षमअमम
लचिलकसौंसनी॥नकमोती
दीपकदुतिज्ञांनि॥पाटीजनिहि

ऐहितदानि ॥१९॥ जोतवढावनिद
सउसारि ॥ मानहुस्यामलसीक
पसारि ॥ जनुहितहीरविरचेतछा
र ॥ स्यामपाटकीडारिडोरि ॥२०॥
नृपअनूपउचिरसभीन ॥ पातुर
नैननिकीपतरीनि ॥ नेहनचावतु
हितरतिनाथ ॥ मरकतलकुटलि
येजनहाथ ॥२१॥ दोहा ॥ गगनचं
दतेअतिवढैतिसमुषचंदविचार
दशीविरंचविचारतिहिकलाचो
गनीचार ॥२२॥ दंडक ॥ दीनोडी
सदंडवलुदलकलुवधिवलुनप
वलुप्रवलप्रवलसमीपकुलव
लकीकेसवपरमहंसुवलुवाहु
कोसवलुकहाकहेवडीपवुडा
रीदुर्गजलकी ॥ विधिवलुचंउव
लुश्रीकोवलुश्रीसवलुश्रीसकर

हैमित्रवलुरक्ष्यापलुपलकी॥ मंत्र
वलुहींनजांनुश्रवलामुषनिश्रा
निनीकिहीछिडाइलईकमला
कमलकी॥२३॥ दोहा॥ रमनीमुषु
षंदल्लनिरषिएकामनुलज्जाइ॥
जलदजलधसिवसरमेएषतुव
दनदुएइ॥२४॥ हाकलिका॥ भूष
नग्रीवनिकेसवभांतिनिसोहति
हे॥ लालसितासितपीतप्रभाम
नमोहततहे॥ सुंदरएगनिकेजनु
वालकुश्रानिवसे॥ सीषनकोंव
हुभागनिकेसवदासलसे॥२५॥ चौ

॥ चौपही॥ हरिसीसुपरदषिना
मुक्ताभानप्रभाभृषिता॥ कोम
लमदनिवंतसुहला॥ श्रलंकार
मयमोहनमिला॥२६॥ काश्रपध्य

तिसोभागहै॥ तासौबाहुपासकवि
कहै॥ नवरंगवडूअसोककेपत्र॥ ति
नमैंरापतरामचरित्र॥ २७ देषहु
देवदीनकेनाथ॥ हरतिकुसुमके
हारतिहाथ॥ सुंदरअगनिनिम
दीवनी॥ मनमथपहुवानिसी
मतिधनी॥ २८ राजलोकुमंनरु
चिरये॥ मानौकामिनिकानिकुर
केलये॥ अतिसुंदरउरमैउरजा
त॥ सोभावरनैजनुजलजात॥ २९
अषिलनृपमयजलकरिधौ॥ व
सीकरनचूरनचयपरे॥ कामकु
अरअभिषेकनिमित्र॥ कलसर
चेजनुजोवनुमित्र॥ ३० दोहा
रामसजलश्रृंगारकीललितता
सीराज॥ जिनहिफलेकुचनृप

फललेजगजोतिसमाज॥३१॥चौ०॥
श्रुतिसकुमरोमावलिवेषि॥उपमा
दीनीसुकसविसेष॥उरमैमनोम
दनकीरेष॥नाकीदीपतिदिपति
विसेष॥३२॥दोहा॥कटिकेतल
नजानियेसुनिप्रमत्रभुवनराइ॥
जैसेसुनियतुजगतकेसतश्रह
श्रसतसुभाइ॥३३॥नराज॥नितं
बबिंबफूलसेकटिप्रदेसछीनहै॥
विभूतभटिसीसवेसुलोकला
जलीनहै॥श्रमोलऊजरेउदाज
प्रजुग्मजानिये॥मनोजकेप्र।
मोदहोंविनोदजंत्रमानिये॥३४॥
छवानकीछुहीनजाइसुध्यसा
धुमाधुरी॥विलोकिभूलिज्ञान
चितचित्तचालश्रातुरी॥विसु

रा॰
१७४

पादपद्मचतुअंगुलीनषावली
अलक्तजुतमित्रकीसुचितवेठ
केवली॥३५॥दोहा॥कठिनभूमि
अतिकोवरीजावकजुतसुभाइ॥
जनुमानिकतनुवानिकीपहिरि
तरीवनाइ॥३६॥चौपही॥वरनव
रनअगियाउरधरे॥मदनमनोह
रकेमनहरे॥अंचलअतिचंच
लतुचिरचेलाचनचलजिनि
केसगनचे॥३७॥दोहा॥नष
सिषभूषितभूषननिपठिसुव
नेकमंत्र॥जोवनश्रीचलजा
निकेवांधेरक्षाजंत्र॥३८॥संपू
र्णमूर्त्ति॥मोहनसक्तिनअसी
मकाध्वजकीजेसी॥मंत्रवसी
करसाजेमोहनमूरतिराजे ३९

मा

॥रूपमाला॥ भालमैभव॥ ॥षिघो
समिकीकलाजनुएक॥ सोषुति
हिउपजावहीमदहांसचंद्रस्त्र
नेक॥ मारएकविलोककेहाजा
रिकिकियाछार॥ नैनकोएचितेकु
रैकोपतिचित्रमाअत्रपार॥४५॥
॥चौपही॥ कंटकत्रटकतफटि
फटित॥ उठिउठिजातवसनजात
उनिकेतनतवनहिलषपरे॥ मन
गनत्रंत्रुत्रंत्रुमनधरे॥४२॥ दो
हा॥ उपमागनउपजाइहैविग
राएसंसार॥ तिनकीउपमापरसपा
रचिराषीकरतार॥४२॥ इतिश्री
मत्सकललोकलोचनचकोरचिं
तामनिश्रीरामचंद्रचंद्रकाया
जुवतीजनवर्ननंनामइकतीस
माप्रकास॥३१॥ दोहा॥ वतीसे

मैवागविधिवहुफूलैफलवेलि॥प
वैतनैसलिताप्रगटअरुकहिजे
जलकेलि॥१॥सुंदरी॥जांनुकीके
जियकेसुषदाइकु॥अचांनकजोर
पोरघुनाइकु॥अैसेचलेसवकेव
लोचन पंकजवातवहेमनरो
चन॥२॥रांमसोरांमप्रियाकहेहोस
हसि॥वागदिषावहुलोकनुकेस
सि॥रांमविलोकतवागअनेतहि
जैसीअवलोकतिकांमवसंतहि
॥३॥लोचतमोरनहांसुषसंजुत
जैसोविरदावलिभाटनिकेसुत
कोमलकोकिलकेकुलवोलत
पानकपाटकुचीजनुषोलत॥४॥
फूलतजैवहुवृक्षनिकेगन॥छं
उतआनंदआसुनिकोजन दा
डिमकीकलिकामनमोहत॥हे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मकुपीजनुनंदनसौं ॥५॥ दोहा ॥ म
धुवनफूलेदेषिसववनेनतेहेनिर
षक ॥ सोहतुहाटकुषटितताितुज्र
वतिनकेताटंक ॥६॥ दोधक ॥ वे
लकेफूलसेअतिफूले ॥ भोरभमे
तिनिकेरसभूले ॥ पीकरवीकेली
वनराजे ॥ मनमथवाननिकीग
तिसाजे ॥७॥ केतुकीपुंजप्रफुलि
तसोहे ॥ भोरतेउतिन ■तेमन
मोहे ॥ श्रीरघुनंदनआवनभाग
जेअपलोकहितेअनुराग ॥८॥
दोहा ॥ स्यामश्यानंदुतिपलककी
फूलेवहुतपलास ॥ जगेकामकेश्रा
लामनोमधुरितुवातविलास
॥९॥ तोटक ॥ वहुचंपककीकलि
काहुलसीतिनमेंअतिस्याम
लताभलसी ॥ उपमासुकसा

कचिन्नधरी॥जनुहेमकुपीसवसो
धभरी॥१०॥चौपही॥अलिउउधर
तमंजरीजाल॥देषेलाजसजेसम
ववाल॥अलिआलिनीकेदषत
भाइ॥चुंवतचतुरमालतीजाइ॥११॥
अद्भुतिगतिसुंदरीलोक॥विद्रम
तिषुघटपटमुषरोक॥गिरतस
दाफूलअरीफलवाज॥जनुधस
देतिदेषिवछोजा॥१२॥तारक॥उ
दरउरदाडिमदीहविचारा॥सुंद
रीनिकेदंतनिहारा॥अतिमंजु
लवंजुलकुंजविराजे॥वहुरंग
धनकेतनपुंजनसाजे॥१३॥नर
अंधभएररसैतनुमारा॥जिनि
केजनुलोचनहेकेइठोरा॥थ
लसीतलतप्रसुभावनसाजे॥स
तिसुरजकेजनलोकविराजे॥

वि

॥१४॥ जलजंत्र विराजत भाति भली है॥ धरते जल धार अकास चली है॥ जमुना जल सूक्षम वेष सुधारे॥ जन चाहति हेर विलोक विहारे॥ १५॥ चच्चरी॥ भांति भांति के होंक हां लग वाटिका वहु धां भली॥ ब्रह्म घोष वसे तहां जनु है गिरा वन की थली॥ नील कंठन चेवने जनु जानि जे गिरिजा वनी॥ सोभजे चहु घां सुगंध मनो मलैवन की घनी॥ १६॥ चौपही॥ करुनामय वहु काल निफली॥ जनु कमला की वास स्थली॥ सोभति रंभा सो भासनी॥ मनो सची की आनंद वनी॥ १७॥ कमला॥ तनु चंदन के उज्जल तन धरे॥ लपटी लवंग लतामनु हरे॥ नृप देषि दिगंवरा वे

दनकौ ॥ सिचंद्रकलाधरनूपनिध
रै ॥ २८ ॥ अतिउज्जलतासवकाल
हिवसे ॥ सुषहींपिककेमुषहींवि
लसे ॥ रजनीदिनआनंदनिहै
मुषचंदनकोजनुचंदिनिहै ॥ २९ ॥
सवजीवनकोवृहुषजहां ॥ विर
हीजननहीकहुदुष्यतहां ॥ अग
मुपानहिकोसुनिये ॥ अतिहा
निसुसोकहिकौनिये ॥ ३० ॥
दोहा ॥ तापहिकोताउनजहांत्रि
षचातककोचित्त ॥ पातफूलद
लनकोभसुभोरनकोनित्त ॥ ३१ ॥
॥ तारक ॥ तिनिमेंइककुंजसुकुप
वीतुसोहै ॥ म्रगपक्षिनकोजहपु
जविमोहै ॥ वहुभांतिसुगंधमले
गिरमानो ॥ कलधौतसुरूपसुम
उवषानो ॥ ३२ ॥ अतिसीतलसं

करकोगिरजैसो॥सुभसेतलसे
उदयाचलतैसो॥दुतिसागरमम
यनाकुमनोहै॥श्रजलाकम
नोदुतिहंसषनोहै॥२३॥तोटक
सितातिहितेसुभतीनिचली॥
सिगरीसलितानिकीसोभदली॥
इकचंदनकेजलउज्जलहै॥जनु
जैन्हसुतासुभसीलगहै॥२४॥
॥चौपही॥सुरजकोमारगुष्ठ
वछापो॥जनद्विवितभूतलर
विश्वासो॥जनुधरनीमेलसति
विसाल॥तुटितजुहीकीजनुव
नमाल॥२५॥दोहा॥तज्योनभा
वैएकुपलुकेसवसुषदसमीप॥
जातसोहतुतिलकसोदीनो
जंवूदीप॥२६॥दोधक॥एननि
केमदकेजलदुजी॥हैजमनाज

लकेपयपूजी॥धारमनौरसराज
विलासनपंकजजालमईवनमा
लनि॥ ७॥दोहा॥ दुषषंउनत
रवारसीकिधौश्रषलाचारुंकी
जगिमोतंगकोग्रहकहेसंसार
॥ ८॥कीउंगिरतेत्र्प्रालिनिकीत्र्प्र
वलीचलीप्रकास॥किधौप्रतापी
नंकीपदवीकेसवदास॥ ९॥चौ
पही॥ औरनदीजलकंकुमसो
हे॥सुभगणमनमानहुमोहे॥कं
चनकेउपवीतहिसाजे॥भाते
सोपहषंउविराजे॥ ३०॥फूलप
एगनिकोमनुमोहे॥पावनफू
लडहंदिसिसोहे॥लोगफूल
मयसेवदलेषी॥एलवीजवक्
कालुकदेषी॥कोरिफूलदल
नावनिमाही॥श्रीसुगंधतह

लन

हेवइधाही॥३०॥दोहा॥षेवत
मंत्रमलाहश्रलिकावनैपह
जोति॥तीनोसरितामिलत
जहतहांत्रवेनीहोति॥३१॥सो
ताश्रीरघुनाथजूदेषीश्रमति
सरीर॥दुमअवलोकतिछां
हकैगयजलाश्रवतीर॥३३॥
चौपही॥आएकमलवासु
षदेन॥सुषवासुनिश्रागेहेन
न॥देषोजाइजलाश्रयचारु
सीतलसुषदसुगंधश्रपारु॥३
४॥चतुपदी॥चतुश्रीकोदर्प
नचंद्रातपुजनकिधोसरदश्रा
वास॥मुनिगनमनसाविरहीज
नसोविसवलथानिविलास॥
प्रतिबिंबितथिरचरजीवमनो
हाजनहरिउदरश्रनंत॥वंधन

रा॰
१७६

जुतसोहैत्रभुवनमोहैमानोव
लिज्जसवंत॥३५॥चोपही॥विष
मयपैसवसुषकोधामु॥संवरन
पवठावैकाम॥कमलनिमध्य
मधुपसुषदेत॥संतहिसोजनुह
रिहिसमेत॥३६॥वीचवीचफूले
जलजात॥तिनितेअलिकुलउडउ
डजात॥संतहियनतेमानहुभा
जचंचलीपापकीराज॥३७॥दं
डक॥एकदमयंतीऐसीहेरहै
सिहंसवंसएकहंसिनीसीवि
सहारहियेराहिये॥भूषनगिर
तएकलैतिबुडबूडवीचमीनग
तिलीनहीनउपमानटाहिमी
ऐकपतिकेंढलागिलागिवूडि
बूडिजातिजलदेवतासीदिवि
देवताविमोहिये॥केसोदास

७८

आसपासभ्रमभ्रमतजलकेलि
मैजलजमुषीजलज्वैसीजा
हिं॥३८॥दोहा॥क्रीडासरवोमे
नपतकांविहूधांजलकेलि॥नि
कसतस्नसमेतज्योसूजाकरन
समालि॥४९॥हाकलिका॥नीर
नितेनिकसीत्रियसवे॥साहतिहे
विनभूषननतवे॥चंदनचित्रकपोल
निनहीं॥पंकजकेकरसाहततहीं
॥४०॥मोतिनिकीविथुरीसुभछूटे
हेउरझीउरजातनिलटे॥हांसिवि
गारलताजनुवनी॥भेटतिकेल
पलताजनुअनी॥४१॥केसनिवो
रनिसीकरऐसेंस्निनकीतमपीज
नुवैसें॥सज्जलच्चंवरछोउतवैने
छूतहेजलकेकनघने॥४२॥भोग
भलेजिनसोमिलकर॥छूटतजा

रा·
१८०

नतिरोवतिषरे॥भूषनजेजलमध्य
हाहे॥तेवनयालवेधूरिनिलहे
॥४३॥भूषनवसनजहींसजिलए।
चाहूंहाढुंदिभीदए॥४४॥दोहा॥
गुंगकुंजवावरेविहिरेवावनबडं॥
जानिलियेजनआइसोषोरबं
उप्रसिद्ध॥४५॥चौपही॥सुषदसु
षासनगनपालिकी॥फिरकबाहि
नीसुषचालिकी॥एकनिजाते
हयसोहिये॥बृषभकुंगअंगमा
हिये॥४६॥तिनचढराजलोकुस
वुचलो॥नगरनिकासोभाफल
फल्यो॥मनिमयकनकजालका
षनी॥मोतिनकीझालरिअति
वनी॥४७॥घंटावजतचहूंदिस
भले॥रामचंद्रतिहिगजचढिच
ले॥चपलाचमकचाउअतिय

१८

३॥मनोमेषमघवाश्रानूठ॥४९॥चाम्रा
सपासनरदेवअपार॥पायपयादे
राजकुमार॥इहिविधिगएराजद
रवार॥वंदीजनजसुपठतअपार
॥४९॥विजय॥भूषितदेहविभूति
दिगवरनाहिनेअमरअंगनवीने॥
हरकेसुंदरसुंदरीकेसवदोरदीन
मेमदिरकीने॥दरषिजमंडितदंड
निसेभुजदंडवोअसिदंडविही
ने॥राजनिश्रीरघुवीरकेवरकुंमे
रल्लछंडिकमंउलल्लीने॥५०॥दो
हा॥कमलकुल्लनिमेजातुज्योंभ
मरभ्भ्योरसचित्र॥राजलोकमेंत्यो
गएरामचंद्रजगमित्र॥५१॥इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचको
रचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रिकायां
उपवनविदेवर्णनं॥नामबतीम
नो

मोप्रकास॥३२॥दोहा॥तेतीसये
प्रकासमैचतुराननसिषपाइ॥ही
नाहैसुतजननिमिहवाल्मीककै
जाइ॥१॥त्रिभंगी॥दुर्जनदलनेइक
त्रिभुवननाइकहैजगनाइकरघु
नाइक॥सोभैसिंघासनप्रभाप्रका
सनदूषनासिक॥सुग्रीवविभी
षनसकलबंधजनसहिततपो
धनभूपतिकेगन॥आएसवमु
निजनसकलदेवगनिषगनि
षंगमृगकाननचतुरानन॥२॥तो
टक॥अतिआदरसोंअकुलाइ
नए॥अतिपूजनकेवहुधांविनए
सुषदाइकआसनसोभयये॥स
विकोज्जनथ्याविधिआनदये॥३
॥दोहा॥सवनपरस्परवूझियेकु
सलप्रसंनवनाइ॥चतुराननं।

कर्म
विना
सन

घा

२

वोलेवंचनअधाविनयवनाइ॥
४॥मानोरमा॥मुनिजेचितुदेज
गकेप्रतपालक॥सवकेगुरहो
हजिहूपिवालक॥सवकोस
वुकालसदासुषदाइक॥गुनगा
ववेदमनोवचकाइक॥प्रतुम
लोकचेतुचिमैवहुधावत॥मु
निजेप्रभुऊजाहेसवहीअवजे
नभूमिहूकोउनजाइनिरमेग॥मि
टिगेसवपापहीपुंनमनिकेमग॥
६॥दोहा॥वालपुरीधनपतिपुरी
सुरपतिसुषसाज॥मसलोक
वैकुंठपतिवसोअवधिमेराज
७॥तोमर॥हमिसिषाकहोघुना
थ॥समजीसवैविधिगाथ॥मम
एकइक्षसुजान॥कवहूंनहोइ
सुआन॥तुमपुत्रहोसनका

त

दि॥ मोभगतज्यानेोन्त्र्यादि॥ सुतमां
निसिकतिनकेति॥ भुवदेवभुवप्र
गटेति॥ ९॥ हमदिरोतिनहिसभा
उ॥ कछुत्र्योदेनेगाउ॥ त्र्यवदेहिह
मकिहिठोर॥ तुमकहोसुरसिमो
र॥ १०॥ ब्रम्हांचतुपदी॥ सवैवमुनि
न्रेतपवलपूरविदितिसनालसु
जाति॥ वहुधोवहुवारनप्रतित्र्य
वतारनिदेत्र्यायनहभांत॥ सुनि
प्रभुत्र्याषंडलमथुरामंडिलमेदी
जेसुभग्रांम॥ वांढवडुकीरतिल
वनासुरहतित्र्यतित्र्यजेपसंग्रां
म॥ ११॥ दोहा॥ जिनिकेपूजनुम
भपरत्र्यंतरजामीश्रीपतिनकी
वानकहाहमेवूञ्चतत्रभुवनदी
प॥ १२॥ दुजत्र्यासोतेहीसमेम्रत
कपत्रकेसाथ्य॥ करतविलापक

लापहां राम चंद्र रघुनाथ ॥ १३ ॥
गलिका ॥ वालकै गतासुदेषिध
र्मराजसों विसेषि ॥ वातयोकही
निहार ॥ दोसुकौनकोविचार ॥ १
४ ॥ धर्मराजमनोरमा ॥ निजुमदं
निकीतपसा निसुधालक ॥ वहं
धाभुवदेवनिकेसववालक ॥ की
वेगिविदा सिगोरघुनाइक ॥ च
ढिपुष्पकभ्रासुचलेरघुनाइक ॥
१५ ॥ दोधक ॥ रामचलेमुनिसू
द्रकीगीता ॥ पंकजजोनिगयेज
हसीता ॥ देषिलगीपगरामकीरा
नी ॥ पूजकैवुअतिकोमलवानी ॥
१६ ॥ श्रीसीता ॥ कौनहूंपूरवपुन्य
हमारे ॥ आजुफलेजुहांपगधारे ॥
१७ ॥ ब्रंम्हा ॥ देवनिकोसवकाज
कीनो ॥ रावनमारिवडौजसलीनो

नो॥ १७॥ मैविनतीवहुवालेकी
नी॥ लोकनिकीकरुनारसभी
नी॥ उनतेमोहिदियासुनिसी
ना॥ जाकीनजांनपैजेगगीता॥
१८॥ मागतुहोकछुमोकहदी
जै॥ चित्तमेंप्रोरविचारुनाकी
जे॥ आजुतौचालिचल्योतुम
ऐसे॥ एमचलेवैकुंठहिजेसे॥
१९॥ सिषजहीकछुनैनवाए॥ ब्र
ह्मनहीनिजुलोकसिधाए॥ ए
मनहीसिनुसदूकोषंजपो॥ ब्रा
ह्मनकोसुनुजीवनमंत्रो॥ २०॥
सुंदरी॥ एकसमैरघुनाथमहांम
ति॥ सीनहिदोषितगर्भवतीरति॥
सुरमांगुजुजीमहभावत॥ मोमनु
तादासैसुषुपावत॥ २१॥ सीत
जौतुमहोहुप्रसंनमहांमति॥ मे

रीचैठेतुमहीसोसदारति॥ अंतर
कीसबबातनितोजानतहोस
बकीसबतेपर॥२२॥ श्रीराम॥ दो
हा॥ निर्गुनतेसर्गुनभयोसुनिसं
दातुबहेत॥ श्रीकेछुमागोसुमु
षितुचेतिहारहेत॥२३॥ श्रीसी
ताजू॥ जोसबतेहितुमापरकीज
तु॥ ईसमयाकोकिवचुदीजनुहै
जितनेरिषिदेवनदीतट॥ होति
नकोपहिराइफिरोपट॥२४॥ श्री
राम॥ दोहा॥ प्रथमदोहदेक्योक
रोनिकुलसुनियहबात॥ पटप
हिराबनिरिषिनिकोजेजोसुंद
रिप्रात॥२५॥ दोहा॥ भोजनुको
नवश्रीरघुनंदन॥ पोढरहेतबदु
ष्टनिकंदन॥ बाजेबजेअधिरात
भईजब॥ दूतननआनिपनामकि

रा० १८४

प्रेतव॥२६॥चूत्रतदूतनकोरघुनं
दन॥सोकपवादुकहोजगवंदन॥
कोमैरोजसव्यपजसकहरीको
नीदेकोपापनिभनरी॥२७॥दू
त॥दोहा॥तिपाजककीएकसु
निनृठगरीप्योसारपितासमुअ
कैतवकहोलैपहुचैतिहवार॥
२४॥याकेन्यातेचूकजोसोवगसो
तुममोह॥पाछेभावैसोकरोपह
हैत्रियासुतोह॥२६॥तवहीजे
कंन्याकहीतेजानोराम॥रावनके
घरातियाहीवहुर्ल्यायेराम॥३०॥
॥चंचला॥दूतभूतभावनाकही
कुनजाइवेन॥कोटिधांविचारि
योपरैविचारितेकछून॥सरवेउ
दोतहोतवंधन्याइयोसुजान॥
रामचंद्रदेषियोविभातचंदकेस

मान॥३१॥वसंततिलक॥वहुभां
तवदनताकरी॥हसवोलियोनक्र
पाकरी॥हमसेवकछुदुजदोषहै
तोतेकिपोप्रभरोषुहै॥३२॥अथ
दोहा॥मनसांवाचाकर्मनाहम
सेवकसुनतात॥कोनुदोषनहि
वालिजनुज्योंकहिआएवात॥३
३॥श्रीराम॥कहिजेकहानकही
परे॥कहिजेतज्योवहुत्वेडरे त
वदतवातसेवकही॥वहुभांति
देहिसदादही॥३४॥दोहा॥सदा
सुहृज्योजांनुकीनिदतज्योषल
जाल॥जैसेस्तुतिहितुभावहीपा
षंडीसवकाल॥३५॥भवअपवा
दनतेतज्योजोचाहतसीताहि॥
जैसेजगसंजोगतेजोगीजनम
नताहि॥३६॥अथअनूपमाला॥ॐ

मनिमानिकैतुमसुहसीतहआं
नियौनिजधाम॥अवलोकपाव
कपावकपंकजौरविअंकपंकज
दाम॥किहिभंतितनाहिनिकासहौ
अपवादवादिवषांन॥सिवसंभु
धर्मसमेतन्नौपतिमाषिवोली
आंन॥३७॥जमनादकेअपवाद
तैदुजछोरिलोकपिलाहि॥वि
रहीनकोदुषदेतजोहरछां ति
चंद्रकलाहि॥पहहे असत्य
जुहाहिगोअपवादसत्यसना
य॥प्रभछोडसुध्यसुधाहिपी
वतुआपनेविषहाय॥३८॥दो
हा॥प्रियपावनप्रियवादिनी
पतिव्रताअतिसुद्धजगकैगु
रुअरु विनीछोडतलोकवि
रुद्ध॥३९॥वेमातावेसेपितान

मसभेसापाइ॥भएयभयेअपलोक
केभाजनभूतलआइ॥ ८० ॥ओर
महरिलीला॥ सांचीकेहीभरथवा
तसबसुजांन॥सीतासदासुध
कृपानिधांन॥मेरीकछुरिसासु
पावेहारि॥मोकोहतोजोवानक
होफरि॥ ८१ ॥ लछिमन ॥ दोषत
जैनसदासुभगंगा॥छांउहुगेवहु
त्बंगतरंगा॥मायहिनिंदतहेसब
जोगी॥क्योंतजिहेभवभूपति
भोगी॥ग्यासहिनिंदतहेमठधा
री॥भावनहेहहिभक्तिनिहारी॥निं
दतहेतुवनामहिवामी॥केकहि
जैतुमअंतरजामी॥ ८२ ॥ दोहा ॥
तुलसीकोमाननप्रियागोतमकी
त्रियअग्प॥सीताकोछांउनकह
तकेसेहोसरवाप॥ ८३ ॥ सुकघ

नरूपमाल॥ स्वप्नहींनहिछोडिये त्रियप्रगुविनीपल॥ छोडजोतनवसु हसीतहिगर्भमोचनहोइ॥ पुत्र होइकैपुत्रिकायहवातजानिन जाइ॥ लोकुलोकनिमेअलोकु विलोकुवोएघुराइ॥ ८४॥ दोहा॥ रामचंद्रजगचंद्रतुमफलदलमू लसमेत॥ सीतापावनपावनी माइनहींदुषदेत॥ ८५॥ घरघर प्रतिहजगुसुषीरामतिहारेराज॥ अपनेहींघरकेरतकतसोकअ सोकसमाज॥ ८६॥ श्रीरामदोध क॥ तुमवालकहौवडुधामवमै प्रतिउत्तरदेहुनफेरिहमै॥ जुकहै हमवातसुजाइकैरो॥ मनमेंमनवि चारतऔरधरौ॥ ८७॥ दोहा॥ औ रहोइतौजांनिजेप्रभसोकहाव

साइ॥ यंह विचा कै सत्रुघ्न नयेग
ये स्त्र कुलाइ॥४९॥ श्रीराम सीतहि
लै स्रव सत्व जैजे॥ राषि महाव
नमें फिरि सैजे॥ लक्ष्मिमन जो फि
रउत्तर देहो॥ सासन भंग के पाप न
पैहो॥४९॥ लछमन लै वन सीय
सिधाए॥ थाव जंगम हीड षपा
ए॥ गंगहि देष केहो तव सीता॥ श्री
रघुनंदन की जनुगीता॥५०॥ पार
भए जवही जन दोउ॥ भीम वनी
जन जंतन कोउ॥ निर्जन निर्म
ल कांनन देष्यो॥ भूत पिसाचनि
कौ घर लेष्यो॥५१॥ नाग सरूपनी
सुनौ न पांन कांकिं॥ पंछ सुकी
न सा कां॥ न हो मधु मदे षिजे सु
गंधवं धलै षिजे॥५२॥ सुनौ न वे
द की गिरा॥ न बुध्धि हो न हे थिरा

रा०
१८७

रिषीनिकीकुटीकहां॥पतिव्रता
वसेजहां॥५४॥मिलैनकोउवेकह
नआउतेनजातहं॥उएनिहींम
हाहिसे॥चलेहमैकहांलिसे॥५५
॥दोहा॥सुनिसुनिलक्षमनभी
तआतिसीताजूकेवैन॥मुषउत्त
रआवैनहींजलभरआएनैन॥५
५॥नराज॥विलोकलक्ष्मनेभई
विदेहजाविदेहसी॥गिरीअचे
तह्वैमनोघनेघनीतडित्तसी
कोंजुह्लाहिएकहांथएकहांथ
वासनो॥सोचिपैसवेसरीनै
नहींप्रकासनो॥५६॥दोहा॥म
नकजानिलछिमनतहींमारन
लगेतिहिकाल॥भईअकास
वांनीतवेषजोइजिपेगीवाल
॥५७॥नृपमाल॥रामकीजपसिद्ध

१८७

सीतहिंक्यौचलेवनछाडि॥ छौं
हएकफनीकरीफनदीहमाल
निमांडि॥ वालमीकविलोकि
यौवनदेवताजनुजांनि॥ करु
णवछलताकिधौदिविलैगिरि
भुवल्यानि॥ प॰॥ सीचमंत्रसज्ञी
वननितवजीउहौतिहिकाल
पूछियोमुनकौनकीविछिराव
धूअवतुवाल॥ सीता॥ हौंसुता।
मिथलेसकीदसरथ्थ्यपुत्रकलि
त्रकौनदोषतजीनतकौनआ
पुनअत्र॥ प॰॥ मुनि॥ पुत्रिकेसु
निमोहिजांनौवालमीकडुजा
ति॥ सर्वदामिथलेसकैतहसर्व
दासुभभाति॥ होहिगेसुतद्वैसु
धीपगधारियेममवोक॥ राम
चंद्रछितीसकेसिरगाइयौति

रा॰
१८८

इलोक ॥ ८६ ॥ सर्वधांमुनिसुषम
सीतहिलैगएरिषिराइ ॥ आप
नीतपसानिकोसुभसिहुसोसु
षपाइ ॥ पुत्रहेभएएककुस
दूसरेलवजानि ॥ जातिकर्मन।
आदिदेसवकिएवेदवषानि ८७
॥ दोहा ॥ वेदपठाएप्रथमहीं ध
र्नुवेदसविसेषअस्त्रसस्त्रदी
नेसवैमंत्रअसेष ॥ ८८ ॥ इतिश्री
मत्सकललोकलोचनचकोर
चिंतामनिश्रीरांमचंद्रचंद्रि
कायां ॥ कुसलवउतिपत्तिव
र्ननंनामतेतीसमोप्रकास
३३ ॥ दोहा ॥ चौंतीसएंप्रकास
मेंस्वांनसभामेआइ ॥ सत्रघं
नज्रमारिहैलवनासुरकोजा
इ ॥ दोधक ॥ एकसमैमहरिषिम

दीने

१८८

सभामह॥सोभतहैनरदेवप्रभाम
हे॥संगसवैरिषिराजविराजे॥सोद
रमंत्रनिमित्रनिसाजे॥२॥कुकरए
कुफिरादहिआसोदुंदभीदोहडु
वारवजासो॥वाजतहीलछुमनउ
ठधाए॥स्वांनकोंकारनपूंछनआ
ए॥३॥स्वान॥काहूकेक्रोधविरो
धनदेषोमकोराजतपोमयलषो
तामहमेदुषदोषमासो॥रामहि
सोंसुनिवेदनआसो॥४॥लक्ष्म
नु॥धर्मसभामहरामहिजानो
स्वांनचलोनिजदुष्पवषांनो॥
स्वांन॥होंअवराजसभानहिआ
ऊ॥आवतकेसवसोभनपाऊ॥५॥
दोहा॥देवकुदेवनदेवषरपाव
नथलसुषदाइ॥अनवोलेआ
नंदमतिकुत्सितजीवनहिजाइ॥

ए

दोधक॥ राजसभा तब स्वांन बुलायो॥ राम बिलोकत ही सिर नायो॥ रांम कह्यो जु कछू दुष तेरे॥ स्वांन निसंक कह्यो प्रभु मेरे॥ ७॥ स्वांनतारक॥ तुम हो सब के प्रभु सदा सुषदा री॥ अरु हो सब को सम रूप सदा ही॥ जग सोवतु है जगती पति जागै॥ अपने अपने सब मारग लागै॥ ८॥ नर देव न पाप परे पर जाके॥ निसि बासर होत न रक्षक ताके॥ गुन दोषनि कौ निज हो हन दरसी॥ तब हीन प होतु निरै पद परसी॥ ९॥ दोहा॥ निज स्वारथ ही सिद्ध जन मो कौ कर्‍यौ प्रहार॥ बिन अपराध अगाध मति ताकौ कहा बिचार॥ १०॥ दोधक॥ तब ताकह लैन गए जन धाये त

वहींनगरिमहतेगहिल्याए॥श्री
राम॥यहकूकेतुक्योविनदोष
हिमारे॥अपनेजियत्रासकछु
नविचारे॥११॥दोहा॥यहसाव
तुमोपंथमहहोभोजनकोजातु
अपउरमेअकुलाइकेकीनोया
कोघातु॥१२॥श्रीरामसभापति
स्वागता॥तुमबंम्हब्रह्मरिषिराज
बषानो॥धर्मकर्मवहधामवृजा
नो॥कौनदंडदुजकोंदुजदीजे॥
चितविचारिकिहोसोईकीजे॥१३
॥स्वान॥शीससीषयहपाकहदी
जे॥चूकहीनश्रीकोऊनकीज
है।अंदउभुवदेवसदाई॥जत्रतत्र
मुनिजोषुराई॥१४॥श्रीरामनो
मर॥मुनिस्वानतंकहिदंडहम
याहिदेहिअषंड॥कहिवाततं

उत्तुङ्गार॥ हियमाझ्रस्रापुविचार॥१५॥ ॥दोहा॥ मेरोभायोजोकोरामचं द्रहितुमंऊि॥कीजेदुजपहमठ पतीश्रारधर्मसवछंऊि॥१६॥नि सपालका॥पीतपहिराइपटवा धिसिरसोपठी॥वोरश्रंगरागश्र गजोरवङ्गधांगठी॥पूजपारिपार इमठनाहितवहीदेषो॥मत्तगज राजचढविप्रमठकोगषो॥१७॥दो हा॥भयोरकेतेराजदुजकस्यो क स्योस्वांनकरतार॥भोगलागोभो गवनवजतदुंदभीद्वार॥१८॥सुद री॥वूझतलोगसभासवस्वानहि॥ जोनतनाहिनेघापरमानहि॥वि प्रहितेजुदईपदवीवङ्ग॥हेपह निग्रहकेधोअनुग्रह॥१९॥स्वान एकुकनोजहतोमठधारी॥देव

चतुभुजको अधिकारी ॥ तापहको
उवैजव आवै ॥ अंगभलीरचना
निवनावै ॥ २० ॥ जादिनकेसवकोउ
नआवै ॥ तादिनपालिकतेनउठा
वै ॥ भेटनिलेवहुधाधुनकीने ॥ नि
त्यकेरभवभोगप्रवीने ॥ २१ ॥ एक
दिनाइकपाहुनोआयो ॥ भोजन
कोवहुभांतिबनायो ॥ ताहिपरो
सनकोपितुमैरो ॥ वोलिलियोहि
तुहेसवकेरो ॥ २२ ॥ ताहितहांवहु
भातपरोस्यो ॥ क्योंहूकहूनषमाञ्च
रह्योधो ॥ ताहिपरोसतही षाल्यो
यो ॥ ऐवतुहोहसकंठलगायो ॥ २३
॥ चामर ॥ मोहिमातुदूधभातुतप्र
भोजकोदियो ॥ वातसोनिराइता
तछोरअंगलीछियो ॥ छोरुको
भष्योगयोमसेहांसुनकौ ॥ हो

भमोअनेकजोनअोधिअांनस्वा
नमो॥२४॥दोहा॥वाकोथोरोदोष
मेंदीनोदउअगाध॥रामचाचारी
सनुमछमिजोयहअपराध॥२५॥
इहिलोककस्योअपवित्रउहिलो
कनरकसुषवास॥छुवैजुकोऊमठ
पतिहिताकोपुंन्यविनास॥२६॥अ
स्लोक॥रामायणे॥ब्रम्हस्वंदेवद्रव्यं
चस्त्रीणांवालधनंचयत॥दत्तंह
रतियोमोहाद्दिहंसहपतत्यध॥२७॥
स्कंधपुराने॥देहपंचाग्निदेवस्य
केसवस्यविशेषत॥माठपत्यंत्व
याकुर्यात्सर्वधर्मवहिष्कृम॥२८॥
पद्मपुराने॥पत्रंपुष्पफलंतो
यंद्रव्यमन्नमठस्यच॥जोअाति
शापचेत्सोनेरकानेकविंशति
॥२९॥देवीपुराने॥अभोज्यमठना

मंत्रमुक्त चोढापगांचरेत॥ स्पष्टा
माढापतिविप्रसवासाजलमावि
प्रोत॥ ३०॥ दोहा॥ औरएककथा
कहौविमलभूपकीरांम॥ यहैसु
जोधावसतुहैवसकारकेधांम॥
वसंततिलक॥ राजहुतोदुष्टप्र
वलअनेकहारी॥ बाएनसीछ
त्रविमलनिवासकारी॥ सोसत्य
केतइहिनामप्रसिध्धसूरौ॥ वि
द्याविनोदरतधर्मविधानपूरौ
॥ ३१॥ संकल्पद्रव्यवहुधातिहिचो
रलीनो॥ धर्माधिकारएएकदु
जातिकीनो॥ वंदौविनोदगनवि
लासकर्ता॥ पावैसदाप्रभुदुजंअ
सेषहर्ता॥ ३२॥ राजाविदसवद्धच
मूसाजिगसोहै॥ जूष्यातहांज
सुवीरनिसोभसोहैआएकाल

लकिलदृत्तकलेसकारी॥लीनेग
येनपालहिजहांदंडधारी॥३४॥
॥धर्मराजभुजंगप्रयात॥ कहा
भोगवेगमहाराजदूमे॥कियापे
कियंन्वकेरभूमे॥राज॥सुनोदेव
मोकोकछुसुधिनाही॥कहोआ
पुहीपापुजोमोहमाही॥३५॥ध
र्मराज॥कियोतेव्रजातीसुधर्मा
धिकारी॥सुनोनित्यसंकल्प
चित्तापहारी॥दियोदुष्टवेस्यानि
ठ्ठानिल्लेले॥महापापमाथेति
हारेसुदेदे॥३६॥हतोतेसवेदेस
हीकोनिरंता॥भलेकीवुरेकीक
रेतेंनचिंता॥महासक्षेमेहेधर्म
कीवातलेषो॥जितोपुंन्यकी
नीतितेपापुलेषो॥३७॥दोहा॥
कालसर्पकेकवलतेसवेराजके

धर्म॥ ताहीतेंअतिकठिनहैनृपति
दांनकेधर्म॥३८॥ खानभुजंगमप्रि
यात॥ भएकोटिधांनकेसंपन्नता
कोहुतोदोषसंसर्गकेसिद्धिजाको
सर्वपापभक्षीनिमेमुक्तलेषी॥ र
होंसोधर्मअनिरुद्धकोलवेषी॥ ३
९॥ दोधक॥ बोलिउठेदरवार वि
लासी॥ ह्वालसेजमुनातटवा
सी॥ आदरकेतिसभामहबोलो
पूजनकेश्रमकोमगषोलो॥ ४०॥
श्रीराम॥ आएकहांकोउआइ
सुदीजे॥ मनोरथुआपनोपूरन
कीजे॥ जीविवसोसबराजुतिहा
रो॥ निर्भयह्वैभुवलोकविहारो॥ ४१॥
गीनका॥ सुधिदेसपगवारसुभए
सर्वेइहिवार॥ इसआगमसंगमा
दिकहींअनेगप्रकार॥ धांमपाव

रा.
१८३

नंद्दिगरामसोपरदपष्यकेपसपाइ॥ जन्म
सुध्धभएसोसवैकुलइंद्रहोमुनिरा
इ॥ ८४॥ पादपघप्रनामहीभएसुद्ध
सीषहाथ॥ नेत्रपावनतृपदेषतही
भएमुनिनाथ॥ नासिकासेनागंध
भईसुलेतनिनाम॥ भएश्रवनसु
ध्धसुसवद्सुधासुनाइपीऊषधां
म॥ ८३॥ रिषिमाहहुठा॥ तुमहोसवला
इकश्रीरघुनाइकउपमादीजेका
ह॥ मुनिमानसंतोजगननियंता
श्रादिनअंतनजाह॥ मोऐलवना
सुजैसेमधुमुत्रमोऐश्रीरघुनाथ
जगजपरसभीनोश्रीसिवदीनो
सलहिलीनोहाथ॥ ८५॥ दोधक
देवसबैरनहारिगेपजं॥ श्रोरसबै
नादेवहपजं॥ श्रीरघुनंदनजु
हिमाहुठो॥ संकरकोजनुसेवकछांहो

सु

१८३

॥४५॥दोहा॥जाकहमेलतुसल्ल
वहसुनिजेरघुराइ॥जाहिभस्म
करसर्वपापावाहीकेकरजाइ॥४६॥
पादारब्रह्मकोदएमथुरामंडिली
आपु॥वापेवसनननपावहीविनाव
सेश्रतिपापु॥४७॥रक्षेहिगेसत्रुघ्न
केसुनतुमकोतिहिकाल॥वामदे
वद्धरक्षिहोहोतुमकोतिहिकाल
॥४८॥भुजंगप्रयात॥चलोवेगि
सत्रुघ्नताकोसघारो॥वहेदेसुनो
भावहेहमारो॥सदासुहवृंदावनी
भूवनीहै॥तहांनित्यमेरीविहार
स्थलीहै॥४९॥यहेजानिभमेदुजा
तीनिदीनी॥वसेजबवृंदापिया
प्रेमभीनी॥सनाप्तानिकीभक्ति।
जोजीयजागे॥महादेवकोसल्लु
ताकोनलागे॥५०॥विदाह्वैचले

श्री

रा॰
१९५

रामपैसत्रुहंता॥चल्लेसाथमहाधीर
यौ॥जुद्धता॥चतुर्थीचमृचारिहं
वोरसाजे॥वजेंदुंदभीदीहदिगंतगा
जे॥५१॥दोहा॥केसववासरवारहे
रघुपतिकेतुमवीर॥लवनासुरके
जमनिज्योमेलेजमुनातीर॥५२॥
मनोरमा॥लवनासुरआइगयो
जमुनातट॥अवलोकहिस्योरघु
नंदनकेभट॥धंनुबांनलियैनिक
सेरघुनंदन॥मदकेगजकोसुतुके
हरकंदन॥५३॥लवनासुरभुजंगप्र
यात॥सुन्योतनहौंतरहांभलिआ
यो॥महादेवकोसामहाभसुपा
यो॥सत्रुघन॥महाराजश्रीराम
हेत्रुध्यतोसो॥तजोदेसकेकेके
कोराजध्धमासो॥५४॥लवनासु
र॥वहेरामराजादसग्रीवहंता॥सुतो

१९६

वंधमेंएपरस्त्रीनिंरंता॥ हनेतेता
हिवाकोकैरांचितुभाषों॥ वडेभा
गमेंमेहांवेपासो॥५५॥ भएकुह
तोसादुवोकुध्यंरंता॥ दुष्टोअल
सहैप्रयोगीनिहंता॥ वलीविक्र
मीधारसोभाप्रकासी॥ नसोहषु
देहीनवर्षैविनासी॥५६॥ सवैय
नदोहा॥ लवनासुरसिवसूलवि
नाओरनेलागेमोहि॥ शूललि
येविनभलहोहोंनमारिहोंतोहि
५७ मोटनक॥ लीनोलवनासु
रसूलजहो॥ मान्योरघुनंदनवा
नतहो॥ कोटोसिरसूलसमेत
गयो॥ सूलीकरपुष्पत्रिलोपभ
यो॥५८॥ वाजेदिविदुंदुभीदीह
नवै॥ आएसुरइंद्रसमेतसवै॥ दे
व॥ कीनोवहुविक्रमपारनमे॥

मागोवादानतेचैमनमै॥ पद॥ स
त्रघननागस्वरूपिनी॥ सनास्त
व्रत्तिजोहरै॥ सदासमूलसोजरै
अकालमतिसोमरै॥ अनेक
नर्कसोपरै॥ ६०॥ देव॥ सनास्तजा
तिसर्वदा॥ जथाप्रगीतनवेदा
मेंजैसजेतिसंपदा॥ वितध्यको
असंपदा॥ ६१॥ दोहा॥ मधुरमं
डिलमधुपुरीके सववसुवस व
साइ॥ यहि कहि देषसत्रुघन
श्रीरामचंद्रकेपाइ॥ ६२॥ इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचको
रचिंतामनिश्रीराम चंद्रचंद्रिकां
यां॥ लवनासुरवधवर्ननं॥ नाम
चौतीसमोप्रकास॥ ३४॥ दोहा॥
पैतीसयेंप्रकासमेंअस्वमेधको
जग्य॥ कहिहैंश्रीरघुनाथजू

बाजुछांडिसरवग्प॥१॥विस्वामि
त्रवसिष्टसौएकसमैरघुनाथ॥
श्राएभीकेसवकहनश्रस्वमेध
कीगाथ॥२॥चामर॥मैथिलीम
मेतनेश्रनेगदांनमेदिये॥राज
सयश्रादिदैश्रनेकजग्पमैकि
ये॥सीयत्यागिपाबतेमहासु
हौहिपुंजो॥श्रस्वमेधश्रोएए
कुजानिकीविनाकैरौ॥३॥वसि
ष्ट॥दोहा॥धर्मकर्मसवकीज
रीसुफलतउनिकेसाथ॥ताबि
नेजावकछुकीजइंसोइइनिर्फ
लनाथ॥४॥विस्वामित्रतोटक॥
काजेजतनभूपननृपाइंहो॥मि
थलेससुताइकस्वनेमइं॥॥
बिराजसवैरिषिवालिलिये॥
विधसौसवजग्पविधांनकि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मै॥५॥हयसारनिमैहयछोरिल
यौ॥समिवर्नसुकेसबसोभियौ॥
स्रुतिस्यामलएकुविराजतुहैं स्र
लिसौसरसौंतुहलाजतुहै॥६
नृपमाला॥पूजिउ्रचनसुक्ष
त्रक्षरपटुबांधियभाल॥भूरि
भूषनसत्रदूषनछोडियोहिका
ल॥मंगलेचतुरंगसेनहिसत्रुहा
तिहिसाथभांतिभांतिनिमानु
दैपटऐसबैरघुनाथ॥७॥जात
हैजितबाजुकेसबजातहैति
तलोग॥बोलिविप्रनदानदी
जैजंत्रतत्रसभोग॥वेनबीन
मदंगबाजतदुंदभीचहुंभे
व॥भांतिभांतिनिहोतिमंगल
देवसैनरदेव॥८॥कमल॥रा
घवकीचतुरंगचमूंचयकोग

नैकेसबराजसमाजनि॥सूरति
रंगनिकेउराझैपगतुंगपताकन
केपटसाजनि॥टूटपैरतिनतेमु
कताधरनीउपमावारनीकविरा
जनि॥बृंदमनोमुषफेननितैवि
धौराजसिरीथवैमंगललाज
नि॥२१॥दंडक॥नादपूरिधूरिपू
रितोरिवनचूरिगिरसोषिजल
भूरिभूरिथलथलमाथकी॥के
सौदासआसपासठौरठौरराषि
जनतिनहूंकीसंपतिसबआप
नैईहाथकी॥उंनतनवाइनत
उंनतनवायेभूपसत्रनिकीजी
वकीसुमित्रनिकेहाथकी॥मुद्र
तसमुद्रसातोमुद्रानिजमुद्रि
तकैदिसिदिसिजीतिआईसै
नारघुनाथकी॥२०॥दोहा॥दि

रा॰
१६७

सिविदिसिनिअवगाहिकैसुष
हीकेसवदास॥वालमीककेआ
श्रमहिगयौतुरंगप्रकास॥दोधक
दरहैतेमुनिवालकधाये॥पूजित
वाजविलोकनआए॥भालकै
पट्टजहीलववांचौ॥वांधितुरंग
विजैरसुएचौ॥१२॥श्लोक॥ए
कवीरश्चकौसिल्यानस्यपुत्रोर
घूद्वह॥तेनरामेन॥नउक्तोसावा
जीषुनातुमोवली॥१३॥दोधक
षोरचमूचहूवोरतेगाजी॥कौ
नहिरेयहवांधियवाजी॥वाल
उठोलववैमयहवांधौ॥योकहि
केधनुसाइकसाधौ॥१४॥मारभ
गाइदयेसिगरेसो॥मन्मथके
सरप्पानषतैजैसो॥भागतहै
भटशैलवआगे॥श्रीरामके

१६७

नामतेंज्यों अग्रभागे ॥ २५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ जो धामभगे वीरसत्रुघ्नघाप्र
कोदंड लीने महा रोष छायो ॥ दोऊ त
हां एक वाल्मे विलोको ॥ ताकोतही
घोननाए चुमोको ॥ २६ ॥ सत्रुघ्नसुंदरी
वालकछाडिदै छोरतुरंगम ॥ तोसो
कहा को एसंग संगम ॥ रूपरवी तहि
येक रूनारसु ॥ विप्रनितेकछुवी रह
नै जस ॥ २७ ॥ लव कछुवात वडीन
कहो मुषथोरे ॥ लव सोनजु एलव
नासुभोर ॥ दुजदोषनिहीं वलु
ताकोसंघारो ॥ मोहिं जुरहो तिहि
कौ कहमारे ॥ २८ ॥ चामर ॥ एमवं
धवानतीन छांडिसो त्रसल सभा
लमे सोलवाल लागिसो त्र फू
लसे ॥ नव ॥ घातकीन राजतांत
गाततेंकि पूजियो ॥ कौनु सत्रुतें

हयोजुनामुसचहांलिसौ ॥२३॥ नि
सिपालिका ॥ ऐषकवानवकुभां
तिलवछांउियौ ॥ ऐकधुजसतज
नुतीनप्येषंडिसै ॥ सच्चदसष्य
सुतश्चस्चकाजोधै ॥ ताहिसिय
पतुत्रननूलषंडनकै ॥२४॥ ताकु
षिहांबवानवहेकालीनै ॥ ल
वनासुकोषुनंदनुदीनौ ॥ लव
केउमेउश्चावहपछी मुआइ
गिएनमेवहछत्री ॥२५॥ मोटन
क ॥ मोहेलवभूंमिगिजवही ॥ जु
यदुंदुभीदीहवजेतवही ॥ भुश्रते
एषऊपरश्चांनधो ॥ सत्रुघंनहि
सैकत्ननानिभो ॥२६॥ षोतवही
तिहिछोलसौ ॥ सत्रुघंनहिश्चा
नदचितभयौ ॥ लेकेलवकोतिव
लेजवहीसीतापहवालगएत

वही॥२३॥बालक॥वाच्य॥अल
ना॥मुनिमेथिलीनपएककौ
लवबांधियौवबाजि॥चतुरंग
सेनभजाइकैतवजीतिसोवह।
आजि॥उलागिगौमएककौअनु
वमेगिरमुऋष्याइ॥बाजलैलवले
चल्यौनपडैदभीनिवाजारि॥२४॥
दोहा॥सीतागीतापुत्रकीसुनमु
नभईअचेत॥मनौचित्रकीपुत्र
कामनक्रमवचनसमेत॥२५॥
॥गीतका॥त्रिहाथजीरघुनाथ
कोसुतकौपरैकरतार॥पतिदेव
तासवकालतौलवजीवमिलेइ
हिवार॥ऋषिहेनव्याकुमहेन
वालवलेइकौनछिडाइ॥वनम
ध्यटेरमुनीजहीकुसआइसो
अकुलाइ॥२६॥कुसदोहा॥॥

रिपुहि मारि सिंघारि दल जमतें तेलै उछुराइ॥ लवहि लिये हैं दषि हैं मातातें पाइ॥२७॥ विजय॥ गहि रामवसिंधसें रावरे ज्यौं जिहि वाल वलीवल सौं वारे स्यौं॥ दाहि दिसे सिरारावनके गिरि सैन उजातन जाहिन हे स्यौं॥ सल समूल उषारि लै पौलवना सुरपी छै तै जाइ सु देस्यौ॥ राघवके दल मत्त करी सुर अंकुस दै कुस केसव फेस्यौ॥२८॥ ॥दोहा॥ कुसकी टेर सुनी जहीं फूल फिरे सत्रुघ्न॥ दीप दिल्लो किपतें गज्यौं जदपि भयौ बहु विघ्न॥२९॥ तोटक॥ रघुनंदनकौ अवलोकत ही कुस॥ उरमांझ हन्यौ सर बुध्धिनिरंकुस॥ सुगिरे रथ ऊपर लाग तही सत्रु॥ गिरि ऊपर ज्यौं गजराज॥

जकलेवत॥२०॥सुंदरी॥जुअिगिरे
अहिाजवहींनभागिगेपनवही
भटकेगन॥काठिलियोजवहीलल
वकोसत॥कंठलगपोनवहींउठसो
दत॥२१॥दोहा॥मिलेजुकुसलव
कुसलसोनाजुवांधितहमूल॥र
नमैठाटेसोभिजेपलुपतिगनिपत
तूल॥२२॥इतिश्रीमत्सकललोक
लोचनचकोरचिंतामनिश्रीराम
चंद्रचंदिकायांसत्रुघ्नसंमोहन
वर्ननंनामपैंतीसमोप्रकासः॥३५॥
दोहा॥छत्तीसमेंवरनिवोलवकु
सकोअतिजुद्द॥रनमैठाठसोभ
जेलछिमनसोतिरसुद्ध॥१॥रूप
माला॥जगपमंडिलमैंह्नेरघुनां
थजूतिहिकाल॥अंगचर्मकुर
गकेअरुस्वर्नकीसगवाल॥आ

सपासरिषीससोहनसलोदासा
थ॥ आनिभगुलनैगवरनीजुध
कीसवगाथ॥ ॥ लगुलवाच
वालमीकथलवाजुगयोज॥ वि
प्रवालकनिघेलियोज॥ एकवा
चिपटुषोरकुंवांध्यो॥ दोरदोहध
नुसाइकुसाध्यो॥३॥ भांतिभांति
सवसेनुसघास्यो॥४॥ आपुहाथज
नुईसमुधास्यो॥ अन्नसल्लनुव
वंघजुधामो॥ षंडषंडकरिवाही
ज्ञासो॥५॥ षवषवहवांनुलयो
ज॥ इंद्रजीतलगिआपुदसोज
कालनृपडरमधमहयज॥ वीरम
रछितभूमिपरेज॥६॥ तोमर॥ व
हवीलेअस्ववाजि॥ जवहीचले
तजिआजुतवओरवालकआं
नि॥ दलुलोरकियोतजिकांनि॥ ६

तिहिमारियौतुबवंधु॥तवहेगपो
सवबंधु॥वहवाजुलैवहवीर र
नमेरव्योनपिधीतु॥७॥दोहा॥॥
वुधिवलविक्रमसीलगुननृपति
हारैरांम॥काकेसधरिवालहैजी ५
तेसवसंग्राम॥८॥श्रीरांमवाच॥
गुनगनप्रतिपालकरिकुलघा
तकवालकेतरनंता॥दसरथनृप
कोसुतमोदरामेरोलवनासुरको
हंता॥कोउहैमुनिसुतकाकप
क्षजनकहिजनुहैतिहमारेजग
तजालकेकमकालकेकुटिल
भपानकभारे॥९॥मुनिजेसुभल
छमनुरघुकुललक्षनलैहवाज
कोसाधु॥मुनिसिसुजिनमारेवं
धुउधारेक्रोधनकाहुविरोधु॥व
हुसहिनदक्षिनादेपदक्षिनाच

रा॰
२०२

ल्यौपरमानधीर॥देषतमुनिवा
लकसोदरघालकउपज्यौअद्भु
तकतुनावीर॥१०॥कुसदोधक॥
लछिमनकौदलुदीरघदेष्यौ॥
कालहितेअतिभीमविसेष्यौ॥
हूमेकहौ॥सुकहालवकीजे॥वा
टगहौकिधौघोटकुदीजे॥११॥
देव॥बूझतहौयहहेमतुकीजे
मोअसुदेवरअस्त्रनदीजे॥लछि
मनकौदलुसिंधुनिहारौ॥ताक
हवानअगस्तहमारौ॥१२॥कोनु
यहेघटिहेअरिघेरे॥नाहिने
हाथसरासनमेरे॥नेकतहौ॥ड
छितौमनकीनौ॥सवकेउरिक
धीघनुदीनौ॥१३॥लैधनुवानव
लीतवधायौ॥पत्रनिजैपौदलमा
रिउड़ायौ॥सौदोरीसोदरसास

२०२

घारौ॥ ज्यौं वन पावक पौंन विहारे २४
भागत हैं भट मौल वज्र आगे॥ राम के
नाम तें ज्यौं अघ भागे॥ जुध पजं॥
ययौं मा भिगा ये॥ वात वरुंजनु
मेघ उड़ाये॥ २५॥ विजय॥ अति
रोस रसे कुभ के सव आरघुनाथ
हि सौंर नराति रचे॥ तिहि कार न
वार भरी वहु वार नि षंग हने नग
नै विरचे॥ तह कुंभ कटे गज मोती
फटे चिलकै वहु भ्रांनि तरो रविवे
परिपूरन पूर पयानि नते जन पीक
कपूरन की किरचे॥ २६॥ नराज॥
भगे च मूं चमूंपभूप छांडि छांडि
लक्ष्मने॥ भगे रथी महा रथी गयं
दवंद कोगने॥ लवे कुसे निरंकु
से चिलाकि वंध राम के॥ उठे अ
रिसा इकै हठी व धौ सुलाज दं

मकेो॥१७॥कुमतकाके॥नहौंमक
राक्षनहौइंद्रजीत॥विलोकितु
म्हेरनहौकुसुभीत॥सदांतुमल
क्ष्मनउत्तिमगाय॥करौंजिनश्रा
पनीमातुश्रनाथ॥१८॥लक्ष्मन
केहौकुमजोकहिग्रावहिवात
विलोकतुहौउपवीतहिगात॥ते
पावालवहिक्रमजांनि॥हियेक
तुनाउपजेश्रुतिश्रांन॥१९॥विलो
चनलोचनहेश्रतिनाहि॥तजो
हठिश्रानिमिलोकिनमोहि॥हि
येउपजावढ़मानहिदाह॥छमो
श्रपराधश्रजोघरजाहु॥२०॥ह
रिनी॥होहतिहौंकवहूंनहितो
हि॥तुमहीवरवाननिमारहुमो
हि॥वालकविप्रकहाहुनिपे॥लो
कश्रलोकनिमेगनिपे॥२१॥

नव॥ लक्ष्मनहाथवहथ्याधरे॥
जगपत्रथांभकीनकरे॥ होहय
कोकवहूनतजो॥ पट्टलिषोसो
हीवाचिलजो॥२२॥ दोधकबांन
एकतवलक्ष्मनछंडै॥ वर्मचर्म
वहूभांतिनिषंडै॥ ताहिहीनकु
सचित्तविमोहे॥ भूंमिभिन्नगुन
पावकसोहे॥२३॥ क्रोधसहिततत
ववांनचलायो॥ पवनचक्रमि
लचित्तुउड़ायो॥ मोहिमोहिर
थऊपरसोए॥ ताहिदेषिजठजं
गमोएए॥२४॥ नराज॥ विर्तमराम
जानिकेभार्थ्यसोकथाकहे॥ वि
चारचित्तमाअवीरवीरहैवकहांर
है॥ सरोषदोषिलक्ष्मनेत्रलोक
तोविलुमहोइ॥ अदेवदेवत्तात्र
सेकहामुवालदीनदोइ॥२५॥

रा. २०३

श्रीरामवाच ॥ जोइसलवदूतल छिमनहैकहाइहिकाल ॥ जोइ केयहवातकहिजोरछियोमुनि वाल ॥ हैसमर्थसनाथवेअसम र्थअरुअनाथ ॥ देषिवेकहल्याइ योमुनिपुत्रउन्मिमगाथ ॥ २६ ॥ दोधक ॥ भग्गुलञ्जाइगएनवहीव ङ्ग ॥ बारपुकारतञ्जारतरक्षहु ॥ वस वभांतिनसैनसघारे ॥ लक्षम नतोतिनकोनहिमारे ॥ २७ ॥ बा लकजानितजेकरुनाकर ॥ वृक्ष तिठौढभयेदलसंघर ॥ क्योंहन भाजतगाजतहैरन ॥ वीरअना थभयेविनलक्षमन ॥ २८ ॥ जान हिजेउनिकोमुनिवालक ॥ वेक क हेजेगतीप्रतिपालक ॥ हैकोउ रावनकेकिसहाइक ॥ कैलवना

सुकेसुषदाइक॥२६॥भरथजू वाल
कोवनकेनसहाइक॥नालवनासु
केसुषदाइक॥वेनिजुवालकवृक्ष
निकेफल॥मोहतहेरघुवंसिनके
वल॥३०॥जीतहिकोरनमेसत्रुघ
नहि॥कोकोलक्ष्मनकेतनसक्ष
हि॥जवतेलक्ष्मनसीयतजीवन
लोकअलोकनिपूरिहेतन॥३१॥
छोडोईचाहततेतवतेतन॥पाइ
निविन्नकियोतनुपावन॥सत्रुघन
तजोतनसोदरलोजनि॥पूतभए
तजिपापसमाजनि॥३२॥पातक
कोनतजीतुमसीता॥पावनहोत
सुनेजगुगीता॥दोषविहीनजदो
षहिलावे॥सोफलपेप्रभुकाहि
नपावे॥३३॥हमहीतिहितीरथ
जाइमरेगे॥संगतिदोषअसेष

होंगे॥ वांनररक्षसरिक्षतिहारे गर्भ वेरंषवंससहिभारे॥३४॥ तालगिकै यहवातविचारी॥ होप्रभुसंततग र्भप्रहारी॥ चवरी॥ क्रोधकेनवभर यअंगदसंगहंगरकोचले॥ जांम वंतवलीविभीषनऔरसरभले भले॥ कोगनैचतुरंगसे नहिएध सीवहधांमुरी॥ जाइकैअवलोकि योरनमेगिरिगिरसेकरी॥३५॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचको रचिंतामनिश्रीरामचंद्रचंद्रिका यांलछिमनसमोहनवर्ननंछत्ती समोप्रकास॥३६॥ दोहा॥ सैती सयेंप्रकासमेंभरथहिजुद्धनि। दांन॥ सुग्रीवविभीषनकोकरेव हुविधसोअपमान॥१॥ भरथ रूपकमाल॥ जामवंतविलोकि

योरनभीमभूहनिमंत॥ओनकी
सरिताअनंतअनंतनृपदुरंत॥ज
त्रतत्रधुजापरीपठदेहदेहनिभ
प टूटटूरिपरमनोरुभवक्षवा
तअनप॥४॥पुंजकुंजरसुभसंद
नसोभिजेजनुसर॥ठलिठलिच
लेगिरिसनिपलिओनितपूर॥
ग्राहतुंगतरंगकक्षपचातुचर्मवि
साल॥चक्रसेरथचक्रपेरनगीध
वृध्धमराल॥५॥केकेरेकरवाहमी
नगयंदसुरभुजंग॥चीरचौरसु
देसकेसबभ्रौसमानसुरंग॥वा
लुकावहुभांतिहैमनिमालजा
लप्रकास॥पैरपारभएतिहैमन
वालकेसवदास॥६॥दोहा॥ना
मवरनलघवेषवलकहारीअ
हनिमंत॥गतोवडेविक्रमकि

ग.
२०५

योजीतेजुद्ध अनंत ॥५॥ दोधक ॥ ह
निमंतदुरंतन दो अवगाहै ॥ एमस
होदराजी अभिलाहैं ॥ नवजैयों तु
मसिंधहिना षिगएहै ॥ अवनाक
हूक्यौं तुमभीतभएहौ ॥६॥ हनूमं
त दोहा ॥ सीतापदसन्मुषहते
गए सिंधुकेपार ॥ विमुषभए क्यो
जानुत सितेनोभरथहिवार ॥७॥
॥ दोधक ॥ धनवानघरैमुनिबा
लकआए ॥ जनुमनमथके जुग
रूपसुहाए ॥ कारिवकहसएनि
केमदहीने ॥ रघुनाइकमानहु
हैवपकीने ॥८॥ भरथ ॥ मुनिबा
लकहौतुमजगपकराएहौ ॥ कैधौ
वरवाजनबाधनआएहो ॥ अपए
घछमे अवआसिषदीजे ॥ बा
जुतजोजियरोषुनकीजे ॥९॥

दोहा ॥ वाधौपद्रजोसीपहक्सत्रि
निकाजप्रकास ॥ ऐषकन्पौविनक्र
जतुमहमविप्रनकेदास ॥ १० ॥ कु
सदोधक ॥ वालकसव्दकहोतुम
कासो ॥ देहनिसोकिधौजीवप्रमा
सो ॥ हैजठदेहकेहैसवकोऊ ॥ जी
वसुवालकवहनहोऊ ॥ ११ ॥ जीउ
मौनजेरकहछीजे ॥ ताकहसो
चुकहाकरलीजे ॥ जीवनविप्रन
छत्रिसजांनो ॥ केवलव्रंम्हहिऐ
महग्रानो ॥ १२ ॥ केतुमदेहहमेक
छुसिक्षा ॥ तोहमदेहितुम्हेयह
भिक्षा ॥ चित्तविचारिकरौसाङ्गी
कीजे ॥ दोषतुम्हेनहमेग्रवदी
जे ॥ १३ ॥ विप्रवालकनिकीसुनिवा
नी ॥ कुहसाएसुतभोग्रभिमानी
विप्रप्रत्रतुमसीससम्हारो ॥ रा

षिलेङ्घ अवताहि प्रकारी ।। २४ ।। न
व ।। सुग्रीवकहा तुमसोरनमा आ
नोंकी अतिकांतरजानिकेंछा ।
ओ ।। वालिवलीतमनाचनचा
ए ।। मोमोतुम क्योरनमाउन आ
ए ।। २५ ।। फलहीनसुनाकहवान
चल्या सो ।। अतिवातभ मोवङ्घधा
मुरआसो ।। तवदो रिकेवानुविभी
षनलीनो ।। लवताहिविलोकि
तहीहसिदीनो ।। २६ ।। आउविभी
षनतूंकुलदूषन ।। एकतुहीकुल
कोकिलभूषन ।। जुद्धजो जुमले
भयजीके ।। सत्रहि आनिमिले
तुमनीके ।। २७ ।। देववधूनववाह
रिल्यायो ।। क्योंनवहीनजिता
हिनआयो ।। जोअपनेजियको
डरवोए ।। छुद्रसवैकुलछिद्रव

ताए॥१८॥दोहा॥जेठौभैयाअंन
दाताजा पितासमांन॥ताकीत्रिय
तैलेकरीपतिनीमातुसमांन॥१
९॥कोजानेकैवारतूंकहानहहै
माइ॥सोईतूंपतिनीकरीसुनि
पापिनकेराइ॥२०॥तोटक॥सि
गोदेलमायहसावतहै॥रघुवं
सहिपापनसावतहै॥धकुताक
हतेजुअजोजुजिसो॥षलजाइ
हलाहलक्योनपिसो॥२१॥अ
वहैकछुतोकहलाजहिये॥क
हिकोनविचारहण्यालिसे॥
अवजाइकरीषकीआगिजरे
गलुवांधिकेसागरवूडमरे॥२२॥
॥दोहा॥कहाकहोहोभरथसों
जानतुहेसवकोई॥तोसपापी
संग्रहेक्योनपराजयहोइ॥२३॥

विजप॥हासिनिहीकुसमभरविभी
षनआनतमैसरजिगनूए॥भूरि
भेउठिवैठतहींउमेअतिएसक
मासिमनूए॥सोहतिदंतनिकीकि
रचैविचछेदउतलोहकेरोसदनू
ए॥षाइतमारतंनिकेसंगकोज
नकांमोकपूरकनूए॥२४॥दोहा
वङ्गतजुह भयोभरथसौदेवअ
देवसमांन॥मोहिमोहिरथपर
गिरमारैमोहनवांन॥२५॥इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचं
कोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रचं
द्रिकायां॥भरथसमोहनवर्न
नं॥नामसैतीसमोप्रकास३७
दोहा॥आतीसयेंप्रकासमेकुस
लवरनमेआहि॥अंगदगर्भघ
टाइहेकेसवश्रीरघुराहि॥१॥भर

यहिभेपै विलवंकछु आइगेर
घुनाथ॥ देष्यौवहसंग्रामथलुज
अिगिमौसवमाथ॥२॥ तोटक॥
रघुनाथहि आवतआइगये॥न
मेमुनिवालकनृपाये॥ गनन्रृप
सुसीलनिसो अपनै॥ प्रतिबिंबि
मनोमुषदर्पनमै॥३॥ श्रीरामउ
वंदवज॥ सीतासनाथमुषचंद्र
विलोकिराम॥ बूझेकहांवसतेहौ
कौनग्राम॥ मातापिताकवनक
वनहिकर्मकीन॥ विद्याविनोद
सिषिहिसिषएअरुदीन॥४॥ कु
सचत्तरी॥ राजराजकहातुम्हेम
ममवंससो अवकाम॥ बूझली
जऊईसलोग निजीतिकैसंग्रा
म॥ श्रीराम हौंनजुद्धकरौं केहवि
नविप्रवेषविलोकि॥ वेगिवीर

एकथाकहौतुमआपनीहिसोक
५॥कुसवाच्य॥कंसकामियल
सकीहमपुत्रजायेदोइ॥वालमी
कआसेषकर्मकियेकपासेभो
इ॥अस्त्रसस्त्रसवेदयेअत्रवे
दभेदपढाइ॥वापकोनहिनाउ
जांनतआजुलोषुराइहं॥दो
धक॥जानुकीकेमुषआपरआ
ने॥रांमतहांअपनेसुतजानेवि
क्रमसाहससीलविचारेजुद्ध
व्रथामहिअवधुतारे॥७॥श्रीराम
अंगदजीतिइन्हेगहिल्यावोकै
अपनेवलमारभगावो॥वेगि
वुआवहुचित्रचिताको॥आजु
तिलोदकुदेहुपिताकै॥५॥अं
गदतोअतिअंगनिफूलेपान
केपतकहौतुमभूलजाइजुले

वसैातत्रलैकै ॥ वातकहीसतषं
उनकैक ॥ ६ ॥ लव ॥ अंगदजोतुम
मैवलुहाता ॥ तावहसुराजकोमु
तकोती ॥ देषतहींजननीजुतिहा
री ॥ वासगसोवतज्यौवरनारी ॥ ९ ॥
जादिनतेजुगराजकहाये ॥ विक्र
मवुद्धिविवेकवहाये ॥ जीवतही
किमरपेहजेहो ॥ कौनपिताहि
तिलोदकुदेहो ॥ ११ ॥ अंगदहाप
गहेतरुजोई ॥ जातुतितेतिल
सोकरिसोई ॥ पर्वतपुंजजितेर
निमेलै ॥ फूलकेतूलज्यौवांन
निझेलै ॥ १२ ॥ वांननिवंधिरहीम
वदेही ॥ वांनरतेवाहुभयोसेही
भूतलतेसरमारउडाये ॥ षलकी
गेदज्योफलपाये ॥ १३ ॥ सोह
तुहेंऋधउरधअैसोहोतवरान

टकौनभजेसो॥ जानका बहूनइ
तैउतपावैगोवलुचित्तुदसोदि
सधावै॥१४॥ वोलुघटोजुभसोसु
रभंगी॥ ह्वैगयोमुकचसंककोसं
ककोसंगी॥ हारबुनाइकहैजनु
तैरा॥ राषहुगर्भगयोसवमेरा॥२५॥
दीनसुनोजनकीजववांनी॥ जीक
उनालववांननिअंनी॥ छोडि
टयोगिरभूंमिपम्योई॥ विह्ववल
ह्वैविनमाम्पोमम्योई॥२६॥ श्री
रामसवैया॥ भैरवसेभटभूरिभि
रवलषतपरकोरतारकेरके॥ भा
रेभिरनभूंधभूपनटारटैरि
भकोटिअरके॥ रामसौंषर्गहने
कुसकेसवभूंमिगिरनकेटहंग
रके॥ रामविलोकिकहीसंञ्र
दुतषाइमरेनेगनागमरेके॥२७॥२०६

दोधक॥ बांनरीक्ष जिते निसचारी॥ सैनास वैइक बांन सघारी वांन विधे सिगरे जव जोए॥ स्पंदन मेघुनंदन सोए॥ १८॥ गीतिका॥ रनही कै सब सीस भूषन संग्रहे॥ जिभलेभलेहि निमंत कौ अनुजं अमवंत हि वाज सौग्र मिले बले॥ रन जीति के लव साथ लेकुस मातके सुष पांपरे॥ सिरसूंघि कं ठलगाइ आंननि चूंमि गोद दुओ धरे॥ १९॥ इति श्रीमत्सकल लोकलोचनचकोरचिंतामनि श्रीरामचंद्रचंद्रिकायां॥ कुसलवजुद्धिवर्णननाम॥ अडतीसमो प्रकास॥ ३८॥ दोहा॥॥

उनतालीसे वा प्रकास में कुसलव सीता आइ सिनासबे जिवाइ

हैमिलहैश्रीरघुराइ॥१॥गीतका
चींन्हदेवरकेविभूषनदेषिकैह
निमंत॥पुत्रहोविधवाकरीतुमकु
मकीनदुरंत॥बापकोंरनमारिकै
अरुपित्रसर्वसंघारि॥औनिश्री
हनिमंतवाधिनअंनिपैमुहि
मारि॥२॥दोहा॥मातासबकाकी
करीविधवाएकहिवार॥मोतै
औरनपापिनीजापेवंसकुठार
३॥दोधक॥पापीकहाहतिपा
पहिजेहो॥लोकचतुर्दसठौरुन
पैहो॥जेकुमारकेहैजनिकोई
जारजजाइकहोवहदोई॥४॥
कुस॥मोकहदोसुकहासुनि
माता॥बाधिलयोजसुनीजा
वभ्राता॥हौंतुमहींतिहिवार
पठायो॥रामपिताकवमोहिसु

नासे॥ ५ ॥ दोहा ॥ मोहि विलोकि
विलोके केश्रपपैठेरांम ॥ जीव
तछांडेजुह्नैमैमाताकरिविश्रांम
॥ दो॰ दोधक ॥ आइगएतवही
मुनिनाइक ॥ श्रीरघुनाइककेगु
नगाइक ॥ बातविचारिकेहीसि
गरीकुस ॥ डष्पुकियोमनमैक
लंश्रंकुस ॥ ७ ॥ मुनउवाच ॥ की
जैविलंवुनसंततसीता ॥ भाभी
कहूंनमिटसुभगीता ॥ तूंपतिदे
वनिकीगुरवेटी ॥ तोरीजगमत्यु
कहावतिचेटी ॥ ८ ॥ तोटक ॥ सि
गरेरनमंडिलमाअगए ॥ श्रवलो
कितहीमुनभीतभए ॥ डहुवाल
ककोश्रतिश्रद्भुतविक्रमु ॥ श्र
वलोकिभयोमुनिकेजियस
भ्रमु ॥ ९ ॥ दंडक ॥ श्रोनितस

रा॰
२११

लिलनखांनरसलिलचरागिर
वालिसुतनुविषविभीषनउस्मो
है॥चवरपताकांवरीवाउवास्त्र
नलसमरोगरिपुजांमवंतके
सवविचास्योहै॥बाजसरवाज
सुरगजसेअनेकगजभरथस
वंधरिंद्रअमतनिहास्योहै॥सो
हतसहितसषरांमचंद्रकुसल
वजीतिकेसमरसिंधुसोचिह्न
सुपास्योहै॥१०॥सीताजूदो
हा॥मनसावाचाकर्मनाजो
मेरेमनरांम॥तोसवसेनाजी
उठैनेकुनहोहिविरांम॥११॥
दोधक॥जीउठीसवसेनसभा
गी॥केसवसोवततेजनुजागी॥
स्योसुतसीतहिलेसुषकारी॥
राघवकेमुनिपाइनिपारी॥१२

सोदरसुंदरपुत्र मिले जब॥ वरषा
वरषीसुरफूल निकीत्तच॥ बहु
धांदिविडुंदिभिकूगनबाजे॥ दि
गपालगयंदनकेगनगाजे॥ ७३॥
अंगद॥ रामदेवतुमगर्भप्रहारी॥
नित्पतुक्षस्नतिवुध्यहमारी॥ तु
हूदेवभमतेकहिआयोदासु
जांनप्रभमाएगलायो॥ ७४॥ रूप
माल॥ सुंदरीसुतलैसहोदरवा
जुलैसुषपाइ॥ संगलैमुनिवा
लमीकाहिदीहुलषनसाइ॥ रा
मधांमचलैभलेजसुलोकि
लोकपठाइ॥ भांतिभांतिसुदे
सकेसवडेइभीनिवजाइ॥ ७५
भरथलछमनसत्रुहांपुरभीर
ढारतजात॥ चोरढारतहैडुहू
दिसपत्रउत्तमगात॥ छत्रहै

काइंद्रकेसुभसोभिजेबहुभेव॥म
नदंतचढेदपढेजयसद्द देवअदेव॥
६॥तोटक॥जगपथलीयेनंदनआ
ये॥धांमनिधांमनिहोतवधाये
श्रीमिथलेसस्तुतावरंगी॥स्पो
स्तुतसास्तुनिकेपगलागी॥७॥दो
हा॥चारिपुत्रंहपुत्रस्तुतकोलिया
नवरषि॥पायोपरमानंदस्तुनिरि
गपालनसमलेषि॥१८॥नूपमा
ला॥जलपूरनकैरमापतिदानुदे
तअसेष॥हीरनीरजचीरमानि
कवारषिवरषावेष॥अंगअंगत
डागवागफूलेफलेवहुभांति॥
भौनभूषनभूमिभाजनभूरिवा
सरराति॥१९॥दोहा॥एकअयु
तगजवाजहेलीनिसुरभिसुष
वर्न॥एकएकविप्रनिदियेकस

१९

वसहिलसुवर्न ॥२०॥ देवकुदेवनदे
वघाजितनेजीवत्रलोक ॥ मनभा
योपायोसवनुकीनोसवनिश्रसो
क ॥२१॥ अपनेघासोदानिकेपुत्र
विलोकसमांन ॥ न्यारेन्यारेदेसके
नपतकरेभगवान ॥२२॥ कुसलव
अपनेभाएथ्यकेनंदनपुष्करतक्ष
ल ॥ लछिमनकेअंगदभयेचित्रके
तननंदस ॥२३॥ भुजंगप्रयात ॥ भ
लेपुत्रहैदोहसत्रुघ्नजाए ॥ सदां
साधसेवंउभागपाए ॥ सदामि
त्रपोषीहनेसत्रछाती ॥ सुवाहै
वंसैदूसरोसत्रघाती ॥२४॥ दोहा
कुसकोदईकुसावतीनगरीकों
सलदेस ॥ लवकोदईअवंतिका
उत्तरउत्तमदेस ॥२५॥ पश्चिमपुह
करकोदईपुष्पावतीनांम ॥ त्र

ए॰
२९३

सनितातछहिदईलईजीतिसं
ग्राम॥२६॥अंगदकौअंगदनगर
दीनौपछिमद्वार॥चंद्रकेतचंद्रा
वतीलीनोउतरजोर॥२७॥मथु
राटईसुवाहुकोंपूरनपावनगा
थ॥सत्रघातनकीनपकरदेसन
केरघुनाथ॥२८॥तोटक॥इहि
भांतिसुरक्षितभूंमभई॥सवपुत्र
भतीजिनवांटिदई॥सवपुत्रम
हांप्रभुवोलिलिये॥वहुभांति
निकेउपदेसदिये॥२९॥चांमर
वोलिमंनअड़ईढमूठपैनकी
जइ॥दीजियेजुवाततातभूलि
सोनलीजइ॥नेहटारजेनदंड
दुष्पमंत्रिमित्रिकों॥जत्रतत्रजा
हतौपत्याहुनाअमित्रकों॥३०॥
नराज॥जुवानषालिजैकहूंनज्यां

तुवेदसंक्षिपे॥ अमित्रभूमिमेमैो
नमौनभक्षुभक्षिये॥ कैरोनमं त्रु
मूढसौनगूढमंत्रषोलिये॥ सपु
त्रहोइजोहठीमठीनसौनवोलि
ये॥३१॥ अष्पानदंउजेप्रजाहित्तस
मानमानियो॥ अगाधुसाधुपूछि
केजपापराधुमारियो॥ कुदेवदेव
नारिकौनवालिचित्तुलौजइ॥ वि
रोधुविप्रवंससौंसुस्वप्रहीनकी
जई॥३२॥ भुजंगप्रयात॥ परद्रव्य
कौनोविषैप्रायदेषो॥ परस्त्रीनि
ज्योजीपरस्त्रीनिलेषो॥ दहोकां
मक्रोधमहामोहलोभै॥ तजौग
र्भकौंसर्वदाचित्तछोभै॥३३॥ ज
सैसंग्रहैहोनिग्रहैहोजुइइजोधा॥ क
रौसाधसंसगजेवुधिवोधा॥ हि
तूहोइसोदेइजोधर्मसिक्षा॥ अ

रा०
२९४

धर्मीनिकौदेतहावाकुभिक्षा॥३४॥
कृतघ्नीकुवादीपरस्त्रीविहारीक
रैविप्रलोभीनधर्माधिकारी॥स
दाद्रव्यसंकल्पकौरक्षिलीजैदु
जातीनिकौआपुहीदानदीजै॥
३५॥विजय॥तेरहमंडल्लमंडितभू
तलभूपतिज्यौंकमहीकूमसाधै
कैसहूंताकहसत्रनमित्रनकेसव
दामउदासनबांधे॥सत्रसमीपप
रौजिनिमित्रुसुसत्रउदाससदां
करिजोवैविग्रहसंधिनिदांननि
सिंधुलौलेचहूंवोरनिसोसुष
सोवै॥३६॥दोहा॥एजणीवस
कैसहूंहोहुनउरअवदात।जैसे
तैसेआपुवसताकोकीजेतात॥१
३॥हिविधिमिषदेपुत्रसवविदा
कैरदैराज॥सोहनमीतानाथस

२९४

गराजसुबंधसमाज॥३८॥गीतका॥
रामचंद्रचरित्रकेजुसुनेसदासुष
पाइ॥नाहिपुत्रकलित्रसंपतिदे
हिष्योरिषुराइ॥अल्लानदानअ
सेषतीरथन्हानकोफलहोइ॥ना
रिकेनरविप्रछत्रियवैस्यसूद्रजुको
इ॥३९॥नराज॥असेषपापपुंज
केकलापआपनेवहाइ॥विदेहि
राजसोसदेहभक्तरामकोकहाइ॥
लहेजुभक्तलोकलोकअंतमुक्ति
होहिताहि॥पढैगुनेकहैसुनैसु
रामचंद्रचंद्रिकाहि॥४०॥इतिश्री
मत्सकललोकलोचनचकोरचिं
तामनिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायां॥श्री
सीतारामसमागमवर्ननंनाम॥उ
नतालीसमोप्रकास॥३९॥इतिश्री
रामचंद्रकासंपूर्णमुभंभवतमंगलं

दादात॥दोहा॥जेसीप्रतदेषीहती तैसीलईउतार॥भूलचूकजहजां नवीलेवीआपसमार॥१॥मिती चैत्रशुक्लपक्षे॥७॥बुधवासर॥ संवत॥१९२१॥मुकामवानपु र॥लिष्यतंपंश्रीचोवेरामप्रसा द॥जोकोउवांचेसुनेताकोजे श्रीरामपोंचे॥जथ्याप्रतपाई तथालिषीममदोषनदीयते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh